ISSN 24558966

गंगा जमुनी तहजीब की साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका

शैल-सूत्र

वर्ष 13 अंकः 1-2, जनवरी - जून

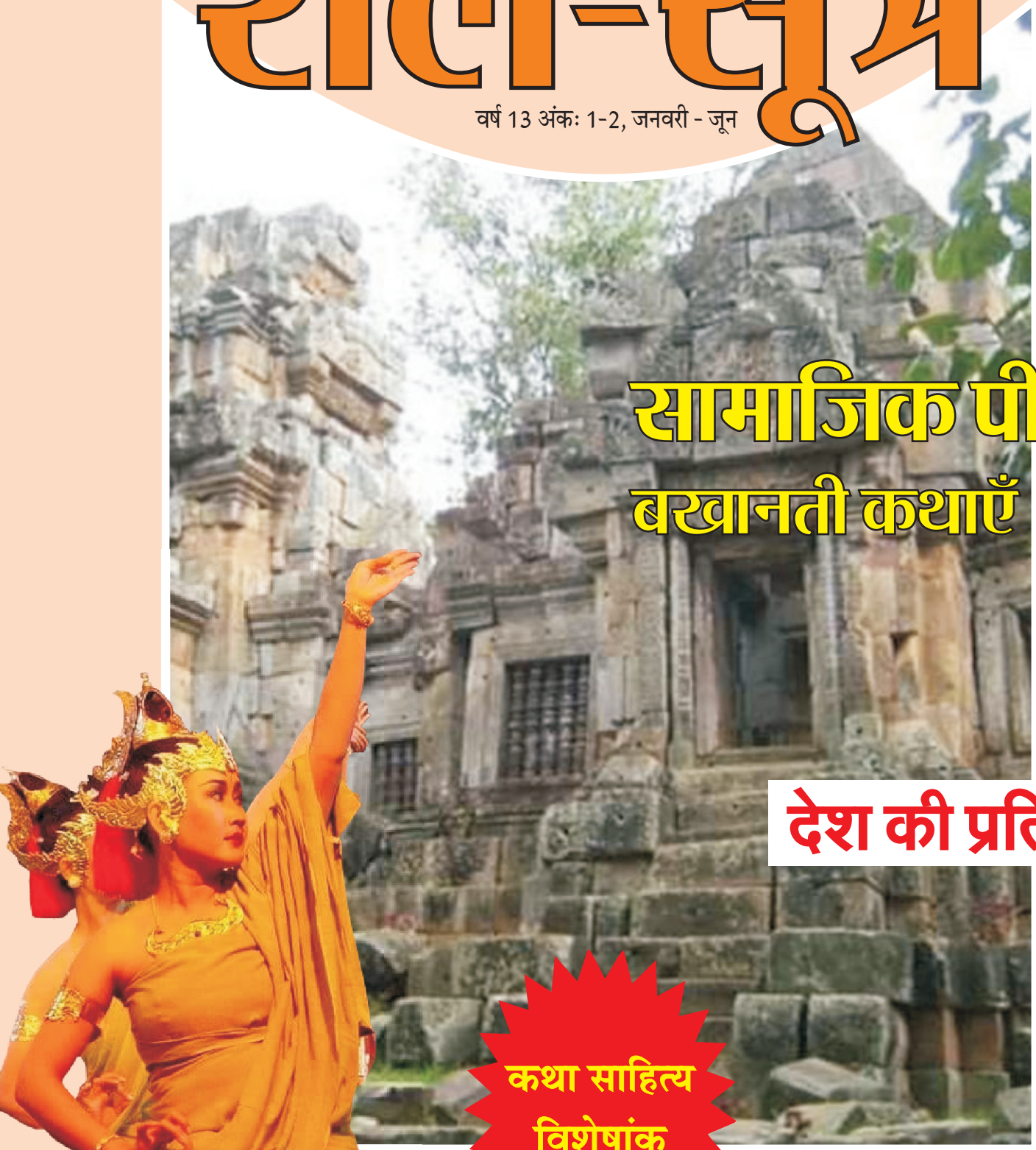

सामाजिक पीड़ा

बखानती कथाएँ

देश की प्रतिष्ठा

कथा साहित्य विशेषांक

कोई गीत कहें मन का

नीम करोली बाबा
की महिमा अपरम्पार

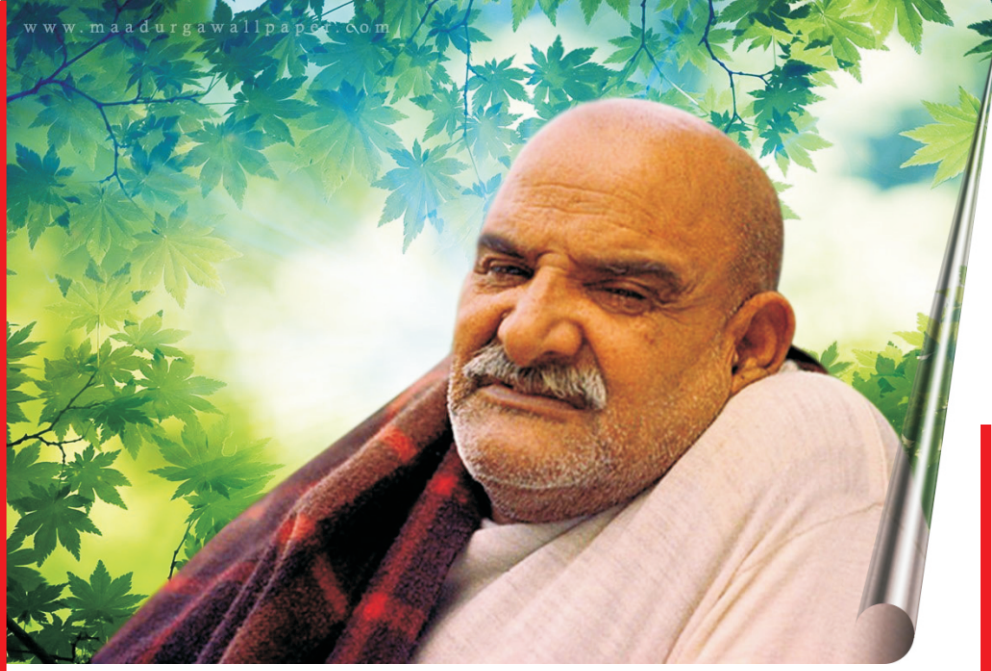

हिमालय की गोद में रचा बसा उत्तराखंड वास्तव में दिव्यलोक की अनुभूति कराता है ऐसे ही रमणीय स्थानों में बाबा नीम करोली महाराज का कैची धाम है। यह राज्य में पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, यहां पहुंचकर असीम सुकून मिलता है।

नैनीताल से 20 किलोमीटर दूर अल्मोड़ा राजमार्ग पर हरी-भरी घाटियों के बीच बसे इस धाम में यूं तो पूरे साल सैलानियों का जमावड़ा रहता है, लेकिन 15 जून का यहां खास महत्व है। इस दिन यहां विशेष पूजा-पाठ के साथ भंडारा आयोजित किया जाता है। इसमें कुमाऊं के इलाकों के साथ साथ बाहरी पर्यटक भी पहुचते हैं। यहां बाबा नीम करोली की शरण में शीश नवाने के लिए भक्तों की भीड़ हजारों में उमड़ती है। नीम करोलीबाबा की महिमा न्यारी है। भक्तजनों की माने तो बाबा की कृपा से सभी बिगड़े काम बन जाते हैं। नीम करोली धाम को बनाने के संबंध में कई रोचक कथायें प्रचलित हैं। बताया जाता है कि 1962 में जब बाबा ने यहां की जमीन पर अपने कदम रखे तो जनमानस को हतप्रभ कर दिया। एक कथा के अनुसार माता सिद्धि और तुला राम के साथ बाबा किसी काम से रानीखेत से नैनीताल जा रहे थे, अचानक कैंची धाम के पास उतर गए। इसी बीच उन्होंने तुलाराम को बताया कि श्यामलाल अच्छा आदमी था, तुलाराम को यह बात अच्छी नहीं लगी, क्योंकि श्यामलाल उनके समधी थे। भाषा में ज्येष्ठ के प्रयोग से वे बहुत बेरुखे हो गए और गंतव्य स्थान की और चल दिए। कुछ समय के बाद ही उन्हें जानकारी मिली कि उनके समधी का निधन हो गया। यह चमत्कार ही था कि बाबा ने पहले ही जान लिया कि उनके समधी का बुलावा आ गया है। एक दूसरी घटना के अनुसार 15 जून को आयोजित विशाल भंडारे के दौरान घी कम पड़ गया। बाबा के आदेश पर पास की नदी का पानी कनस्तरों में भर कर प्रसाद बनाया जाने लगा। प्रसाद में डालते ही पानी अपने आप आप घी में बदल गया। इस चमत्कार से भक्त जन नतमस्तक हो गए। तभी से उनकी आस्था और विश्वास नीम करोली बाबा के प्रति बना है।

नीम करोली बाबा का यह आश्रम आधुनिक जमाने का धाम है। यहां मुख्य तौर पर बजरंगबली की पूजा होती है। इस जगह का नाम कैची यहां सड़क पर दो बड़े जबरदस्त हेयरपिन बैंड (मोड़) के नाम पर पड़ा है। कैंची नैनीताल से 17 किमी दूर भुवाली से आगे अल्मोड़ा रोड पर है।

Sponsored by:

Shagun news India.com
आपकी खबर आपकी बात
https://shagunnewsindia.com

'शैलसूत्र' पत्रिका के आजीवन सदस्य बनने की हार्दिक शुभकामनाएं

आलोक भूषण त्रिपाठी 'नीरज'
मंडल अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी
मऊआइमा ग्रामीण, गंगापार,
जनपद - प्रयागराज (उत्तर प्रदेश), भारत।

आवास -
भूषण निलयम
ग्राम - टी० टी० अब्दालपुर,
पत्रालय - हरीसेनगंज (मऊआइमा),
जनपद - प्रयागराज (उत्तर प्रदेश), भारत।
पिनकोड नं० - 212507
मोबाइल नं. - +918423099899,

राम मूरत चौहान (फिल्म ऐक्टर, प्रोड्यूसर ऐण्ड डायरेक्टर),

अब्दालपुर खास,
पत्रालय - सोरावं,
जनपद - प्रयागराज (उत्तर प्रदेश), भारत।
पिनकोड नं० 212502
मोबाइल नं०
+919415885622

हिमाचल अकादमी शिखर सम्मान के लिए नाम किए गए घोषित

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी द्वारा प्रदान किए जाने वाले वर्ष 2017-18 के शिखर सम्मान पर निर्णय ले लिया गया है। सचिव अकादमी डा. कर्म सिंह ने बताया कि वर्ष 2017 का साहित्य शिखर सम्मान प्रदेश के प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान प्रो. केशव शर्मा मशोबरा को संस्कृत भाषा साहित्य के क्षेत्र में एक शिखर तक आजीवन एवं उत्कृष्ट योगदान और विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रदान किया जाएगा, जबकि वर्ष 2017 का कला, संस्कृति शिखर सम्मान निष्पादन कला के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश के विख्यात लोक गायक, संगीतज्ञ मोहन राठौर को प्रदान किया जाएगा।

वर्ष 2018 का साहित्य शिखर सम्मान प्रदेश के प्रतिष्ठित विद्वान, कला, संस्कृति पर प्रमाणिक एवं शोधात्मक अनेक पुस्तकों के लेखक डा. ओ.सी. हांडा को एक शिखर तक आजीवन एवं उत्कृष्ट योगदान और विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रदान किया जाएगा जबकि कला के क्षेत्र में वर्ष 2018 का कला, संस्कृति शिखर सम्मान कांगड़ा की दिनेश कुमारी को ललित कला के अंतर्गत चम्बा रुमाल में एक शिखर तक आजीवन एवं विशिष्ट उपलब्धियों के लिए प्रदान किया जाएगा।

अकादमी के सचिव डा. कर्म सिंह ने कहा कि निर्णायक मंडल द्वारा संस्तुत नामों पर मुख्यमंत्री एवं अध्यक्ष अकादमी के अनुमोदन के उपरांत ये पुरस्कार घोषित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि कला, संस्कृति, भाषा और साहित्य के क्षेत्र में दोनों वर्षों के दो-दो कुल चार शिखर सम्मान पर निर्णय लिया गया है। अन्य अलंकरणों के साथ प्रत्येक शिखर सम्मान की राशि 1,00,000 रुपए होगी।

कर्म सिंह ने कहा कि वर्ष 2017-18 के शिखर सम्मान आगामी समय में मुख्यमंत्री एवं अध्यक्ष अकादमी के द्वारा प्रदान किए जाएंगे।

लंबी तपस्या रही

खुश हूं कि मुझे चंबा कढ़ाई के लिए यह पुरस्कार मिला। मैं इस कला को 1977 से कर रही हूं।मध्य प्रदेश, दिल्ली सहित कई राज्यों में चंबा कढ़ाई की प्रदर्शनी लगा चुकी हूं। अब अपने घर नूरपुर के समीप पांच लड़कियों को, इस विरासत को आगे सौंप रही हूं।

-दिनेश कुमारी, नूरपुर, कांगड़ा

मरने के बाद पुरस्कार मिलता तो क्या फायदा

मैं जीवन के अंतिम पड़ाव में हूं, यदि यह पुरस्कार मरने के बाद मिलता तो इसका क्या फायदा था। पुरस्कार सही वक्त पर मिला है। पांच साल की आयु से लोक गायकी की सेवा कर रहा हूं। यह मुझे विरासत में मिली है।

-मोहन राठौर, ठियोग, शिमला

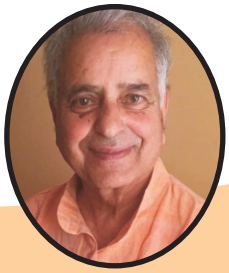

हिमालय लुभाता है

हिमालय मुझे आज भी लुभाता है। यही कारण है कि मेरी लिखी 36 किताबों में से अधिकांश में हिमालय शोध का विषय रहा है। मैंने कला साहित्य के क्षेत्र में काम किया है। अपनी किताबों के लिए ही पेंटिंग करता हूं।

-डॉ.ओसी हांडा, संजौली शिमला

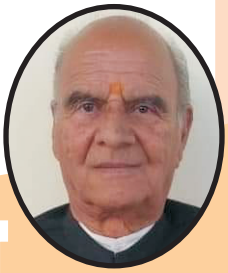

यह तो लंबी यात्रा है

पुरस्कार मिलना तो ठीक है, लेकिन यह बहुत लंबी यात्रा है। संयम के साथ आगे बढ़ना पड़ता है। मैंने सभी क्षेत्रों में काम किया है चाहे वह साहित्य संस्कृत का क्षेत्र हो या और दूसरे विषय।

-प्रो. केशव शर्मा, मशोबरा

शैल-सूत्र पत्रिका पंजीयन संख्या- DELHIN/2008/30044

TGP
TRIVENI GREENS PARIVAR PVT. LTD.

Shaunak
Marketing Pvt. Ltd.

त्रिवेणी ग्रीन्स परिवार (TGP)

लखनऊ और प्रयागराज में 'आपका अपना घर' का सपना साकार करते हुए अब

शौनक मार्केटिंग प्राइवेट लिमिटेड

के माध्यम से आपके स्वास्थ्य के लिए लेकर आ रहे हैं

आयुर्वैदिक उत्पाद!

आइये मिलकर भारत को 'स्वस्थ और सबल' बनाते हैं

Corporate Office : Chandan Vihar Apartment, 1rist Floor, Yatrik Hotel Chauraha (Behind Bharat Petrol Pump), Sardar Patel Road, Civil Lines, Prayagraj (U. P.), India.Pincode : 211001-Mobile No. : 8737006195, 7007164024, 8707467102

Registered Office: N B S Bhawan, 64 Seema City, Lucknow (U. P.), India.Pincode : 226025

सम्पादन परामर्श
डॉ. प्रभा पंत-09411196868
सम्पादक
आशा शैली -9456717150, 8958110859 7055336168,
सह सम्पादक/समन्वयक
चन्द्रभूषण तिवारी -9415593108/8707467102
सह सम्पादक/शोध प्रबंधक
डॉ. विजय पुरी-09816181836
सह-सम्पादक
विनय सागर जायसवाल -7520298865
मुख्य प्रबंधक
मंजु पाण्डे 'उदिता'-7017023365
बालोद्यान
पवन चौहान-09805402242
विधि-परामर्श
प्रदीप लोहनी-09012417688
प्रचार सचिव
डॉ. विपिन लता 9897732259
पुष्पा जोशी 'प्राकाम्या' 8267902090

सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता-
-साहित्य सदन, इन्दिरानगर-2
पो.-लालकुआँ, जिला-नैनीताल (उत्तराखण्ड) पिन-262402
मो.-09456717150,7078394060, 7055336168, 8958110859
Email-asha.shaili@gmail.com

मूल्य-एक प्रति 25/-,
वार्षिक 100/-,
आजीवन 1000/-,
संरक्षक सदस्य 5100/-

संरक्षक सदस्य:-
डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र-09412992244, शिव बाबू मिश्र -09412750094, अर्श अमृतसरी-09716317725, डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव-09212444369, प्रकाश चन्द्र लोशाली -9456114762, राजकुमार जैन 'राजन' 09828219919, केशव कुमार पटेल-9919352975, डॉ. विमला व्यास-9452780735, डॉ. शीला त्रिपाठी-9453257279, बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव-9451023854, अरविंद कुमार यादव -9125628814, श्रीमती ममता पाण्डेय-9453770833, मौजी लाल पटेल-9936380977, ए.के. पवार-9810059715, डॉ. ए.जे. अब्राहम- 9447375381

परामर्श:-
डॉ. श्यामसिंह 'शशि'-09818202120,
डॉ. धनंजय सिंह-09810685549
डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक' -07417619828

विशेष सहयोगी
पंकज बत्रा (लालकुआँ) -9897142223, निर्मला सिंह बरेली, -9412821608 सत्यपाल सिंह 'सजग' (लालकुआँ) -09412329561, राधेश्याम यादव -80066722221, दर्शन 'बेज़ार' (आगरा) -9760190692, डॉ. राकेश चक्र (मुरादाबाद) -9456201857, सूरत भारती, (हि.प्र.) -09418272934 कृष्णचन्द्र महादेविया, (मगडी हि.प्र.) -09857083213 , डॉ. वेदप्रकाश प्रजापति 'अंकुर' (हल्द्वानी) -9412943042, स्नेहलता शर्मा (लखनऊ)-9450639976 सुषमा भण्डारी, (दिल्ली)-09810152263, निरुपमा अग्रवाल (बरेली) -9412463533

1.शैल-सूत्र में प्रकाशित रचनाओं के प्रति सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
2.लेखक अपने विचार प्रेषण के लिए स्वतन्त्र है।
3. शैल-सूत्र परिवार के सभी सदस्यों के पद अवैतनिक हैं।
4.प्रत्येक कानूनी विवाद का निपटारा पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय का विधि क्षेत्र होगा।

शुल्क, खाता सं 024110100000073, कोड सं. IFSC; AUCB 0000025 अल्मोड़ा अर्बन बैंक, शाखा लालकुआँ अथवा भारतीय स्टेट बैंक शाखा तरुवाला, पाँवटा साहब (हि.प्र.) कोड सं. IFSC; SBIN 0000703 खाता सं 30116574461 में जमा करायें।

स्वामी, प्रकाशक, तथा मुद्रक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल) ने एच.जे. इंटरप्राइजेज़, खानचन्द मार्केट, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित कराया। सम्पादक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल-262402)

1. Dr. L.C. Sharma, IIRD Complex, Bye-pass Road, shanan, Sanjauli, Shimla-6 (H. P.) mo. 09418014761 iirdsml@gmail.com

2. श्री कृष्ण चन्द्र महादेविया
गाँव महादेव, तह. सुन्दर नगर,
मण्डी (हि.प्र.) 175018

3. डॉ. विजय पुरी,
ग्राम पदरा, डा. हंगलोह, त. पालमपुर, कांगड़ा (हि. प्र.)
7018516119, 9816181836

4-श्रीमती शिवा धरावेश,
20/7, दुर्गा कालोनी तरुवाला, पाँवटा साहिब,
जि. सिरमोर -173025 (हि.प्र.) 08894892999

5. **चन्द्रभूषण तिवारी**
ग्राम टी.टी.अब्दलपुर, डाकघर हरिसेन गंज, (मऊआईमा)
प्रयागराज-212507
मो. 9415593108, 8707467102
cbtiwari04091966@gmail.com

6. दिनेश पाठक 'शशि'
28, सारंग विहार, रिफ़ाइनरी नगर, मथुरा
9412727361, ईमेल- drdinesh57@gmail.com

7. अंजना छलोत्रे 'सवि',
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन,
द्वितीय तल, भोपाल-39 (म.प्र.)
मो. 08461912125 anjana.savi@gmail.com

8. श्रीमती पूर्णिमा ढिल्लन
फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया,
गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222
मो. 7767943298

9. केरल
Dr. A. J. Abraham,
ANCHANIYIL A.K.G. Unichira road, Changampuzha nagar, post-Kochi-33', Kerala. 9447375381

10- Dr. Sumangala Mummigati
'Chinmay' 4th Cross, Shreepad Nagar,
Near Rani Chennamma Nagar,
Dharwad, Karnatak. 7619164139

फार्म नं.-4 (नियम नं.-8)

1-प्रकाशन स्थानः	लालकुआँ
2-प्रकाशन अवधिः	-त्रैमासिक
3-मुद्रक का नामः	-आशा शैली
क्या भारत का नागरिक है	-हाँ
4-प्रकाशक का नाम	-आशा शैली
क्या भारत का नागरिक है	-हाँ
5-पताः	कार रोड, बिन्दुखत्ता, पो. लालकुआँ, जिला नैनीताल-262402 (उ.ख.)
6-सम्पादक का नामः	-आशा शैली
क्या भारत का नागरिक है	-हाँ
पताः	कार रोड, बिन्दुखत्ता, पो. लालकुआँ, जिला नैनीताल-262402 (उ.ख.)

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों।

-आशा शैली
कार रोड, बिन्दुखत्ता, पो.
लालकुआँ, जिला
नैनीताल-262402 (उ.ख.)

मैं आशा शैली एतद् द्वारा घोषणा करती हूँ कि मेरी अंतिम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

-आशा शैली

विध	लेखक	पृष्ठ
सम्पादकीय: उत्तरदायित्व का अकाल	-डॉ एल.सी. शर्मा	4
वैचारिकी: हिन्दी कथा साहित्य में निहित.....	-चन्द्रभूषण तिवारी	5
धरोहर: सीना फाड़ शहर के बीचों-बीच टांगने वाली.....	अंजना छलोत्रे	6
साहित्यिक चोरी	-डॉ. अमरेंद्र मिश्रा	7
कहानी:- अमानुष	-श्रीमती सुदर्शन पटियाल	8
गाजरी फ्रॉक वाली लड़की	-रश्मि बड़थ्वाल	10
राहों के दिए आँखों में लिए	-डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'	14
सुम्मी दीदी का पत्र अनु के नाम	-राजेंद्र स्वर्णकार	17
अनोखा रिश्ता	-डॉ. विमला व्यास	18
लघुकथा:-बूढ़ी माँ-सतीश बब्बा, जन आक्रोश-डॉ. सतीशराज पुष्करणा		20
वापसी	-डॉ दलजीत कौर	21
रील लाइफ	-नज़्म सुभाष	22
आम का बूढ़ा पेड़-शिवराज सरहदी, प्राचीन	-सुकीर्ति भटनागर	23
हथौड़ा	-मधुदीप गुप्ता	24
ठहराव में कहाँ सुख-विजय जोशी 'शीतांशु', ईमानदार-गोविंद शर्मा		24
बाल उपन्यास:-कोकाता से अण्डमान तक	-आशा शैली	25
शिप्रा की प्रबल धार के प्रतिरूप: डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन-डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र		28
शोध:-प्रो. शेरसिंह बिष्ट पुस्तक युगदृष्टा	-भगवान सिंह मेहता	30
लेख:-लोकगीतों में नकटा	-ऊषा किरण शुक्ला	32
महिला का जन्म नहीं होता बल्कि उसे.....	-सिमोन डी विभोर	30
मुझे प्यार हो गया	-डॉ. प्रभा पंत	37
व्यंग्य:- कुत्ते	-विनोद कुमार भावुक	39
काव्यधारा		
गीत:-कोई गीत कहन का मन है-वीरेश कुमार त्यागी-माँ की चिट्ठियाँ-मोद पुढ़ीर प्यासा		41
कविता:-जिन्हें कभी समझा नहीं गया-राजेश सिंह, क्षणों का चक्रव्यूह-प्रोमिला भारद्वाज		42
देश की प्रतिष्ठा-राज कुमार जैन 'राजन', -बाबा की चौपाल-आचार्य बलवंत		43
मैं आश्वस्त हूँ-नमन कृष्ण 'भागवत किंकर' / दोहे -एस.पी. सुधेश		44
ग़ज़ल:-लक्ष्मी खन्ना 'सुमन', के.पी.अनमोल, प्रवीण राय, नवीन हल्दूनवी, रवि प्रताप सिंह		45
बाल गीत:- बनें महान : नवीन शर्मा,		
नन्हीं कलम:-न जाने कब-गीतांजलि, झिलमिल झिलमिल बाल आए-सारिका		46
भारत दर्शन:-सिक्किम धरती पर स्वर्ग	-बबिता अग्रवाल कँवल	47
असम का मैनचेस्टर सुआलकुची सिल्क गाँव	-डॉ. विनोद बब्बर	49
लेख:-भारतीय नव संवत्सर की विश्वव्यापकता	-डॉ. सुनील पाठक	51
कविता:-देशगीत-कविता सिंह		52
समीक्षा:-पहाड़ों की सामाजिक पीड़ा का बखान.....	-बद्रीसिंह भाटिया	53
अनुभवों का जादुई स्पर्श	-प्रबोध कुमार गोविल	56
गीत:-उड़ रहे पन्ने समय के	-सीमा हरि शर्मा	56

शैल-सूत्र
जनवरी-जून-2020

उत्तरदायित्व का अकाल

सम्पादकीय

''घटनाएँ हमारे जीवन में घटती ही रहती हैं और उनका वर्णन ही 'कथा-कहानी' होता है, जो कभी उपन्यास और कभी लघुकथा, संस्मरण या यात्रावृत्त भी बन जाता है जो समाज को झकझोरता है। शैलसूत्र अपनी आयु के बारह वर्ष पूरे करके तेरहवीं दहलीज पर पाँव रखने के साथ ही कथा साहित्य पर अपनी पकड़ को सिद्ध करने जा रहा है। शिमला के हमारे सहायक डॉ. एल.सी. शर्मा की भेजी एक घटना के विवरण को ही इस बार मैं सम्पादकीय के लिए उपयोग में ला रही हूँ। घटना और उससे जुड़ी समस्या विचारणीय है।'' -सम्पादक

कुछ समय पूर्व दिल्ली से शिमला की ओर आने वाली एक सरकारी बस रात को चण्डीगढ़ पार करते हुए एक स्पीड ब्रेकर से ज़ोर से टकराई । शायद उस जगह पर बना स्पीड ब्रेकर नया था और ड्राईवर को उसका पूर्वानुमान नहीं था। गाड़ी ज़ोर से उछली और सभी यात्री अपनी सीटों से इधर-उधर गिर पड़े। एक अधेड़ उम्र व्यक्ति जो अंत की मध्य वाली सीट पर बैठा था, वह बीच बस में जोर से गिरा तथा रीढ़ की हड्डी में दर्द के कारण जोर से चिल्लाने लगा। सवारियों की मध्यस्तता से ड्राईवर ने तुरंत बस को पीजीआई चण्डीगढ़ की ओर मोड़ा। कुछ सवारियों ने मरीज को आराम से बस से उतारा और आपातकाल सेवा यानि इमरजेंसी में दाखिल करवा दिया। एक्स-रे, सिटी-स्कैन आदि सब होते-होते चार घंटे का समय बीत गया। आख़िर मरीज की रीढ़ की हड्डी में हल्की दरार बताई गई। इसी बीच संबंधित विभाग के दो अधिकारी भी अपनी प्रतीकात्मक उपस्थिति दर्ज़ कराने अस्पताल पहुँचे। सवारियों ने पूरा सहयोग करने के बाद कथित अधिकारियों से आग्रह किया कि मरीज का ख़्याल रखें व अस्पताल के खर्चे में मरीज की सहायता करें। बस सुबह के करीब सात बजे शिमला रवाना हुई ।

डॉक्टर के परामर्श के अनुसार10 दिनों के बाद मरीज को अस्पताल से छुट्टी हो गई और अब कम से कम छः महीनों के लिए वह बिस्तर पर है। इलाज़ के खर्चे की संबंधित विभाग से उम्मीद थी, जो कि पूरी नहीं हुई। कई बार संबंधित निकाय तथा मुख्यमंत्री कार्यालय को ईमेल भेजी गई पर कहीं से कोई जवाब नहीं मिला। इस बीच बेचारे की प्राइवेट नौकरी भी चली गई। पत्नी एक निजी विद्यालय में पढ़ाती थी, अब नौकरी छोड़ पति की सेवा में लगी हैं। परिवार की आर्थिकी ज़मीन पर आन पड़ी। इसका प्रभाव बच्चों की पढ़ाई पर न पड़े, यह विषय सतत चिंता का कारण हैं । अंततः मरीज को बस वालों पर मुकद्मा बनाना पड़ा और अब अपनी टूटी हुई रीढ़ की हड्डी के साथ-साथ वर्षों न्यायायिक प्रक्रिया में अपना समय झोंकेंगे। एक स्वस्थ व्यक्ति, एक कारोबारी व्यक्ति जब अचानक इस प्रकार के हादसे का शिकार होता है तो जीवनयापन के सारे विकल्प प्रभावित होते हैं। इससे भी अधिक एक आत्मग्लानि कि काश उस बस में न जाता, तो ऐसा न होता !

उस व्यक्ति की क्या यही ग़लती थी कि वह उस बस विशेष में यात्रा कर रहा था? उसके आगे के जीवन व परिवार के पालन-पोषण के बारे में कौन सोचेगा? क्या हमारे सरकारी महक़मों या निकायों से कम से कम अस्पताल के बिल देकर अपना प्रारंभिक दायित्व भी पूरा करने की उम्मीद नहीं की जा सकती है? आख़िर क्यों हम बिना न्यायालय के आदेशों के ही समुचित कदम नहीं उठाते? क्या यह हमारी मस्तिष्क की निष्क्रियता है या जनमानस के प्रति उदासीन रवैया? जबकि दूसरी ओर सहयात्रियों ने संवेदना का परिचय दिया, मरीज़ को उठाया, लेटाया, उपचार का सामान खरीदा, बिस्तर की सफाई की और पूरे चार घंटे अस्पताल में मरीज के साथ खड़े रहे। मरीज के साथियों ने अटैंडेंट की वैकल्पिक व्यवस्था होने के बाद ही बस को चण्डीगढ़ से शिमला रवाना किया। यह घटना शासकीय व्यवस्था में जमे अधिकारियों और आम जनता की सोच में व्यापक खाई की ओर इंगित करती है। क्यों न अधिकारी विशेष की जिम्मेवारी निश्चित की जाए इस प्रकार के विषयों पर कदम उठाने से हुई क्षति की व्यक्तिगत स्रोत से आपूर्ति के लिए?

जब लोकतंत्र की नींव रखी गई थी, शायद किसी ने यह नहीं सोचा होगा कि उन्हीं के द्वारा बनाई जा रही शासन व्यवस्था आगे चल कर उनसे सौतेला व्यवहार करेगी।

-डॉ. एल.सी. शर्मा, प्रधान संपादक द रीव।

हिन्दी कथा साहित्य में निहित भारतीय संस्कृति और परम्परा

कहानी! अर्थात् कथा साहित्य आदिकाल से जहाँ मनोरंजन का साधन बना हुआ है वहीं सामाजिक समन्वय में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। समाज को दिशा भी देता है और समाज की दशा-दिशा पर पैनी नज़र भी रखता है। पुराणों की कथायें, यात्रा विवरण, लोककथायें, संस्मरण शब्दचित्र आदि सभी कथा साहित्य के दायरे में आते हैं। सबसे बड़ा कथा साहित्य तो इतिहास है जो हमें प्रेरणा भी देता है और हिम्मत भी। साथ ही समाज को कहीं न कहीं संस्कारित भी करता है। इस बार पत्रिका को भी कोरोना का प्रकोप झेलना पड़ा इसीलिए इस बार भी हमें संयुक्तांक निकालना पड़ रहा है वह भी ई बुक के रूप में। ईश्वर की कृपा से परिस्थितियाँ शीघ्र सामान्य हो जाएँ और हम फिर से आमने-सामने हों।

हिन्दी कथा साहित्य का इतिहास भारत में युगों पुराना है। पुरातन काल अर्थात सभ्यता के आदिकल से ही कहानियाँ कही-सुनी व लिखी जाती रही हैं। ऐसी कहानियाँ, जो भारतीय संस्कृतिक परम्परा की संवाहक हैं वे हमारे भीतर जाने-अनजाने विषम परिस्थितियों से लड़ने की हिम्मत भर देती हैं और हम असम्भव कार्य को भी सम्भव करने में सक्षम हो जाते हैं। क्योंकि भारतीय सांस्कृतिक परम्परा सदैव ही मानव कल्याण की संवाहक रही है। बड़ी-बड़ी कठिनाइयों के होते हुए भी हम अधिकांश कार्य सफलतापूर्वक कर पाते हैं। हिन्दी कथा साहित्य में कहानी एक प्रमुख कथात्मक विधा है। आधुनिक हिन्दी कहानी का आरम्भ बीसवीं सदी में हुआ। विगत एक सदी में हिन्दी कहानी ने आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवाद, आंचलिकता इत्यादि के दौर से गुजरते हुए अनेकों उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। मुंशी प्रेमचंद, निर्मल वर्मा, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, ओम प्रकाश बाल्मीकि, उदय प्रकाश, ज्ञानरंजन, मन्नू भण्डारी, ऊषा प्रियंवदा आदि हिन्दी के प्रमुख कहानीकार कहे जाते हैं। वर्तमान काल में प्रवासी साहित्यकार भी बड़ी संख्या में कहानी-उपन्यास और लघुकथा भी रच रहे हैं।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, यह कहावत बहुत प्रसिद्ध है। मेरा मानना है कि वह दर्पण भी है और दीपक भी, जो दिशा भी देता है और वर्तमान दशा से भी समाज को परिचित कराता है। इसी संदर्भ में कहना होगा कि हमारा कथा साहित्य पौराणिक गाथाओं से मध्यकाल तक यात्रा करता हुआ वर्तमान में अपने समय की समस्याओं से जूझ भी रहा है और समस्याओं के नए-नए समाधान भी प्रस्तुत कर रहा है इसके साथ ही हमें अपनी परम्पराओं से भी कहीं न कहीं जोड़े रखता है। हिन्दी कथा साहित्य में निहित भारतीय सांस्कृतिक परम्पराएँ समाज पर अपना सकारात्मक प्रभाव अवश्य छोड़ती हैं और हमारा कथा साहित्य उसका संवाहक बनता है।

वर्तमान समय की समस्याएँ पौराणिक और मध्यकाल से एकदम भिन्न हैं। आज के युग में न तो मुंशी प्रेमचंद के पात्र माँ के हाथों को जलने से बचाने के लिए मेले में चिमटा खरीदते नज़र आऐंगे न ही द्रोपदी स्वयंबर के लिए मछली की आँख पर निशाना साधते। आज का कहानीकार आपको करोना जैसे वायरस से लड़ता नज़र आएगा, हवाई दुर्घटना और चोरबाजारी से बचाव के तरीके खोजता, बिखरे परिवार को एक करने के उपाय, उपेक्षित वृद्धावस्था के भरण-पोषण के उपाय खोजता दिखाई देगा। बढ़ते प्रदूषण और बिगड़ते पर्यावरण के साथ-साथ जाति परम्परा पर चोट करता दिखाई देगा। हम कह सकते हैं कि वर्तमान कथा साहित्य ने अपनी दिशा पूरी तरह बदल ली है। आज बड़ी संख्या में जीवनियाँ लिखी जा रही हैं, यात्रा वृत्त लिखे जा रहे हैं। संस्मरण और कहानी-उपन्यास लिखे जा रहे हैं पर उनका स्वरूप बदला हुआ है। आज का कथा-साहित्य अपने समय की समस्याएँ और समाधान साथ लेकर चल रहा है। यदि ईमानदारी की बात करें तो आज का कथा साहित्य हमें अपने संस्कारों की याद दिलाता है। हमें झकझोर कर उन्हीं संस्कारों की ओर लौटने का रास्ता दिखाता है जो हमारे लिए बहुत मूल्यवान हैं।

आज विज्ञान का बोलबाला है, आज का कथा साहित्य टूटते-बिखरते समाज का साहित्य है, संस्कृति पर आए संकट का साहित्य है। समाज में छाई उछृंखलता और बढ़ती चरित्रहीनता से आहत मानवता का साहित्य है, इसलिए यह सब आपको आज के कथा साहित्य में उपलब्ध होगा। आज हमें अपनी संस्कृति पर आए गम्भीर संकट की चिंता है और हमारा वर्तमान कथा साहित्य इसी ओर संकेत भी करता है।

चन्द्र भूषण तिवारी 'चन्द्र'
प्रयागराज (उ. प्र.) भारत

सीना फाड़ शहर के बीचों-बीच में टांगने वाली रानी रुदाबाई -अंजना छलोत्रे

आज के युग में नारी सशक्तिकरण का मुद्दा हर तरफ बड़े जोर-शोर से उछाला जाता है। सवाल पैदा होता है कि क्या भारतीय नारी इससे पहले शक्तिहीन रही है? जी नहीं। आप इतिहास में झांककर देखिए तो अपने इतिहास पर गर्व करेंगे। देश के किसी भी हिस्से का इतिहास उठाकर देख लीजिए। आज मैं आपको गुजरात ले चलती हूँ।

15वीं शताब्दी ईसवी सन् 1460-1498 पाटन राज्य गुजरात से कर्णावती (वर्तमान अहमदाबाद) के राजा थे राणा वीर सिंह वाघेला। इन्हीं वाघेला राजपूत राजा की अतीव सुन्दर रानी थी जिनका नाम रुदाबाई (उर्फ़ रूपबा) था। इनकी अपूर्व सुंदरता के चर्चे चारों ओर फैले हुए थे। रुदाबाई जितनी रूपवान थी उतनी ही दृढ़ संकल्प और साहसी महिला भी थीं।

उस समय तक पाटन राज्य बहुत ही वैभवशाली राज्य था। इस राज्य ने कई तुर्क हमले झेले थे, पर इन आक्रमण कारियों में से सफलता किसी को भी नहीं मिली। तथ्यों के अनुसार सन् 1497 पाटन राज्य पे हमला हुआ। सुल्तान बेघारा ने आक्रमण कर तो दिया परन्तु राणा वीर सिंह वाघेला के पराक्रम के सामने बेघारा की चार लाख से अधिक संख्या की फ़ौज दो घंटे से ज्यादा टिक नहीं पाई थी।

राणा वीर सिंह वाघेला की फ़ौज छब्बीस सौ से अठ्ठाइस सौ की संख्या में थी क्योंकि कर्णावती और पाटन बहुत ही छोटे-छोटे दो राज्य थे। इनमें ज्यादा फ़ौज की आवश्यकता उतनी नहीं होती थी, इसके बाद भी राणा जी की रणनीति ने चार लाख की जिहादी लुटेरों की फ़ौज को खदेड़ दिया था।

इतिहास गवाह है कि कुछ हमारे ही देश के भेदी इस तरह के हुए हैं जो दुश्मनों से जाकर अक्सर मिल जाया करते थे। कुछ लालच और लोभ में, इसी तरह द्वितीय युद्ध में राणा जी के साथ रहने वाले निकटवर्ती मित्र धन्नू साहूकार ने राणा वीर सिंह को धोखा दिया। धन्नू साहूकार जा मिला सुल्तान बेघारा से और सारी गुप्त जानकारी उसे प्रदान कर दी, जिस जानकारी के बल पर राणा वीर सिंह को परास्त कर रानी रुदाबाई एवं पाटन की गद्दी को हड़पा जा सकता था। सुल्तान बेघारा ने धन्नू साहूकार के साथ मिल कर राणा वीर सिंह वाघेला को मार कर उनकी स्त्री एवं धन लूटने की योजना बनाई।

सुल्तान बेघारा ने साहूकार को आश्वासन दिया कि अगर युद्ध में जीत गए तो जो माँगोगे दूँगा, तब साहूकार की दृष्टि राणा वाघेला की सम्पत्ति पर थी और सुल्तान बेघारा की नज़र रानी रुदाबाई पर। वह रानी को अपने हरम में रखने की एवं पाटन राज्य की राजगद्दी पर आसीन होकर राज करना चाहता था।

सन् 1498 ईसवी (संवत् 1555) दो बार युद्ध में परास्त होने के बाद सुल्तान बेघारा ने तीसरी बार फिर से साहूकार से मिली जानकारी के बल पर दुगनी सैन्यबल के साथ आक्रमण किया। राणा वीर सिंह की सेना ने अपने से दुगनी सैन्यबल देख कर भी रणभूमि नहीं त्यागी और असीम पराक्रम और शौर्य के साथ लड़ाई लड़ी। जब राणा, सुल्तान बेघारा के सेना को खदेड़ कर सुल्तान बेघारा की और बढ़ रहे थे तब उनके भरोसेमंद साथी धन्नू साहूकार ने पीछे से वार कर दिया, जिससे राणा की रणभूमि में मृत्यु हो गयी।

साहूकार ने जब सुल्तान बेघारा को उसके वचन अनुसार राणा के धन को लूट कर उनको देने का वचन याद दिलाया, तब सुल्तान बेघारा ने कहा ...''एक गद्दार पर कोई ऐतबार नहीं करता हैं, गद्दार कभी भी किसी से भी गद्दारी कर सकता हैं।" सुल्तान बेघारा ने उस साहूकार को हाथी के पैरों के तले फेंक कर कुचल डालने का आदेश दिया। साहूकार की पत्नी एवं साहूकार की कन्या को अपने सिपाहियों के हरम में भेज दिया।

सुल्तान बेघारा रानी रुदाबाई को अपनी वासना का शिकार बनाने हेतु राणा के महल की ओर दस हजार से अधिक लश्कर लेकर पँहुचा। रानी रुदाबाई के पास शाह ने अपने दूत के जरिये निकाह प्रस्ताव भेजा। रानी रुदाबाई ने महल के ऊपर छावणी बनाई थी जिसमे पच्चीस सौ धनुर्धारी वीरांगनायें तैनात थीं, जो रानी रुदाबाई का इशारा पाते ही लश्कर पर हमला करने को तैयार थीं। रानी रुदाबाई न केवल सौंदर्य की धनी ही थीं बल्कि शौर्य और बुद्धि की भी धनी थी। उन्होंने सुल्तान बेघारा को महल द्वार के अन्दर आने को कहा। सुल्तान बेघारा ने रानी को पाने के लालच में अंधा होकर वैसा ही किया जैसा रुदाबाई उसे करने को

कहा। रुदाबाई ने समय न गंवाते हुए सुल्तान बेघारा के सीने में खंजर उतार दिया। उधर छावनी से तीरों की वर्षा होने लगी जिससे शाह का लश्कर बचकर वापस नहीं जा पाया।

सुल्तान बेघारा को मार कर रानी रुदाबाई ने सीना फाड़ा और उसका दिल निकाल कर कर्णावती शहर के बीचो-बीच टंगवा दिया था। उसके सर को धड़ से अलग करके पाटन राज्य के बीच टंगवा दिया, साथ ही यह चेतावनी भी दी गई कि कोई भी आततायी भारतवर्ष पर या हिन्दू नारी पर बुरी नज़र डालेगा तो उसका यही हाल होगा।

रानी रुदाबाई की पच्चीस सौ धनुर्धारी वीरांगनाओं ने सुल्तान बेघारा के दस हजार सैनिकों को मार डाला था। रानी रुदाबाई इस युद्ध के बाद जल समाधी ले ली ताकि उन्हें कोई और आक्रमणकारी अपवित्र न कर पाए।

आप देखेंगे, भारतवर्ष में ही आपको ऐसी वीरांगनाओं की कथाएँ मिलेंगी जिन्होंने अपने राज्य और देश की सेवा में अपना सर्वस्व निछावर किया और इतिहास का हिस्सा बन गईं और स्वर्णाक्षरों में अपना नाम लिखवा गईं। अब यह दायित्व हमारा है कि हम उनको, उनके बलिदानों को किस तरह और कितना सम्मान देते हैं।

-48, फारच्यून ग्लोरी,
ई-8, एक्सटेंशन,
द्वितीय तल, भोपाल-39 (म.प्र.)
मो. 08461912125
anjana.savi@gmail.com

साहित्यिक चोरी -डॉ. अमरेंद्र मिश्रा

एकबार मुझे फेसबुक पर चार विभिन्न कविताएँ अच्छी लगीं और उन चार कवियों से आग्रह किया कि वे उन कविताओं को पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेज दें। उन कविताओं को पढ़कर मुझे अतिरिक्त खुशी इस बात को लेकर हुई थी कि अचानक नज़र में आये ये नये रचनाकार बहुत उत्कृष्ट रचनायें लिख रहे हैं जिसका स्वागत किया जाना चाहिए, लेकिन परिणाम बड़ा निराशाजनक रहा। वे कविताएँ तो मेरे पास नहीं आयीं, विपरीततः उन तथाकथित 'कवियों' ने मुझे ही 'ब्लाक' कर दिया। तात्पर्य कि वे उनकी कविताएँ थीं ही नहीं।

इस अनुभव के कुछ ही दिनों बाद फेसबुक से ही यह निंदनीय और दुखद सूचना मिली कि हिन्दी के एक वरिष्ठ कवि की कविताओं का किसी ने एक पत्रिका में साधिकार अपने नाम से प्रकाशन करवा लिया। इससे भी आश्चर्यजनक बात यह है कि प्रख्यात पर्यावरणविद् और मेरे मित्र अनुपम मिश्र ने अपनी एक किताब के लिए जब यह घोषणा की, कि 'इस पुस्तक का कोई भी अंश कोई भी व्यक्ति जनहित में उपयोग कर सकता है।' बस! फिर क्या था, एक महाशय ने पूरी किताब ही अपने नाम छपवा ली। कबीर, सूर, तुलसी, रैदास की कविताओं को किसी आकर्षक चित्र के साथ छपवाना और आभार भी प्रकट न करना या उनका नाम भी नहीं लिखना, छुटपुट साहित्यिक-गैर साहित्यिक निंदनीय घटनायें हैं जिन्हें इन दिनों अक्सर देखा जा सकता है।

ऐसे असाहित्यिक और गैर जिम्मेदाराना काम करने वाले जरा सोचें कि इससे उनका कितना फायदा होता है? ऐसा करते क्या वे खुद को ही नहीं ठगते हैं? क्या ऐसा करके वे खुद की ही नजरों में नहीं गिर जाते? क्या वे जानते हैं कि एक लेखक अपनी रचनात्मकता के दौरान कितने तरह के दवाबों और यंत्रणाओं से गुजरता है? और यह भी कि एक उत्कृष्ट रचना लेखक को भीतर से कितने गहरे आंदोलित करने के बाद पूरा होती है? क्या जीवन के शेष क्षेत्रों की तरह साहित्य में भी 'बाहुबली' प्रवेश करने लग गये हैं ?? और क्या यहाँ भी साहित्य के प्रॉपर्टी डीलर प्रवेश करने लग गए हैं।

फेसबुक एक डायरी की तरह होता है। इस पर हमारे सरोकार ऐसे होने चाहिए जैसे हम एक-दूसरे के सुख-दुख के सहभोक्ता हों। सच के बरक्स सच की बात हो। ईमानदारी, सचाई और आपसी प्यार हो। यहाँ तक कि जो समाचार न्यूज चैनल सच्ची घटना दिखाने से बचते हैं, उन्हें सोशल मीडिया से लेकर खुद का बचाव करते नजर आते हैं। जाहिर है कि इसके माध्यम से ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए जिससे को किसी तरह की आत्मग्लानि महसूस करे!

(नोटः लेखक 'समहुत' पत्रिका के सम्पादक हैं)

अमानुष -श्रीमती सुदर्शन पटियाल

देहात में रात जल्दी ही हो जाती है, सारे दिन के थके-हारे लोग शीघ्र ही खा-पीकर सोने चले जाते हैं। ऐसी ही एक रात को कुराली के एक दरवाजे पर जोर की दस्तक हुई। मुखत्यार सिंह ने कराहते और खांसते हुए आवाज़ दी, ''सिमरने! वेखीं जरा, कौन इस वक्त आ गया है? कहीं बलवंता तो नहीं आया??''

सिमन ने रजाई से मुँह ढांपे ही जवाब दिया, ''आण देयो उसनू! मैं उसदा मुँह भी नहीं देखना चांहदी।''

तब तक दस्तक दूसरे दरवाजे पर आरम्भ हो गई थी जैसे कोई पैर से ठोकरें मारकर दरवाजा खोलना चाह रहा हो, ''ओह ही होना है। पता नहीं कित्थे-कित्थे खेह खा के आया है।'' उसने अभी कुण्डी पूरी खोली भी नहीं थी कि दरवाजा भड़ाक से खुल गया। सामने खड़े थे तीन लम्बे-ऊँचे जवान बंदूक ताने, शराब की दुर्गन्ध छोड़ते हुए। अभी वह सम्भला ही था कि उन्होंने गालियों की बौछार कर दी, ''बुड्ढे! की मौत आई सी तैने दरवाजा खोलदे, साहनू ठण्ड विच खड़ा रखेया। तेरी उमर दा तकाजा ना होंदा तां हुणे गोली नाल उडा देना सी।'' तब तक एक ने बंदूक तान भी ली थी। वह गिरता-पड़ता चारपाई पर बैठकर खांसने लगा था।

''ते मार देयो, किसने रोकेया है? असीं ज्यूंदेयां विच तां है नीं।'' सिमरन भी तब तक पति को बचाने बिस्तर से निकलकर दहलीज पर खड़ी हो गई थी।

''बुड्ढिये! और कौन है तेरे घर में? सब को यहाँ बुलाकर खड़ा कर दे।''

''अपने आप ही देख लवो। कौन रह गेया है इस उजड़े घर में?'' दो जने इधर-उधर घूमकर तलाशी लेने लगे। ''यह किस की फोटो है बुढ़िया? इसको कित्थे लकोया है, जल्दी बता। नहीं तो पता है, हम कौन हैं?? हमारे लिए बुड्ढा-जवान, तीमियाँ, बच्चे, सब एक हैं। जल्दी बता।''

यह मेरे इकलौते बेटे और बहू की फोटो है।'' मुखत्यार सिंह ने बताया।

''यह भी तुम्हारी तरह ही फट्टर हो गया है, न जाने कहाँ-कहाँ, किस-किस की जानें लेता फिरता है। नूंह नहठ गई है पेके। क्या करती हम बुड्ढों के पास रहके।''

''बुड्ढिये! जबान सम्भाल के बात कर।'' दूसरा बोला, ''अच्छा, भूख लगी है हमारे लिए जल्दी से रोटियाँ बना। कई दिन हो गए हैं बाहर खेतों में कच्ची-पक्की सब्जियाँ और फल खाते।''

''कनक का आटा तो खतम है, छलियों (मक्की) की खानी है तो बना देती हूँ।'' एक बोला, ''बुढिए, कहीं आटा छिपाया तो नहीं है?''

''नहीं, लगता है झूठ नहीं बोल रही। चल रोटी लगा, देर हो रही है। हमने आगे ठिकाने पर निशाना साधना है।'' दूसरे ने कहा।

सिमरन ने एक लकड़ी से आग को टटोला। कुछ अंगारों से चिंगारियाँ निकलीं। उन पर टांडे और उपले रखकर फूंक देने लगी। लकड़ी की परात पर टीन से आटा गिराया और आंगन से मिट्टी के घड़े से पानी ले आई। परात में आटा मसलती जाती और चूल्हे में फूंक देती जाती। धुंआँ सारे घर में भर गया था। एक चिल्लाया, ''बुढ़िया धुआँ बंद कर।'' सिमरन ने तवा गरम होते ही रोटी तवे पर डाल दी और कुछ लकड़ियाँ चूल्हे के पास सूखने के लिए रख दीं। वे सब खाली चारपाई पर बैठ गए, जूते बंदूकों समेत। सब तरफ घूर-घूरकर देख रहे थे। तभी उनमें से एक उठकर लकड़ियाँ तोड़कर सिमरन को देने लगा और चूल्हा जलाने में मदद करने लगा।

''जिंउंदा रह पुत्तर। लै ऐथे बैठ जा।'' सिमरन ने उठकर उसे पटरा बैठने के लिए दिया। वह रोटियाँ बनाती और छाबी में रखती जा रही थी।

''क्या साथ में चाय बन सकती है?''

''दूध नहीं है। मझ रखी थी, पर जब बेटा-बहू ही चले गए तो सेवा कौन करता इसलिए बेच दी। जब पुत्तर ही उजड़ जावे, तो लोग क्यों मुँह लगावे।'' सिमरन बोलती भी जा रही थी और आटा भी मलती जा रही थी। धुएँ से आँखों में आए पानी को भी पोंछती जा रही थी। अब तक उन्होंने एक देसी शराब की बोतल भी निकाल ली थी और शराब पीकर आपस में गाली-गलौच कर रहे थे।

''यह क्या रखा है चूल्हे पर पीछे उबलने, काले छोले लगते हैं।''

''नहीं रीठे हैं।''

''रीठे? क्या करने हैं रीठे?''

''पता नहीं मेरा बलवंता गंदा-फंदा, रात-बिरात जा जावे तो उसके बाल धोने के लिए उबाल रखती हूँ।''

''अच्छा! हाँ तो क्या कहती थी तू, वह भी मिलीटेंट बन

गया है?''

''हाँ! लड़कर चला गया है मेरे साथ। मैंने कहा था, 'पुत्तर यह काम छोड़ दे, असीं नून नाल रोटी खा लवांगे पर गल्त काम नीं कर।'' पर उनीं जवाब दिता, ''हम भूखे-नंगे नीं रह सकते। दुनिया ऐश करे और हमारे घर में तड़का लगाने को घी-तेल भी ना हो। देखना माँ! मैं इतना कमा के लाऊँगा कि तू बस वेहड़े में मंजे पर बैठकर पोते-पोतियाँ खिलायेगी, काम कुठ भी नहीं करेगी।''

वह थोड़ा रुकी। फिर कहने लगी, ''एक दिन पुलिस उसे बिना कसूर पकड़कर ले गई। ढूट भी गया पर पुलिस ने उसे इतना मारा कि कहता था, इसका बदला लेकर रहूँगा। कुछ दिनों घर से भाग गया। मेरे और अपने बापू के साथ लड़कर। मैं हाथ-पाँव पकड़ती रही पर वह चला गया। फिर कितने महीनों ही नहीं आया। एक बार आया था, तुम्हारी तरह बंदूक नाल लैस होकर। उस पुलसिए को मार आया था जिसने उसे पीटा था। वह खुश था, कहता था, ''माँ! मैं अब बहुत सारे फैसले करके ही आऊँगा। मेरी फिकर मत करना।''

मैंने कहा था, ''तू नहा ले। खट्टी लस्सी और रीठे से अपने केस धो ले।'' उसने रीठे का पतीला दूर वगाकर मारा, कहने लगा, ''हुन तेरा पुत्तर शैंपू नाल बाल धोएगा।'' मैं उसे पकड़ने गई तो मेरा पैर पानी पर फिसल गया और मैं गिर पड़ी। वह मुझे वहीं छोड़कर चला गया, फिर कदी नहीं आया।''

उसने सारी बात सुनते-सुनते सिर खुजाने के लिए पगड़ी उतारी और बुढ़िया के पैरों के पास रख दी, ''पुत्तर! तेरा सिर भी बहुत गंदा हो रहा है। आँगन में पानी रखती हूँ। तू रीठों से हाथ-पैर और केश धो ले।''

उधर से एक चीखा, ''बुड्ढी माई! बातों से ही पेट भर देगी कि कुछ खाने को भी देगी? बुढ़िया ने पानी की सुराही और गिलास बीच में रख दिए। थालियों में रोटियाँ-अचार डालकर रख दिया।

''हरी मिर्च और गंड्ढे भी नहीं तेरे पास?'' उसने प्याज और लाल मिर्च उनके सामने रख दी। खाना खाते हुए एक ने पूछा, ''क्या नाम है तेरे पुत्तर दा?''

''बलवंता।''

''अच्छा हाँ! बलवंता। फोटो देख लई है, पहचान लेया है।'' सिमरन धुएँ से कम और दुख से अधिक आँसू बहा रही थी। उनमें से एक कुलवंत को याद आया, बिलकुल ऐसे ही उसकी माँ भी खाना पकाती जाती थी और साथ्ज्ञ ही रोती भी जाती थी, ''पुत्तर! गलत रस्ते नीं जाना। असीं गरीबी विच ही ठीक हाँ। मेहनत करांगे, इज्जत नाल रोटी खावांगे।'' आखिरी बार वह भी रास्ता रोकने पर माँ को धक्का देकर आया था। उसके चीखने की आवाज़ दूर तक सुनाई दे रही थी। आज तक सुनाई देती है उसे। वह भी सोचता था, खूब पैसे लेकर जाऊँगा, माँ को दूँगा। वह अच्छे कपड़े पहनेगी। नंगे पाँव नहीं घूमेगी। एक बापू निकम्मा, कुछ नहीं कमाता नशा करता है और मार-कुटाई करता है। भाई है, वह माँ का ध्यान तो रखेगा ही।'' पर वह वापस लौटकर गाँव न जा सका, पूरे तीन साल हो गए हैं।

''पुत्तर! रोटी होर लै लो। अचार देयां होर?''

''नहीं, काफी है। स्वाद आ गया घर की रोटी खाकर।''

''अच्छा, गल सुण पुत्तर! जब तुम लोग बंदूक से किसी माँ के जाए को मारते हो तो क्या किसी माँ का दिल नहीं फटता होगा? माएँ तो गाती हैं, पुत्तर मिठड़े मेवे, रब सब नू देवे।''

''माई! ज्यादा बक-बक नीं करनी। तुहानू तीमियां नू कुज पता-सता नहीं होंदा। हमने क्या तुम्हारी तरह सारी जिंदगी रोते रहना है? हमने कुछ समय में ही इतना कमा लेना है जो सारी जिन्दगी नहीं कमा सकते घर में रहकर। यह बड़े-बड़े नेता अपना घर भरते जाएँ पर हमारे लिए वही गुलामी, कंगाली, वही मुसीबतें, हद होती है।'' सिमरन ने गुण की एक-एक डली डाल दी थाली में और वे पानी पीकर डकार मारते, बंदूकें सँभालते बाहर निकल गए। सिमरन उन्हें दूर तक जाते देख ठण्डी सांस ले दरवाजे पर सांकल चढ़ा अपने बिस्तर पर लेट गई। आज उसे बलवंता बहुत याद आ रहा था।

अगले दिन अखबार में छपा था, अमुक गाँव में उग्रवादियों ने छापा मारा। कुछ न मिलने पर वापस चले गए। किसी की जान नहीं गई।

इस बात को कई साल बीत गए थे। अब तो उग्रवाद का दौर भी खत्म होने को आया था। कई पकड़े गए थे, कइयों ने आत्म समर्पण किया था। पहले जहाँ अखबार के पन्ने मृतकों की तस्वीरों से भरे होते थे, वहाँ अब मिलिटेंटों के मरने की खबरें और फोटो छपने लगे थे। जाहिर है कि उनमें से कई बेकसूर भी होंगे। आखिर पुलिस ने भी तो वाह-वाही लूटनी थी। झूठी शिकायतों पर पकड़कर लेजाते लोग खबर पढ़ते और अखबार एक तरफ रख देते।

ऐसे ही कुलवंता और बलवंता भी पकड़े गए। एक ही कोठरी में थे। कुलवंता ने उससे नाम-गाँव पूछकर पता लगा लिया था कि यह तो वही है जिसके घर वे रोटियाँ खाकर

आए थे। एक दिन उसने अकेले में बलवंते से कहा, ''मैं तेरे पिंड होकर आया हूँ। तेरी माँ तुझे बहुत याद करती है। तू घर चला जा।''

''पर मैं तो कत्ल का मुजरिम हूँ। मुझे तो मौत की सज़ा जरूर ही होगी।''

''उसका उपाय मैंने कर लिया है।'' उसने पगड़ी के नीचे से एक यन्त्र निकालकर कुलवंत नाम उसकी पीठ और बाजू पर कुरेद दिया, ''मेरे ऊपर कोई गम्भीर आरोप नहीं है। मैं तो माफी माँग कर छूट सकता हूँ। अब तू अपने को कुलवंता ही समझ और मैं बलवंता।''

''पर तेरी माँ भी तो रोती होगी वीर।''

''मेरे एक भाई है, तू तो अकेला ही है। तेरी माँ में ही मैंने अपनी माँ को देखा है। उसके चरण धोकर पीना। सेवा करना की खूब।'' वह चुप हो गया, फिर कहने लगा,

''हाँ मेरे पिंड भी जाना। वहाँ रास्ते में एक मीठे पानी का खूह है। उसके पास एक आम का पेड़ है, उसके नीचे मैंने कुछ सोना-चाँदी दबाया है। वह निकालकर तू मेरी माँ को दे देना। कहना, मैंने अपने पाप का प्रायश्चित कर लिया है। पता नहीं, वह लेगी कि नहीं। कहना उसके बेटे ने प्रायश्चित कर लिया है। अगर फिर भी न ले तो किसी ऐसी माँ को दे देना जिसका इकलौता बेटा.....'' आगे वह बोल नहीं पाया। आवाज़ रुंध गई। आँसू छिपाता हुआ वह दूसरी कोठरी में चला गया, जहाँ से उसके गाने की आवाज़ आ रही थी, ''रहना नहीं, देस बेगाना है। ''

-18, हाउसिंग बोर्ड कालोनी,
जाखू, शिमला (हि.प्र.)

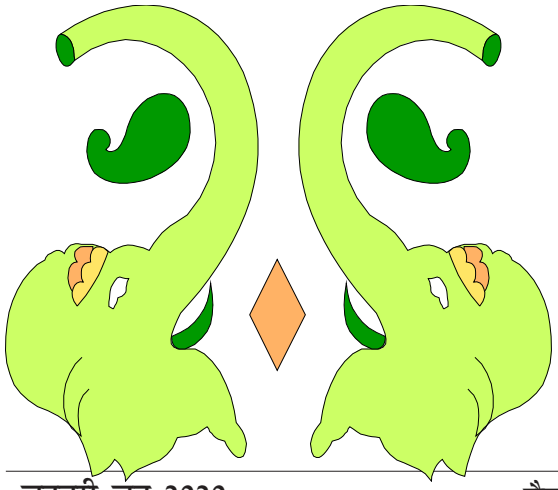

गाजरी फ्रॉक वाली लड़की-रश्मि बड़थ्वाल

हड़बड़ा कर उठ बैठा सुदीप। पता नहीं क्यों? थोड़ी देर पलंग पर बैठा-बैठा सोचता रहा क्यों टूटी इस तरह नींद.... जैसे कुछ खास हुआ हो! कुछ अनोखा, कुछ असामान्य, कुछ असुरक्षित सा। सपना भी तो नहीं था...नींद ही कितनी ली जो सपना आता?

खिड़की की कोर से एक गुच्छा धूप उतर कर उसका माथा सहलाने लगी ... आँखें कुछ चौंधियायीं तब भी अच्छा लगा उसे। किसी और दिन की बात होती तो वह तब तक सोता रहता जब तक कि श्यामा या अम्मा उसे झकझोर कर न जगाती पर आज तो आलस की अनुभूति ही नहीं हुई, हालांकि देह में स्फूर्ति भी नहीं थी।

रात भर बस का सफर किया। तीन बजे घर पहुँचा, अम्मा ने बत्ती जला, चुंधी हुई आँखों से दरवाजा खोला और फिर कुछ ही पलों बाद खर्राटों से अपने कमरे की दीवारें गुंजाने लगीं। उनींदी श्यामा ने आँखें मूंदे-मूंदे हमेशा की तरह उसके जूते के तस्मों की तरफ उंगलियाँ बढ़ाईं और उसने उसका हाथ थाम लिया "रहने दो खुद उतार लूँगा।" श्यामा यंत्रवत् रसोई में चली गयी और वह बाथरूम में।

प्याली तिपायी पर रखते ही बिस्तर पर लुढ़कती श्यामा! यह दृश्य नया था सुदीप के लिए। बेचारी! मजबूर है पतिभक्ति प्रदर्शन के लिए। अपने ही दिल से मजबूर! वरना मैं कब कहता हूँ कि आते ही चाय पिलाओ या मेरे लिए इस तरह रात-आधी रात तक जगो। अपना तो काम ही ऐसा है नगर-नगर, डगर-डगर घूमना। न घर से निकलने का समय एक सा, न लौटने का ही। ऐसी स्थिति में कोई आदत या लत पालना अपने लिए असुविधाजनक है और दूसरों के लिए कष्टप्रद भी तो है, फिर भला सुदीप क्यों चाहने लगा कि बेचारी श्यामा! दया के छींटों के साथ फिर हँसी की बौछार छूटी। भले ही सुदीप ने उसे स्वरहीन बनाने प्रयास किया लेकिन आखिर कितना करता?

श्यामा ने एक आँख थोड़ी सी खोल कर उसे देखा और बुदबुदायी 'सो जाओ' और सुदीप दो मिनट के अन्दर सचमुच सो गया। न मन पर कोई बोझ था न शरीर को ही ऐसी कोई परेशानी थी....फिर वह यों हड़बड़ा कर क्यों उठा?

घड़ी देखी, अढ़ाई घंटा सोया था वह। न सपने का आभास हुआ, न किसी खटके का। अम्मा के कमरे में अब

भी हल्के-हल्के खर्राटे रह-रह कर गूंज रहे थे।

सुदीप उठा और लॉन में टहलने लगा। नर्म मखमली दूब तलवे सहलाने लगी। वह बैठ गया और हथेलियाँ फेर-फेर कर दूब का ऋण ब्याज सहित चुकाता रहा। हल्की हवा के मीठे-मीठे झोंके उसे सुखद अनुभूतियों से भरने का प्रयास कर रहे थे। फूलों को आश्चर्य हो रहा था कि यह सुदीप आज कैसा अनमना सा लग रहा है। फूल सोचते रहे थे आज यह औढरदानी अपना सारा-का-सारा प्यार दूब को ही लुटाये दे रहा है, इसने हमारी सुधि भी नहीं ली।

सुदीप यों उठा जैसे फूलों की बात सुन ली हो उसने। कुछ पलों बाद ही वह हजारे के फूलों को सींचते हुए सीटी की मधुर धुन भी सुनाने लगा। कलियों की नींद टूटने लगी।

श्यामा चाय लेकर लॉन में आ गयी। वे हमेशा ही सुबह की चाय लॉन में पीते हैं। फूलों ने देखा कि उनका सुदीप तो कुछ ठीक-ठाक सा हो चला है पर श्यामा न जाने मन-ही-मन क्या गुन-बुन रही है।

"मेरी डाक आयी इस बीच?" सुदीप ने पूछा।

"एक पत्रिका, दो पोस्टकार्ड। दराज में हैं।"

"अम्मा को खाँसी तो नहीं उठी किसी दिन?"

"नहीं।"

"तुम बोर तो नहीं हुईं?"

"नहीं।"

"हमारे किसी साले-साली का फोन आया?"

"नहीं।"

"तुम भी घर नहीं गयीं?"

"नहीं।"

"अम्मा के अकेले होने के कारण या मन ही नहीं हुआ?"

"दोनों बातें थीं।"

"तुम बहुत चुप-चुप हो!"

"नहीं तो।"

फूलों ने देखा कि सुदीप ने बहुत हौले से, बहुत प्यार से उसके चेहरे को अपने हाथों में भर कर पूछा "कोई खास बात है क्या?"

"नहीं।" श्यामा ने सपाटपन से कहा।

यह फूलों को कतई पसंद नहीं है। खिलने और मुर्झाने के बीच की सारी यात्रा सुगंध और प्यार से सराबोर होनी चाहिए यही फूलों का जीवन-दर्शन है। पहचान लेते हैं फूल लोगों की नीयत, लोगों का व्यवहार, लोगों की कड़वी-मीठी भावनाएँ कि कोई हाथ बढ़ता है बस मृदुल स्पर्श देने और पाने के लिए। प्यार के प्रसार के लिए और कोई हाथ बढ़ता है फूल को खींच कर टहनी से अलग कर देने के लिए, असमय मरने को मजबूर करने के लिए। फूल जानते हैं कि सुदीप के हाथ पहली श्रेणी के हाथ हैं। जिन्हें पास आते देखकर फूल उल्लसित होते हैं और अगर वे चल पाते तो दौड़ कर सुदीप के गले लग जाते और अगर वे चूम पाते तो सुदीप की नर्म उंगलियों को सौ-सौ बार चूम लेते। हाँ, श्यामा अलबत्ता सुदीप की तरह नहीं है उसने कई बार बेदर्दी से फूल तोड़ कर बालों में टांके हैं और मुर्झाने पर कचरे की तरह उन्हें कूड़ादान में डाला है। फूल इन बातों से उदास होते हैं और ऐसे लोगों से भयभीत भी। फूल कभी-कभी सोचते हैं कि काश! श्यामा भी सुदीप की तरह हो जाय, कि श्यामा की शिकायत कर दी जाय सुदीप से, कि एक दिन श्यामा को डाँट दिया जाय, कि वह प्यार करना सुदीप से सीख क्यों नहीं लेती।

सुदीप की सीटी से झरता संगीत और हजारे से झरता पानी, फूल दोनों में सराबोर हैं। गोबर, पत्ती, कम्पोस्ट, हड्डी, यूरिया...भांति-भांति की खाद और फिर प्यार की खाद, स्नेह का जल....! फूलों की फौज उसे निहारती वैसे ही बलाएँ लेती है जैसे कोई माँ अपने बच्चे की लेती है और ठीक वैसे ही दुलारती है जैसे एक बेटी अपने बाप को।

परन्तु आज यह फूलों का बेटा और बाप कुछ अनमना सा है। उसे सपना भी नहीं आया फिर भी वह हड़बड़ा कर उठा है ...। यह श्यामा क्यों नहीं उसे अपनी गोद में सुला देती और यह अम्मा घंटा भर से पूजा की घंटी टुन्टुनाये जा रही है, थपकी देकर सुला क्यों नहीं देती बेटे को! यह अम्मा भी अपने आप में एक ही है बस! अपने भगवान जी पर चढ़ाने के लिए रोज हम में से पाँच की बलि चढ़ाएगी। बेटा जन्म देता है, माँ मौत देती है, क्या रिवाज है इस घर का भी! और वह पत्थर का भगवान पाँच फूलों की हत्या करके भी मुस्कराता है। कभी फूल बन कर क्यों नहीं देखता?

फूलों का दिल धड़कता है, फूल झूमते हैं और हवाओं पर खुशबू लुटाते हैं। दिन भर फूल झूमते रहे और रात भर सुबह की प्रतीक्षा करते रहे। सुबह फिर सुदीप के हजारे ने फूलों पर प्यार बरसाया, सीटी के मधुर-मध्यम रस के साथ। फिर श्यामा के साथ लॉन में बैठ कर वह चाय की चुस्कियाँ लेने लगा।

"कल बड़ा अजीब सा सपना आया था।" सुदीप की बात पर फूलों के कान खड़े हो गये।

"कल का सपना आज बताने की क्या जरूरत है?" श्यामा का उपेक्षा से मुँह फेरना फूलों को अच्छा नहीं लगता। सुदीप की दृष्टि फूलों पर है मानो वह उन्हें ही सम्बोधित हो।

"मुझे लगा कि मैं आँखें मूंदे लेटा हूँ, शायद अधनींद में,

कि लगा एक छोटी सी लड़की बड़ी ही प्यारी मासूम सी गाजरी फ्रॉक पहने मेरे पास खड़ी है। आँखों से आँसू टपक रहे हैं, मुँह से कुछ बोलती नहीं है। मैं जैसे ही पूछने को होता हूँ कि क्या बात है बेटा, बोलो तो क्यों रो रही हो, कि एकाएक मेरी आँख खुल गयी। बस इतना सा देखा, इसे सपना भी क्या कहें पर लगता है सपना नहीं, सच में ऐसा हुआ।"

श्यामा एकटक देख रही थी सुदीप को और फूल साँस रोके सुन रहे थे सुदीप की बात, तभी अम्मा बड़बड़ाती हुई आकर वहीं बैठ गयी। खीझ और गुस्सा तो यूँ भी उनके आजू-बाजू हैं, आज तो अपनी टांगों के दर्द को लेकर बेटे-बहू पर सुबह सवेरे ही बरसने लगीं "तुम्हें क्या! जाये अम्मा भाड़ में। ये टांगों का दर्द मेरी जान लेगा एक दिन।"

"अरे अम्मा, टांगों के दर्द से कोई नहीं मरा आज तक। समय पर दवा खाती नहीं हो, डॉक्टर की बात मानती नहीं हो और फिर बेचारी टांगों को कोसती रहती हो!" सुदीप अम्मा को लाड़ से मना लेना चाहता है लेकिन अम्मा टस से मस हो जाय तो फिर अम्मा कैसी!

"टांगों को कौन कोस रहा है? मैं तो तुम दोनों को कोस रही हूँ, जिन्हें मेरी टांगों की परवाह ही नहीं है। एक ये महारानी हैं...." अम्मा श्यामा को घूर कर शायद अपनी बात को वजनी बनाना चाहती थीं पर श्यामा तो 'हुंह' करके अंदर चली गयी। अम्मा की बात अधूरी रह गयी।

"लाओ अम्मा, तुम्हारे दर्द की पिटाई करूँ?" सुदीप अम्मा के पैर दबाने लगा। अम्मा को सचमुच बड़ा सुख मिला। इतना कि वे थोड़ा सरक-भचक कर कुहनियों पर काया का बल डालते हुए हरी घास पर लेट गयीं। सुदीप तल्लीन होकर अम्मा के पैर दबाता रहा और वे खर्राटे भरने लगीं। खर्राटे शायद और भी दीर्घजीवी होते अगर श्यामा अन्दर से न चिल्लाती "अम्मा के लाडले को आज काम पर नहीं जाना है क्या?"

सुदीप काम पर चला गया, अम्मा पूजाघर में और श्यामा अपनी काली शॉल की बुनाई में उलझ गयी। फूल एक-दूसरे से पूछते रहे कि वह आँसू टपकाती गाजरी फ्रॉक वाली लड़की कौन थी, लेकिन उत्तर किसी के पास भी नहीं था। वे अपने उन सभी साथियों को याद करते रहे जो अम्मा की पूजा की थाली में रोज ढेर हो जाते थे, जो श्यामा के गजरे की शूली पर चढ़ाये जाते थे। शायद वे ही फूल मिलकर गाजरी फ्रॉक वाली लड़की बन गये और अपना दुखड़ा रोने लगे, अपने जीवन का हिसाब माँगने लगे सुदीप से क्योंकि बस एक सुदीप ही तो है जो उन मूकों की भाषा समझ सकता है। शायद ऐसा ही है....शायद ऐसा ही...। फूलों के मंथन से यही निष्कर्ष निकला।

अगली सुबह लॉन में बैठी श्यामा के चाय के घूँट बहुत छोटे थे जैसे कि चाय उसके गले में ही न उतर रही हो, जबकि सुदीप सुर्ख गुलाबों की आँखों में आँखें डाल कर चाय के घूँट जीवन के रस की तरह पी रहा था।

"सुनो, तुम कह रहे थे कल कि तुमने सपना देखा था.."

"वो तो परसों देखा था।"

"पर देखा तो था।" श्यामा की रुआंसी आवाज पर सुदीप ही नहीं फूल भी चौंके।

"हाँ, लेकिन आज तुम्हें उसकी याद कैसे आ गयी? और फिर ये अदा! ...जाके आईने में देखें जनाब, आप बिल्कुल मीना कुमारी लग रही हैं, ट्रेजेडी क्वीन!"

सुदीप की हँसी पर श्यामा का रोना! फूल स्तंभित। सुदीप हैरान।

"क्या हुआ श्यामा? क्या हो गया?" व्यग्र-बेचैन सुदीप ने कप एक ओर रख कर श्यामा को बाहों में घेर लिया।

"अभी कुछ नहीं हुआ लेकिन होगा, होने जा रहा है....।"

श्यामा की बात अधूरी रह गयी। भागता हुआ चोखेलाल चपरासी सामने आकर अपनी साँसों को सम लाने के प्रयास कर रहा था। श्यामा को छोड़ सुदीप उठ खड़ा हुआ "क्या हुआ चोखे? तुम इतने घबराये क्यों हो?"

"साब, गोदाम में आग लग गयी।"

"कब?" सुदीप की आँखें फैलीं।

"कल रात।"

"फिर?"

"फायर ब्रिगेड आयी। आग पर काबू तो हुआ पर नुकसान काफी हो गया। आपको बड़े साब ने तुरंत बुलाया है।"

"गेट खोलो, गाड़ी निकालूँ।"

चोखेलाल के गेट खोलते-खोलते यानी पलक झपकते ही सुदीप पैरों में स्लीपर और हाथ में गाड़ी की चाबी लेकर बाहर दौड़ पड़ा। फूलों ने देखा कि सुदीप के कुर्ते-पजामे पर सलवटें और चेहरे पर चिंता की रेखाएँ हैं जो गेट पर खड़ी श्यामा को भी साफ-साफ दिखायी दे रही थीं।

सुबह का गया सुदीप रात पड़े लौटा, थकान और उदासी से लथपथ। देर तक अम्मा और श्यामा को वह गोदाम में हुए नुकसान का ब्यौरा देता रहा। बार-बार उसका कण्ठ अवरुद्ध होता और उसे कुछ क्षण ठहरना पड़ता।

यह प्रसंग कई दिनों तक चर्चा में रहा। लॉन में, ड्रॉइंगरूम में, किचन में और बैडरूम में, यहाँ तक कि अम्मा के खर्राटों और पूजाघर की टुन्टुनाहट के बीच भी सोचों में घुसपैठ कर लेता। अब सुदीप थकान पर नहीं बल्कि थकान सुदीप

पर हावी होने लगी। दुगुने श्रम ने काया से कांति छीन ली, आँखों से रस छीन लिया, होंठों से मुस्कान और सीटी दोनों गायब हो गयीं। फूलों की संख्या घटने लगी और लॉन की हरियाली भी।

पूरे एक महीने बाद सुदीप लॉन में बैठा है। श्यामा भी चाय लेकर उसके पास आ बैठी है। रूखा-सूखा, उदास सा युगल! फूलों को थोड़ी राहत मिली कि आखिर ऐसा समय तो आया कि वे चाय लेकर लॉन में बैठे। पुराने दिन नये सिरे से लौटे तो! बस अब बहार दस्तक देने ही वाली है। फूल मुस्कराये।

"बस आज मैं मुक्त हो जाऊँगी।" कुएँ में गिरी हुई सी श्यामा की आवाज फूलों ने भी सुनी।

"मुक्त? किससे मुक्त हो जाओगी श्यामा?"

"अनचाहे गर्भ से!"

"अरे क्या सचमुच! तुमने मुझे बताया क्यों नहीं?" आधी बात समझ कर श्यामा की ओर हाथ बढ़ाये थे लेकिन तत्क्षण मस्तिष्क में कहे गये शब्द रेडियम लिखित से चमके। "लेकिन यह मुक्त ..., अनचाहा गर्भ....यह तुमने क्यों कहा?" हाथ गिरे, हथेलियाँ हतोत्साहित होकर हरियाली की शरण में चली गयीं।

श्यामा ने अपने घुटनों पर माथा टेक लिया। उसका पूरा चेहरा छिप गया। फूल और सुदीप क्या पढ़ते? इतने कठिन और चुनौतीपूर्ण समय में सुदीप को श्यामा के शब्दों के सहारे की आवश्यकता तड़पाने लगी।

"बताओ न श्यामा! तुम कुछ बोलती क्यों नहीं?"

श्यामा शिला!

"यह कैसी पहेली है? तुम क्या कहना चाहती हो, तुम क्या कह रही हो, मुझे समझाओ।"

श्यामा बुत!

"तुमने अनचाहा गर्भ क्यों कहा? अनचाहा!...पहली खुशी घर में आयी और तुम, ...तुम कुछ बोलती क्यों नहीं?"

श्यामा स्टेच्यू! घुटनों पर माथा टेके स्टेच्यू!

"क्यो-क्यों? क्यों?" सुदीप के झंझोडने से स्टेच्यू फिर श्यामा में रूपांतरित हो गया।

"क्योंकि वह गर्भ लड़की है।" श्यामा ने सुदीप को घूर कर देखा।

"लड़की है? तो? लड़की है तो अनचाहा गर्भ हो गयी? तुम लड़की बन कर नहीं जन्मी थीं?"

"तब विज्ञान ने इतनी प्रगति नहीं की थी।" श्यामा का कटाक्ष सुदीप को और भी तड़पा गया।

"तुमने मुझसे पूछे बिना कैसे निणर्य ले लिया? इतना बड़ा निर्णय! एक तुम ही तो बेटी की माँ बनने नहीं जा रही हो, मैं भी तो बेटी का बाप बन रहा हूँ। मेरी राय तक नहीं मांगी तुमने? खुद ही कैसे..."

"तुम क्या अपनी अम्मा से अलग जाओगे? घर की मालकिन तो वही हैं न!" श्यामा के स्वर में जितनी व्यंग्य की कडुवाहट आयी उतना ही उदासी का फीकापन भी।

"यह निर्णय अम्मा का है?"

"जी हाँ!" कह कर श्यामा ने मुँह फेर लिया। सुदीप बस क्षण भर ही विचारमग्न रहा और फिर लंबे डग भर कर अम्मा के कमरे में चला गया। फूलों के कान खड़े हो गये। अम्मा चिल्ला रही है अंदर।

"बिटिया पैदा करने का क्या फायदा है? लाखों लुटाने का शौक चढ़ा है, कमाये तो अभी हजारों भी नहीं हैं ढंग से! मेहरिया की हौंस होगी पालना झुलाने की। झुलाये-झुलाये जब बेटा हो तब झुलाये। लड़की-कड़की हमें नहीं चाहिए!"

हमेशा से माँ का दुलारा सुदीप, माँ को फूलों की पंखुडियों सा संभालने वाला सुदीप, माँ के एक चीज मांगने पर दस ला देने वाला सुदीप, घंटों माँ के पैर दबाने वाला सुदीप एकाएक इस्पात से सख्त, मजबूत और ठंडे लहजे में बोला "यह गलतफहमी तुम्हें कैसे हो गयी अम्मा कि मैं बच्चे पैदा भी तुम्हीं से पूछकर करूँगा! मेरी बेटी को दुनिया में आने से पहले ही मिटा देने की बात तुमने सोच भी कैसे ली? कान खोल कर सुन लो तुम, अब ऐसा सपना भी न देखना, वरना बहुत बुरा होगा!"

"बुरा होगा? किसका बुरा होगा? कौन करेगा बुरा? तू बुरा करेगा? मेरा बुरा करेगा? क्या करेगा बोल, क्या कर लेगा मेरा?" अम्मा की चुनौती भरी दंभी-बहशी आवाज को फूलों ने सुना तो श्यामा की तरह उनके भी दिल में हौल उठने लगी। साँसें अपनी सहज गति भूली सी आती-जाती थरथराने लगीं।

"मैं तुम्हें गाँव छोड़ आऊँगा। हमेशा-हमेशा के लिए।"

सुदीप के ठंडे धारदार उत्तर के बाद अम्मा की बोलती बंद हो गयी।

फूलों ने राहत की साँस ली और देखा कि श्यामा की पलकों पर गाजरी फ्रॉक पहने प्यारी-सी, नन्हीं-सी, गोलमटोल लड़की अपने आँसू भरे गाल सुखाने लगी थी।

फूलों ने इतना खुश, इतना आनंदमग्न खुद को पहले कभी नहीं पाया था।

-21, नील विहार, निकट से.14,
इंदिरा नगर लखनऊ-16
दूरभाष- 8787293067

राहों के दिए आँखों में लिये

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

सन् 1984, कटनी से लगा हुआ पहाड़ी गाँव, स्टेशन का नाम 'निवार' जहाँ मेरी पोस्टिंग थी। शिक्षा विभाग, प्राथमिक कन्या शाला में। शाला बस्ती के बिल्कुल अंतिम छोर पर थी। मेरी उम्र अभी 30 के भीतर ही थी। नई नौकरी, नई उमंग, नया उत्साह। एक ही पैसिंजर ट्रेन थी, जो निवार रुकती थी। वह भी प्रातः 4 बजे पकड़ना पड़ती थी, जिसके लिए 3 बजे रात्रि से उठना पड़ता था। तब कहीं, घर की व्यवस्था बनाकर ट्रेन पकड़ पाती थी। ट्रेन आधे घंटे में ही पहुँचा देती थी निवार और विद्यालय लगता था साढ़े दस बजे से। हालाँकि, ट्रेन अक्सर लेट ही रहती थी। विद्यालय पहुँचने के लिए स्टेशन से पगडण्डी के रास्ते करीब दो कि. मी. चलना पड़ता था। स्टेशन पर ही मिल जाते थे मिडिल स्कूल हेडमास्टर, अमकुही वाले राजाराम तिवारी। हम दोनों जने बातचीत करते पहुँच जाते थे अपने-अपने गंतव्य पर। किन्तु, मुझे अपना काफी समय बिताना पड़ता था, तब कहीं साढ़े दस बज पाते थे। कभी बस्ती में किसी शिक्षक के घर या फिर विद्यालय के पास पेड़ के नीचे या फिर स्टेशन में लगे गुलमोहर के नीचे। इस तरह प्रकृति से बतियाते गुजर जाता था वक्त। कभी-कभी तिवारी गुरु जी न आते तो, अकेले ही पगडण्डी तय करना पड़ती। विद्यालय में बालिकाएँ भी मेरी चहेती बन गई थीं। उनकी मृदु मुस्कान मन को तरोताजा बनाये रखती।

एक दिन ट्रेन से उतरकर अकेली ही चली जा रही थी, पगडण्डी पर। तभी आवाज आई, 'लुक जा रे, मैडम जी आ रही हैं।' मैं थोड़ा रुकी, आम के पेड़ों की टहनियाँ हिलीं। मैंने देखा, टहनियों पर बैठे पत्तों के पीछे छिपे हैं बच्चे। मैं मुस्कुराई। बच्चों ने मुस्कुराते देखा तो, वे धम्म से नीचे कूदे यदि मैं आँख तरेर कर डांटती, तो शायद वे छिपे ही रहते।

''मैडम जी, नबस्ते।''

''नबस्ते नहीं , नमस्ते कहो ।''

वे हँसते हुए दोनों हाथ जोड़कर बोले - नमस्ते।

''तुम्हारा नाम क्या है?''

एक ने अपने हाथों से टायर का चक्का और डंडा फेंककर दोनों हाथों से पेंट ऊपर चढ़ाकर कहा - ''विभु।''

और तुम्हारा ?

दूसरे ने नीचे बह आई नाक सुड़कते हुए कहा-''रिजु ।''

''वाह ! विभु और रिजु, तुम लोगों का नाम तो बहुत प्यारा है।''

दोनों के बाल बिखरे और गाल मैले थे। अभी विद्यालयीन समय के लिए मुझे दो घंटे बिताना थे सो, मैंने वहीं पेड़ के नीचे बैठते हुए कहा -

''भाई विभु और रिजु , तुम्हें कहीं जाना तो नहीं है?''

''नहीं।''

''अच्छा, तो अभी क्या करोगे?''

''चक्का चलाएंगे, आप देखेंगी?''

''हाँ , बिल्कुल देखूँगी, देखो कौन जीतता है।''

विभु बोला - ''दुई मिनट में यहाँ से वहाँ तक रगेद मारूँगा। ये रिजु तो फिसड्डी है।''

''अच्छा, तो आज रेस हो जाय।''

दोनों ने नीचे खिसक आये मैले-कुचैले पेंट ऊपर खिसकाए, नाक सुड़की और तेजी से चक्का चलाते हुए भागे। जब तक वे लौटे, मैं उनके भागते कदमों को देखती, पुलकती रही बचपन को महसूस करते हुए। वे लौटे तो, विभु वाकई प्रथम आया था। वे हाँफते हुए हँस रहे थे। यही कोई पाँच-सात बरस के बच्चे थे वे। मैंने उन्हें बिस्कुट खाने को दिए। उनकी आँखों के दिए बहुत रौशन थे। मैं उनकी खिलखिलाहट और दियों की जगमगाती रौशनी में नहाती रही देर तक। एक-दो कहानियाँ हुईं, एक-दो कविता। उन दोस्तों से मेरी दोस्ती प्रगाढ़ हो चली थी। मेरे विद्यालय का वक्त हो गया था। मैंने उनसे नहीं कहा कि विद्यालय चलो। डर था, कहीं वे दूसरे दिन से दिखाई ही न दें। मैंने सोचा, थोड़ा उन्हें रम जाने दें।

विद्यालय में कन्याएँ मेरी प्रतीक्षा में रहतीं। प्रार्थना 'जन गण मन .....' कराने के उपरांत मैंने 'ईश विनय....' सिखाने का प्रयास किया था। वह बालिकाओं को बहुत अच्छी लगी 'वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जाएँ, कर सेवा पर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जावें।'

बच्चों ने शीघ्र ही ईश विनय याद कर ली थी। भक्तिभाव से हाथ जोड़कर, नेत्र बंद कर बालिकाएँ विनय करतीं। कुछ नटखट बच्चे एक आँख खोल कर देख भी लेते थे। शाला की प्रधानाध्यापक अंगूरी जैन भी बहुत खुश हुई थीं। विद्यालय से घर आने के लिए एक ही आखिरी बस मिलती थी साढ़े चार बजे। उसके बाद कोई साधन न था, वापस

आने के लिए। मैं उसी आखिरी बस से घर आ जाती थी। घर में भी नन्हीं-मुन्नी बालिकाएँ और विभु-रिजु याद आते।

दूसरे दिन तिवारी जी मेरे साथ थे, स्टेशन पर। ठण्ड कड़ाके की थी। वे नंग-धडंग से बिखरे बाल वाले विभु रिजु पेड़ पर लटके थे, जैसे ऊपर चढ़कर सूरज को आवाज दे रहे हों और सूरज ने उनकी सुन भी ली। सुनहरी किरणें पत्तों से झाँकने लगीं, उनके चेहरों पर सुनहरी रंगत बिखेरते हुए। मैंने उन्हें आवाज दी पर वे नहीं उतरे, बल्कि गुरु जी को देखकर और छिप गए। इस तरह मिलते रहे विभु रिजु। एक दिन मैं फिर अकेली थी तो किलकारी भरते विभु रिजु चक्का हांकते आ गए, ''मैडम जी। बैठो न अमरैया में।''

''ठीक है, पहिले तो तुम दोनों अच्छे से मुँह-हाथ धोकर, नाक साफ करके आओ।''

पास ही तालाब था, वे गए और आ गए धुले-धुले, पानी चुचवाते। मैंने पर्स में रखा नेपकिन निकालकर दिया, ''लो अच्छे से पोंछकर इसे रख लो। उन की खिलखिलाती आँखों के दीपक झिलमिलाने लगे।

''कौन-कौन है तुम्हारे घर में?''

विभु ने बताया, ''ये रिजु है। मेरा छोटा भाई, बाबा हैं घर पर लेकिन, तबियत खराब रहती है। माँ तो चली गई भगवान के घर।'' वे रुआंसे हो गए।

''बाबा क्या करते हैं?''

''कुम्हार हैं, दीवाली आ रही है, दिया बनाएंगे। पर अब कोई खरीदते ही नहीं, बहुत कम बिकते हैं। मटका भी कम ही बिकते हैं।''

उनकी आँखों के दिये बुझे-बुझे लगने लगे। मुझे अपने पर कोफ्त हुई कि मैंने यह सब क्यों पूछ लिया। खैर, जानना भी जरूरी था, ''स्कूल जाओगे?''

''कभी नहीं।''

''क्यों?''

''बड़े गुरु जी का डंडा देखा है आपने? एक दिन राजेश को मारा था और झापड़ भी मारा था, उसकी चमड़ी उधड़ गई थी तो उसकी माँ ने मूड़ में हाथ फेरकर प्यार किया था।'' वह चुप हो गया था, ''हमारे तो माँ भी नहीं है, कौन चुपायेगा?''

मैं पढ़ रही थी उनके चेहरे पर आते-जाते भाव को। मैंने ठंडी साँस भरी, ''अच्छा! अब स्कूल में कोई नहीं मारेगा तुम्हें। सरकार ने मार-पिटाई बंद करवा दी है।''

''फिर भी हम न जायेंगे। चक्का चलाएंगे और चलाते-चलाते बड़े हो जायेंगे।''

''अच्छा कोई बात नहीं। चलो कुछ खेलते हैं।'' आज ट्रेन आठ बजे ही आ गई थी। अभी ढाई घंटे गुजारने थे मुझे। मैंने कहा-कुछ कंकड़ बटोर कर लाओ। वे ढेर सारे कंकड़ लेकर आ गए, ''चलो गिनते हैं।'' मैंने तीन ढेरी बनाईं, ''किसके पास कितने कंकड़ हैं? सरकाते चलो।''

वे गिन रहे थे। जहाँ भूल रहे थे मैं सुधार कर रही थी। इस तरह कुछ ही दिनों में वे सौ तक गिनती सीख गए। ढेरी बनाकर दो से दस तक के पहाड़े उन्हें याद हो गए। अब विभु और रिजु अपने बाबा से कहकर आते, 'हम स्कूल जा रहे हैं' और उन दो बच्चों का विद्यालय अमरैया के नीचे लगता, जिसका समय हमारी ट्रेन के पहुँचने के अनुसार संचालित था। कभी गिनती के गीत, जोड़-घटाने के गीत और कभी पहेलियाँ भी। मुझे स्वयं आश्चर्य था कि ये चक्का चलाने वाले नाक सुड़कू बच्चे इतनी जल्दी कैसे सीख गए? किन्तु लिखना तो उन्हें कुछ भी न आता था। वे उत्सुक थे लिखने के लिए। बस फिर क्या था, पेड़ के नीचे की मिट्टी साफ-सुथरी कर हाथ से बच्चों ने समतल कर ली। मैंने पतली सींक से ककहरा लिखना शुरू किया, पर वे दोनों बोले, ''नहीं , मैं सबसे पहिले माँ लिखूँगा।''

''माँ क्यों, बाबा क्यों नहीं?''

''वे तो हैं न पास में, माँ नहीं है इसलिए पहिले माँ लिखूँगा, फिर माँ को पुकारूँगा। बाबा कहते हैं, 'सच्चे मन से पुकारोगे तो, माँ किसी न किसी रूप में आएगी।' इसलिए हम लोग माँ को बुलाते भी हैं।''

''अच्छा! कैसे बुलाते हैं?''

वे दौड़कर अलग-अलग पेड़ के पीछे छिप गए और माँ. .... कहकर पुकारने लगे। हृदय को चीर देने वाला आर्तस्वर हर दिशा में गूंज गया। देर तक गूँजता रहा वह आर्तनाद। वे माँ को पुकारकर लौटे तो उनके चेहरे पर ऐसी आभा खिली थी जैसे पूजा करके लौटे हों। मैंने प्यार से उनके सिर पर हाथ फेरकर सीने से चिपका लिया। ऐसा आर्तनाद सुनकर तो पत्थर भी पिघल जाए, फिर मैं तो माँ थी ना! अभी आधा घंटा शेष था मुझे विद्यालय जाने में। मिट्टी की पीठ पर उकेरे जाने लगे अक्षर। मिट्टी को भला क्या एतराज हो सकता था, वह खुश थी। बच्चे मिट्टी से जुड़े सीख रहे थे माँ, बाबा, ककहरा....और पेड़-पौधों के सानिध्य में पर्यावरण विज्ञान सब कुछ मजे-मजे में। मैंने मन में सोचा, एक दिन वे सीख ही जायेंगे जीवन का ककहरा भी।

दो वर्ष तक मुझे गाँव में ही रहना था, उसके बाद ही सरकारी नियम के अनुसार स्थानांतरण हो सकता था।

राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक त्यौहार आते-जाते रहे। विभु रिजु सीखते रहे, जानते रहे, समझते रहे उन सब के बारे में। सीखते रहे, राम, कृष्ण, गाँधी के जीवन की बातें और इतना ही सब सीखती रहीं स्कूल की लड़कियाँ भी। एक वर्ष गुजरने वाला था। एक दिन स्टेशन पर मन हुआ, गुलमोहर के नीचे ही बैठूँ, उसी से बतयाऊँ, लेकिन ये खिलंदड़े बालक भी अब मुझे गुलमोहर जैसे ही लगने लगे थे। मेरे न पहुँचने पर वे बहुत शिकायत करते। उस रोज जब पहुँची अमराई में तो चक्के एक तरफ रखे थे और वे दोनों गीत गा रहे थे,

''नन्हा-मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ
बोलो मेरे संग जयहिंद जयहिंद जयहिंद .....
आगे ही आगे बढ़ाऊँगा कदम।
दायें बायें दायें बायें हम ....

मैंने जोरदार शाबाशी देते हुए ताली बजाई - ''वाह! तुम दोनों तो बहुत बढ़िया गाते हो।''

वे झेंपते हुए बोले-''आज फिर इतनी देर से क्यों आईं?''

उनकी ठुनक सचमुच नन्हें-मुन्नों की ठुनक थी। मैंने दायें-बायें उन्हें बताया। पूरब-पश्चिम भी बताया। सावधान, विश्राम भी करवाया और कहा, चलो ''राष्ट्रगान करते हैं। अब उनके चेहरों से उल्लास टपक रहा था -

'जन गण मन अधिनायक जय हे ...' वे शीघ्र ही सीख गए, प्रतिदिन के अभ्यास से। अब वे धरती की पीठ पर लिखने लगे थे, अपना नाम। कभी-कभी पेड़ों पर भी वे अपने नाम के साथ माँ लिखते। एक दिन तो लड़ियाते हुए कहने लगे, ''माँ आपके जैसी ही होती होगी ना?''

पढ़ते-लिखते वे मुझे मैडम की जगह माँ ही कह जाते। उस वक्त मेरा मन माँ गंगा में उठती पावन लहरों से जैसे भीग जाता और भीगा रहता देर तक। वे अब नाक नहीं बहाते थे। साफ-सुथरे, नहा-धोकर आते थे। चक्का, डंडा, पेड़, तालाब उनके खेल संगाती थे।

दो वर्ष बीतते समय न लगा। इस वर्ष वे दोनों विद्यालय जाने के लिए तैयार थे। उनके भीतर का डर खतम हो चुका था। दीवाली का त्यौहार लगभग पास ही था। गाँव से सब शहर जाते थे दिये बेचने। विभु-रिजु के बाबा ने भी दिये बनाये थे। उन्होंने ने कहा, ''आप हमारे घर नहीं चलेंगी?'' मैंने सोचा, ट्रांसफर भी होने वाला है , इतने दिनों में इनके बाबा कभी मिलने भी नहीं आये। अभी समय है, चलो मिल लेते हैं।

आगे-आगे दोनों भाई उमंग से दाएं-बाएं करते हुए चल रहे थे और मैं उनके पीछ-पीछे चल पड़ी। बाहर से ही आवाज लगाई उन खिलंदड़ों ने, ''बाबा, देखो कौन आया है।'' बाबा का स्वर गों गों गों जैसा सुनाई दिया। मैंने अंदर जाकर देखा, तो कुछ देर स्तब्ध खड़ी रह गई। कुम्हार का चाक चल रहा था। दियों का ढेर लगा हुआ था किन्तु, दोनों पैरों से लकवाग्रस्त, अपाहिज, मुँह से बोलने में लाचार बाबा। मेरे भीतर ही भीतर रुदन फूट पड़ा - हे ईश्वर, तूने ये क्या दर्द दिया। ऐसे ही हालात को देखकर शायद कवि प्रदीप ने ये पंक्तियाँ लिखी होंगीं

''हमने जग की अजब तस्वीर देखी
इक हँसता है दस रोते हैं ''

विभु-रिजु ने खटिया सरका दी मेरे बैठने के लिए। बाबा के दोनों मिट्टी सने हाथ नमस्कार में जुड़ गए। आँखों से बहती अविरल धारा के साथ क्या-क्या बह रहा होगा? दुःख, विषाद, मजबूरी, नेह, मान-सम्मान! वह धारा दियों में गिर रही थी टप टप टप ...। मैं जाने लगी, मेरे हाथ भी जुड़ गए। विदा लेते हुए मेरे मुँह से बोल न फूट रहे थे। क्या बोलती? सहानुभूति की भाषा मौन भी हो सकती है।

एक सप्ताह के बाद मेरे ट्रांसफर का आदेश आ गया। छात्राओं के हाथों में गुलाब के फूल थे और आँखों में उदासी। मेरा मन हर्ष-विषाद के हिचकोले खा रहा था। मैं चल पड़ी, साथ में चल पड़ा यादों का काफिला। रास्ते में दोनों भाई दियों से भरा टोकना लिए खड़े थे। मैंने सोचा, गाँव में कौन कितने दीये खरीदेगा? मैं उस रोज भी पेड़ के नीचे बैठ गई। मैंने उनसे कहा, ''गिनना तो जरा सौ दिये।'' विभु ने दस-दस की ढेरी बनाते हुए पढ़ दिया पूरा दस का पहाड़ा। दोनों बोले - ''दस दहाम सौ।''

''शाबास! ये लो सौ दिये के दाम और ये दिये थैले में भरकर मुझे दे दो।''

वे एक फट्टी का थैला ले आये और भर दिए दीक्षा में दिये। मैं थैला हाथ में लिए चल तो रही थी किन्तु हृदय फूट-फूटकर रो रहा था। ''विभु रिजु, तुम रोज स्कूल जाना, एक दिन पढ़-लिख कर जब बड़े हो जाओ, तो आना बेटे मिलने। बच्चों ने आँसू पोंछते हुए पल्लू पकड़कर ''माँ'' कहा था। अनायास गुलजार की पंक्तियाँ बींधने लगीं मुझे -

राहों के दिये आँखों में लिए बढ़ता चल ....

दुबे कालोनी, कटनी 483501 म. प्र.
मोबा - 9584415174

सुम्मी दीदी का पत्र अनु के नाम

-राजेन्द्र स्वर्णकार

प्रिय अनुज! कहो, कैसे हो?

मैं यहाँ अच्छी तरह से हूँ, कोई परेशानी नहीं। घर परिवार माहौल नया अवश्य है, लेकिन सभी बहुत अच्छे हैं। हाँ, ससुराल आने के बाद से माँ-बाबूजी बहुत याद आते हैं। .. .और तू भी, बंदर! अरे अरे नाराज न हो मेरे राजा भैया! तुम्हारी याद आने के कई कारण हैं...

यहाँ, तुम्हारे जीजाजी के ऑफिस जाने के बाद दिन भर मेरे साथ अधिक बतियाने बोलने वाला कोई नहीं होता। हमारा छोटा-सा परिवार है। घर में मम्मी पापा हैं वे भी अधिकतर टीवी देखते रहते हैं। ...और, तुम्हारे जीजाजी की चचेरी बहन है छोटी, जो इसी घर में है, ये सुन-बोल नहीं पाती। उसकी माँ का निधन होने के बाद मेरी सासू अम्मा उसे अपने यहाँ ले आई थीं ।

हाँ, हमारे यहाँ एक मिट्ठू पाला हुआ है, जो गुड मॉर्निंग, वेलकम, आदि बोलता है। वह नटखट मेरा नाम भी लेता रहता है - पता है, मैंने उसे पधारो सा, रामराम, जयश्री कृष्ण बोलना सिखा दिया है ।

पिछले दिनों मेरी बड़ी ननद के शैतान बेटा-बेटी के आ जाने से काफी चहल पहल थी। पास के फ्लैट में तुम्हारी ही उम्र के दो तीन बच्चे हैं, जो... बरामदे में प्राय: मोबाइल पर गर्दन झुकाए लगे रहते हैं। शहर में मोबाइल छोटे-छोटे बच्चों के हाथों में कैसे आ गया, सोच सोच कर आश्चर्य होता है।

अनु, मैंने यहाँ आकर अनुभव किया कि शहर में तुम्हारी उम्र के बच्चों की नई पीढ़ी में दौड़-भाग या शारीरिक श्रम वाले खेलों के प्रति अधिक रुचि नहीं।

हरा समंदर-गोपी चंदर, दालघोड़ी, छुप्पाछुप्पी, और कबड्डी के बारे में तो बच्चे शायद जानते भी नहीं होंगे। यहाँ जिन रिश्तेदारों के यहाँ भी मम्मीजी या तुम्हारे जीजाजी के साथ जाना हुआ, सब जगह बच्चे मोबाइल में व्यस्त मिले। बस, मोबाइल ही मोबाइल। अधिक हुआ तो शोर शराबे वाले अजीब-से गानों पर फूहड़ नाच कूद। मुझे उनके हाव-भाव ही भद्दे और अश्लील-से लगते हैं।

हमारे कमरे की पिछली खिड़की से बाहर देखते हैं तो कुछ बड़ी बिल्डिंगें और फ्लैट के साथ बड़ा-सा हरा मैदान दिखाई देता है, जिसे देखना अच्छा लगता है। ...लेकिन साथ ही दूर सड़क पर दौड़ती कारों, बसों, ट्रक, स्कूटर आदि का लगातार शोर बिलकुल नहीं सुहाता।

मुझे शांत वातावरण भाता है। ऐसे में कई बार मुझे अपने मौहल्ले के पास वाले शिवजी के मंदिर की बड़ी याद आती है, जहाँ बचपन में मुझे बाबूजी कई बार ले जाते थे। कितनी शांति होती थी वहाँ ... मंदिर के घंटे की टंकार और पास वाले बाड़े से गौ माता के रंभाने और बछड़े की डूउउ डूउउ की आवाज और पेड़ पौधों की सुगंध के साथ शीतल हवा के बीच चिड़ियों की चहचहाट। मेरे कानों में कई बार उस मंदिर में गूंजने वाले स्वर बम बम महादेव हर हर शम्भो जय शिवशंकर गूँजते-से प्रतीत होते हैं तो जैसे मैं वहीं पहुँच जाती हूँ।

यहाँ कभी कभी रविवार के दिन तुम्हारे जीजू हमारे घर से कोई बीस किलोमीटर दूर अंग्रेजों के मंदिर ले जाते हैं। अरे नहीं रे! वहाँ अंग्रेजों की नहीं कृष्ण-राधा की बहुत सुंदर मूर्तियाँ हैं। मंदिर बहुत अच्छा है। वहाँ मेले जैसी भीड़ होती है। खूब सारा चढ़ावा चढ़ता है, प्रसाद भी अच्छा मिलता है।

हमारे देवी देवताओं के मंदिर अंग्रेजों द्वारा बनवाना और उनका रख रखाव करना भी एक तरह से व्यवसाय जैसा ही लगता है। हमारी आस्थाओं के केंद्र विदेशियों द्वारा संचालित होना मुझे बहुत अटपटा लगता है। लेकिन किया भी क्या जाए!

हम स्वयं आधुनिकता और प्रगति की होड़ में अपने धर्म, अपने संस्कार, अपनी सभ्यता और संस्कृति से कहीं न कहीं दूर होते जा रहे हैं । ऐसा मुझे अपने छोटे-से कस्बे से बड़े शहर में आने के बाद निरंतर प्रतीत होता रहता है। यहाँ बुजुर्ग महिलाओं को भी संध्या वेला में एकत्र होकर भजन गाते इन छह महीनों में नहीं देखा। घरों की बनावट ही शहरों में ऐसी होती है... न घर में बड़ा आंगन, न घर के बाहर चौकियाँ। दस बीस लोग इकट्ठा भी हों तो कहाँ हों? अपने वहाँ तो कभी इस घर, कभी उस घर, किसी की चौकी पर, किसी के आँगन में, कितने मीठे स्वरों में किस किस प्रसंग के भजन शाम के समय गाए जाते थे। सुदामा-कृष्ण और केवट-रामचंद्र जी तथा द्रोपदी के भजन तो सचमुच रुला ही देते थे ।

...और हनुमानजी द्वारा लंका जलाने का भजन कितना मजेदार लगता था। ...हमें भी कितने भजन कंठस्थ हो गए थे। तुम सोने से पहले अब भी गायत्री और महामृत्युंजय मंत्र तो बोलते ही हो ना?

हमारे प्राचीन संस्कृत श्लोकों की ओर तो अब अंग्रेज और चीन आदि दूसरे देशों के लोग भी बहुत रुचि दिखा रहे हैं। तुमने और मैंने तो छोटी उम्र से ही जाना है कि इनका पठन हमारे हृदय में संबल और मन में शांति का संचार करता है।

पिछले सप्ताह तुम्हारे जीजाजी के साथ मॉल गई थी।

बाप रे, कितना बड़ा मार्केट! तीन-तीन मंजिलों पर सैंकड़ों दुकानें! रौशनी से जगमग जैसे दीवाली हो। कौनसी चीज होगी जो वहाँ नहीं मिलती। मेरा तो दिमाग चकरा गया। उससे पिछले रविवार को हम सिनेमा देख कर आए थे। मुझे सब कुछ सपने जैसा लगता है। तुम्हें बता नहीं सकूँगी शहर में कितनी रौनक कितनी भीड़ होती है। तुम्हें बुलाऊँगी यहाँ सब कुछ दिखाने को ।

बातें बहुत हैं, लेकिन अब उनके ऑफिस से आने का समय हो रहा है । उनके आते ही मिट्ठू पधारो सा पधारो सा की रट लगा देगा। तब मैं सबके लिए चाय, फिर खाना बनाऊँगी। तब तक वे मोबाइल देखेंगे, आई हुई चिट्ठियाँ और पत्रिकाएँ सम्हालेंगे, छोटी (वही चचेरी बहन) को देखेंगे-सहलाएंगे-बातें करेंगे या पापा मम्मी से गपशप करेंगे।

खाना तैयार होते ही पापा-मम्मी को परोस कर देने के बाद हम भी बैठ जाएँगे खाना खाने। थोड़ी देर टीवी पर समाचार और अन्य कार्यक्रम..... और तब सोने की तैयारी. ..बस बस अब अधिक नहीं लिखूँगी ।

माँ बाबूजी को मेरी ओर से चरणस्पर्श प्रणाम कहना मत भूलना...पत्र लिखना, पिछली बार साढ़े सत्रह पंक्तियों की चिट्ठी में मात्राओं की सात गलतियाँ थीं... देखती हूँ इस बार कितनी करते हो।

पढ़ाई अच्छे से कर रहे हो न? इस बार बोर्ड की परीक्षाएँ हैं तुम्हारी। मन लगा कर पढ़ना और प्रथम तो तुम आओगे ही, मुझे विश्वास है।

और सुन-सुन! मैंने खाली समय में अपनी ग्वाड़ की रामी काकी बंशी बाई जस्सु बुआ और मंछा ताई को साक्षर करने का जो बीड़ा उठाया था, तुम्हारे इम्तिहान समाप्त होते ही वह काम अब तुम्हें संभालना है। तुम्हारे लिए कठिन नहीं होगा यह, मदद तो करते ही थे तुम मेरी इस काम में। बोलो, करोगे न दीदी का यह काम? लो, तुम्हारे जीजाजी के स्कूटर की आवाज आ गई...

बंद करती हूँ, पत्र मिलने पर जवाब लिखना। माँ-बाबू जी को प्रणाम कहना मेरा। बहुत बहुत स्नेह एवं मंगलकामनाओं के साथ...

तुम्हारी ही सुम्मी दीदी

-पुत्र-स्वर्गीय श्री शंकरलाल जी
गिराणी सोनार मौहल्ला,
बीकानेर-01
मोबाइल -9314682626
ईमेल: swarnkarrajendra1@gmail-com

एक अनोखा रिश्ता

-डॉ. विमला व्यास

हम कुछ मित्र कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में ठहरे हुए थे। उस शाम हम लोग अपने कमरे में बैठकर आपस में गप-शप कर रहे थे। बातचीत करते-करते हम सब अपने बचपन की यादों में खो गए।

बात वर्षों पुरानी है, जब हम अपने गृहनगर चित्रकूट में मित्रों के साथ मिलकर एक बेहद दिलचस्प खेल खेला करते थे। जिसका नाम था 'खेल लुका छुपी'...

बचपन के ख़्यालों में गुम हो गया हमारा बावरा मन, पहुँच गया था हमारी जन्मभूमि चित्रकूट। कामद गिरि पर्वत की रमणीक खूबसूरत वादियों में, जहाँ प्रभु श्रीराम ने माता सीता के साथ वनवास के 12 वर्ष बिताए थे। भला वहाँ पहुँचकर कोई वापिस आ सकता है क्या..? लेकिन उसे वापिस तो आना ही होगा....

तो आइये! हम ले चलते हैं आपको वापिस कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में। अपने चारों मित्रों के पास, जिन्हें हम प्यार से 'दर्द, झूठ, प्रेम और ईर्ष्या' कहकर पुकारते हैं।

अरे आप चौंकिये नहीं, ये इनके असली नाम नही हैं, बल्कि चालू नाम हैं, जिन्हें हमने बड़े दुलार से इनके भाव भाषा आचार व्यवहार जैसे गुणों के आधार पर रखते हैं। आपस में बातचीत के दौरान हमने तय किया कि चलो बाहर लॉन में चलकर कुछ बचपन की यादों को फिर से ताज़ा करते हैं। चलो खेलते हैं 'खेल लुका छुपी' का...एक बार फिर से। फिर क्या था..बस पलक झपकते ही खेल शुरू हो गया, गिनती भी आरम्भ हो गयी।

सबसे पहले 'दर्द' ने गिनती गिनना शुरू किया..प्रेम, झूठ और ईर्ष्या झट से भागकर छुप गए ! झूठ पेड़ के पीछे छुपा, प्रेम' गुलाब की झाड़ियो के पीछे और ईर्ष्या' वहीं चारदीवारी के पीछे छुप गई।

फिर 'दर्द' ने एक-एक करके सबको खोजना आरम्भ किया, ढूँढ़ते-ढूँढ़ते सब पकड़े गए सिवाय प्रेम के।

इसी बीच ईर्ष्या ने दर्द के कान में धीरे से कुछ बुदबुदाया और बोला कि उधर देखो! वो प्रेम तो गुलाब की झाड़ियों के पीछे छुपा है। इतना सुनते ही 'दर्द' दौड़ कर गया और

'प्रेम' को गुलाब की झाड़ियों के पीछे से खींचकर एक झटके में बाहर निकाल लिया।

जिसकी वजह से अनजाने ही एक दुर्घटना घट गई। गुलाब के कांटे चुभ गए प्रेम की आँखों में और उसकी आँखों से खून बहने लगा। प्रेम असहनीय वेदना से जोर जोर रोने लगा। उसको अब कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, यहाँ तक कि हम लोग भी नहीं।

प्रेम की इस हालत को देखकर हम सब बुरी तरह घबरा गए और सोचने लगे कि अब क्या होगा? आनन-फानन में एक ऑटो बुलाया और प्रेम को साथ लेकर दौड़े-दौड़े आँख के हस्पताल पहुँच गए!

डॉक्टर ने प्रेम की आँखों की जाँच करके बताया कि गुलाब के तीखे काँटों से लगी चोट की वजह से प्रेम की आँखों की रौशनी चली गयी है और वो भी हमेशा के लिए। अब कभी वापिस नहीं आएगी।

इतना सुनते ही हमारे होश उड़ गये। हम सब गहरे सदमे में चले गए थे। सोचा अब हम क्या करेंगे..? यह तो प्रेम की ज़िंदगी के साथ घोर अन्याय हो गया था। परन्तु दर्द' की इस नासमझी के कारण ही तो हुआ था यह सब। बेचारे प्रेम के भविष्य को लेकर हम सब गहरी चिंता में डूब गए थे। मन मस्तिष्क में बार-बार बस एक ही प्रश्न सिर उठा रहा था। आख़िर प्रेम अपनी आगे की जीवन यात्रा बिना आँखों के कैसे तय करेगा..?

यही सवाल एक विकट समस्या के रूप में आकर खड़ा हो गया था हम सबके सामने। हमें इसका कोई समाधान नज़र नहीं आ रहा था। इस दु:ख की मुश्किल घड़ी में हमें योगेश्वर श्री कृष्ण की याद आई और इस विकट समस्या के न्यायोचित समाधान की आशा और विश्वास के साथ हम लोग उनके पास ज्योतिसर तीर्थ पहुँच गए।

यह वही पवित्र ऐतिहासिक स्थल है जहाँ पर भगवान श्री कृष्ण ने महाभारत के धर्मयुद्ध के आरम्भ से पूर्व, धनुर्धर अर्जुन को गीता जी का उपदेश दिया था।

हमारी दर्दभरी पुकार सुनकर वो हमारी ओर मुखातिब हुए और हमेशा की तरह, अपने अधरों पर मधुर मुस्कान लिए हुए बोले..

''बताओ वत्स क्या समस्या है..?''

हमारे चुप रहने पर वे फिर बोले, ''निर्भय होकर कहो.. आप सब इतने घबराए हुए क्यों हो?

हमने हिम्मत करके उनके सामने पूरी घटना बयां कर दी। उन्होंने हमारी सारी बातें बड़े ध्यान से सुनी। प्रभु श्री कृष्ण कुछ देर के लिए मौन हो गए। फिर उन्होंने अपना मौन तोड़ा और 'सत्य', 'धर्म' व 'न्याय' की तराजू में तौलकर, हमें अपना फैसला सुना दिया। उन्होंने 'दर्द' को ही इस दुर्घटना का दोषी करार दिया। क्योंकि 'दर्द' ने यह कार्य बिना सोचे समझे जल्दबाजी में किया था।

श्री कृष्ण ने 'प्रेम' के पक्ष में अपना फैसला सुनाते हुए दर्द को यह आदेश दिया कि तुम्हें सारी ज़िन्दगी प्रेम के साथ ही रहना पड़ेगा। हम यदि प्रश्न करते भी.....तो कैसे और किससे..... ?? कृष्ण तो वहाँ थे ही नहीं। इस अद्‌भुत फैसले को सुनते ही हम सबकी आँखों से अश्रुधार बह निकली।

पता नही, ये अश्क़ ख़ुशी के थे या गम के...

आखिर ये फैसला तो स्वयं करुणानिधान का था।

बस तभी से 'प्रेम' दृष्टिविहीन है और जहाँ भी जाता है सोते-जागते चौबीसो घंटे दर्द उसके साथ होता है।

-HIG-22, Green Colony.
3-Circulor road, Prayagraj-211001

गुनहगार -स्नेह लता नेगी

मैं कब थी गुनहगार?
न जाने कैसे आ गई
इन हँसते खिलखिलाते
दोस्तों के बीच
और मुझे इन गुनहगारों ने
गुनाहगार बना दिया,
खिलती कली को
जब कोई मसलता है
तब
नहीं हँसा जाता मुझ से
गद्दारों और मक्कारों से भरे
इस जहाँ में
सँभल-सँभल के चले थे,
तभी कुछ अच्छे दोस्त मिले
और प्यार का रास्ता
दिखा दिया,
और
मुझे गुनाहगार बना दिया।

लिप्पा हाउस, विकास नगर,
पैट्रोल पम्प, शिमला-9

बूढ़ी माँ -सतीश बब्बा

रात के 8:30 बजे थे कि, इस सर्द रात में चारों तरफ शंख ध्वनि होने लगी थी। आज तिलवा चौथ, गणेश चतुर्थी है। मैं भी खेत से अन्ना पशुओं की रखवाली करके दुलहादीन यादव को तकवा कर घर की ओर चल पड़ा। चंद्र देव निकल आये हैं अब पूजा के बाद औरतें ब्रत तोड़ती हैं, तब मेरा वहाँ रहना जरूरी होगा, फिर खाना खाकर मुझे वापस भी होना था।

अपने घर की ओर जा रहा था कि, मेरे घर के पहले सुमित की माँ का वह घर पड़ता है जो मवेशियों के लिए बिन दरवाजे का था। सुमित की औरत अपनी सास को घर में रखने से नाराज हो रही थी, इसीलिए सुमित ने अपनी माँ को यहीं रखा हुआ है और बच्चों से बचकर जो भी रूखा-सूखा हुआ बूढ़ी माँ को, बच्चे ही दे जाया करते हैं।

मैंने देखा कि, वह बूढ़ी माँ, काँपते हाथों में सकला और तिल सहित सभी सामग्रियों को एक थाली में रखकर चंद्रमा की पूजा कर रही थी।

मैंने कहा, ''यह सामग्री कहाँ पाई हो, अम्मा!''

''अरे बेटवा पहचाना नहीं, यह थाली तुम्हारी और सामान भी वहीं से लाई हूँ और कुछ रमुआ की महतारी ने दे दिया है।''

मैंने कहा, ''क्यों ब्रत करती हो? ऐसी औलाद के लिए!''

उसने डबडबाई आँखों से चंद्र देव की तरफ हाथ जोड़ कर कहा, ''हे चंद्र देव, गणेश महराज! मेरे बेटे को खूब दीर्घायु करना।''

फिर उस बूढ़ी माँ मुझसे कहने लगी, ''अरे बेटा, मैं उसके जैसी क्यों बनूँ? मैं तो माँ हूँ न! मैं अपनी अंतिम साँस तक दुआएं ही दूँगी, वह खाने को दे, चाहे न दे, वह मुझे मार भी डाले तो भी!''

माँ की ममता को देखकर, मेरी भी आँखें नम हो गयीं और मैं उस बूढ़ी माँ के पैर छूकर अपने घर चला आया।

-ग्राम + पोस्टाफिस = कोबरा,
जिला - चित्रकूट, उत्तर प्रदेश,
पिनकोड - 210208.
मोबाइल - 9451048508, 9369255051.
मेल - babbasateesh@gmail-com

जन-आक्रोश -डॉ सतीशराज पुष्करणा

पीकर ट्रक चलाना उसकी आम आदत थी। अपनी इसी आदत के कारण वह कई बार मुसीबतों में फंसा और निकला था। एक दिन वह अपनी आदतानुसार भट्टी से दारू पीकर निकला और ट्रक के स्टेयरिंग पर आकर जम गया। फिर एक झटके से ट्रक को आगे बढ़ाया। कुछ दूर जाते-जाते दारू ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया और वह मस्ती में किसी रंगीन किस्म के गाने की पंक्तियाँ बहुत ही बेसुरे स्वर में गुनगुनाते हुए अपने मालिक द्वारा बताए गंतव्य की ओर बढ़ा चला जा रहा था कि एक स्कूली बच्चा उसके ट्रक के अगले पहिए के नीचे दब गया।

बच्चे के मरने का अनुमान लगाया और यह सोचकर उसने ट्रक को नहीं रोका कि आसपास के लोग उसे ट्रक सहित ज़िन्दा फूँक देंगे। ऐसा ख्याल आते ही उसने ट्रक की गति और तेज़ कर दी। अभी वह कुछ ही दूर निकला होगा कि पुलिस ने प्राप्त सूचना के आधर पर उसे चेक-पोस्ट पर रोक लिया। ट्रक रोकते ही उसने भागने का प्रयास किया, किन्तु पकड़ा गया।

इन्सपेक्टर ने कड़कते हुए पूछा, ''क्यों बे! तू वहाँ से भागा क्यों?''

''हुजूर ! मैंने सोचा, मरने वाला तो मर ही गया होगा। किन्तु मैं जीते-जी मरने के लिए क्यों रुक जाऊँ?''

''अबे साले ! मरने वाला ही तो मरा था, हम तो नहीं मरे थे। हमारा भी ख़्याल नहीं किया तूने!''

''जी! कुछ घंटों की मोहलत दें, तो मैं मालिक को लेकर आता हूँ थाने में। बस, आप ट्रक और मेरा ध्यान रखें।''

''अबे ! ट्रक को लगा एक तरफ और भाग जल्दी से, ज्यादा बातें न बना और हमारा ख़्याल कर।''

वह भागा ही था कि भीड़ ने बगैर पुलिस की परवाह किए, ड्राइवर को पकड़कर ट्रक पर ला पटका। भीड़ में से कुछ लोग चिल्लाए, ''लगा दो आग इस खूनी ट्रक को।''

धीरे-धीरे आक्रोश में भरी भीड़ ट्रक की ओर बढ़ने लगी।

वापसी -डॉ दलजीत कौर

उन्हें घर छोड़े लगभग दो वर्ष होने को थे पर आज भी उन्हें इंतजार था कि उनका बेटा उन्हें वापस बुला लेगा। अब तो पोता भी जवान है, उन्होंने दोनों की हर फ़रमाइश पूरी की थी उन्होंने। मोटर -साइकिल, कार, फ़ोन, पैसे और न जाने क्या-क्या। यहाँ तक कि पैतृक घर को भी बेटे को अपने नाम करने को कहा, ''तुम घर अपने नाम करा लो। मुझे तो बस एक कमरा और तुम्हारी थोड़ी-सी देखभाल ही चाहिए।"

वे कई दिन से बीमार थे, बुढ़ापा भी था, अकेलापन भी और सबसे अधिक मानसिक संताप भी। आँखों के सामने हर दृश्य बार-बार घूमने लगा। जहाँ जीवन बीता था शादी, बच्चे, माँ-बाप की मृत्यु, बच्चों की शादियाँ हुईं और एक दिन पत्नी भी ईश्वर के घर चली गई। मन में हूक सी उठी, ''काश! बीवी जिन्दा होती तो उससे ही मन की बात कह लेते। परन्तु वह भी मेरी तरह ही दुखी होती। अच्छा हुआ पहले ही चली गई।" मन को कुछ संतोष-सा मिला।

उस दिन जब तबीयत ख़राब होने पर उन्होंने बहू से खिचड़ी बनाने को कहा तो कलेश शुरू हो गया। बेटा बोला, ''बाज़ार से मंगवा लो, मेरी पत्नी कपड़े धो कर थक गई है।"

''चार-पाँच दिन से बाजार का ही खा रहे हैं, इसीलिए बीमार हो गया।" उन्होंने इतना ही कहा तो बेटे ने तपाक से जवाब दिया, ''हमारे घर में रहना है तो हमारे हिसाब से ही चलना होगा।" यह बात उन्हें अखर गई, ''यह मेरा भी घर है, मेरे माँ-बाप का।"

अब की बार बहू ने जवाब दिया, ''यह मेरा घर है, मेरे नाम है। इस घर में मेरी चलेगी।"

उन्हें लगा, जैसे उनके पैरों तले की ज़मीन खिसक गई हो। उन्होंने प्रश्नसूचक आँखों से बेटे की ओर देखा तो वह झेंपते हुए बोला, ''मैंने घर के कागज़ इस के नाम करा दिए हैं। आप को रहना है तो रहो नहीं तो....."

अब की बार झटका ज़रा ज़ोर का लगा और उनमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वहाँ रह कर उसे झेल पाते। अपने बेटे ने धोखा दिया था। वे घर से कार उठाकर निकल पड़े। रात तक एक ढाबे पर बैठे रहे। फिर दूसरे शहर अपने भाई के घर आ गए। एक-दो दिन किसी को कुछ नहीं बताया, उन्हें विश्वास था कि बेटा उन्हें फ़ोन करेगा या लेने आएगा। पर पन्द्रह दिन बीत गए उन्हें वहीं रहना पड़ा। भाई ने उनके बेटे को फ़ोन भी किया पर वह नहीं आया और न हाल पूछा। एक महीने बाद किराए का कमरा ले लिया।

लगभग दो वर्ष हो गए। कई बार पोते से मिले बाज़ार में, उसे तोहफ़े भी दिए, पर कभी उसने घर चलने को नहीं कहा। एक बार तो बेटे को भी फ़ोन किया पर उसने घर आने का ज़िक्र तक नहीं किया। वे बेटे से बात करना नहीं चाहते थे मगर न जाने क्यों एक दिन माँ का कहा एक किस्सा याद आ गया। माँ गाँव की किसी बजुर्ग के बारे में बताती थी कि वह अक्सर रूठ कर घर से चली जाती और खेत में कुंए के पास जा बैठती। शाम को बेटा मना कर ले आता। एक दिन बेटा भी गुस्से से वह बुलाने नहीं गया। किसी ने बुढ़िया को बताया, ''आज तेरा बेटा बुलाने नहीं आएगा। वह कहता है कि माँ तो रोज़ ही ऐसा करती है।" अब बुढ़िया सोचने लगी कि घरवापसी कैसे करे? इतने में घर के पशु घर लौटने लगे तो माँ ने एक भैंस की पूँछ पकड़ ली और घर आ गई। घर आकर वह खिसियाकर बोली, ''मैं नी आना सी पर कट्टे दी माँ मैंनू जबरदस्ती ले आई।'' सब की हँसी निकाल गई। पर आज-कल अहंकार की दीवारें इतनी बड़ी हो गई हैं कि इन्हें गिराना मुश्किल हो गया है और कोई इन्हें गिराना नहीं चाहता। पर उन्होंने तो बेटे को जन्मदिन पर फ़ोन कर मुबारकबाद भी दी थी पर बेटा तो जैसे उनकी वापसी चाहता ही नहीं था।

पिछले तीन दिन से तबीयत ज्यादा खराब थी, जिस फैक्टरी में काम करते थे वहीं की मैस से दलिया बनवाकर लाए। वहीं पर मित्र मिल गया, उससे बातें करते रहे। उसे बताया भी, ''कल रात तबीयत ज्यादा खराब लग रही थी तो कमरे का दरवाज़ा खुला छोड़ कर सोया कि कहीं कुछ हो गया तो दरवाज़ा कैसे खुलेगा?"

मित्र ने संतावना देते हुए कहा, ''ऐसी बातें क्यों सोचते हो? मेरे घर चलो।" पर मन नहीं माना। बस विचार आया, ''जाऊँ तो अपने घर जाऊँ। किसी के घर क्यों जाऊँ?"

मित्र ने पूछा भी, ''बेटे को फ़ोन करूँ?''

''नहीं ज़रूरत नहीं। " रात दस बजे मित्र ने फिर तबीयत पूछने के लिए फ़ोन किया तो इतना ही कहा, ''बस! अब तो सोने लगा हूँ। साँस बहुत चढ़ रही है।"

मित्र ने पूछा, ''अस्पताल ले चलूँ? आ जाऊँ? कोई संकोच मत करो।" दूसरी तरफ से कोई आवाज़ नहीं आई। बस बहुत तेज साँस की आवाज़ आ रहीं थी। मित्र फ़ोन रख कर भागा और दस मिनट में पहुँच गया। मगर दरवाज़ा अन्दर से बंद था। बहुत आवाजें लगाई, दरवाज़ा खटखटाया, खिड़की से झांक कर देखा तो ज़मीन पर औंधे गिरे नज़र आए। दरवाज़ा तोड़ा। इतनी देर में डॉक्टर भी आ गया था, पर उनकी इस दुनिया से वापसी हो चुकी थी। आँखें अब भी खुली थीं और उनमें घर वापसी की चाहत शायद अब भी बाकी थी।

2571, सेक्टर -40 सी
चंडीगढ़
9463743144

रील लाइफ –नज़्मसुभाष

रात का वक्त है। को तेइस साल की एक युवती सलवार सूट में जमीन पर पड़ी कमर के सहारे पीछे की ओर घिसटते हुए गिड़गिड़ा रही है –''मुझे मत छूना..भगवान के लिए मुझे जाने दो...मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ।"

एक काला चेचकदार खूंखार शक्ल का आदमी उसकी ओर अट्टहास करते हुए धीरे-धीरे बढ़ रहा है-''तुझे छोड़ दूँ साल्ली....हाथ आया हुआ इतना कमसिन माल कोई छोड़ता है भला?"

''लगता है तुझे अपनी जान की फिक्र नहीं...अगर मेरे भाई को पता चल गया तो तेरी कब्र यहीं खुद जाएगी।" इस बार उसने तल्ख लहजे में कहा, मगर उसके चेहरे पर डर के घने बादल अब भी मंडरा रहे हैं।

''तेरे भाई ने ही तो नाक में दम कर रखा है...सारे धंधे पानी का कबाड़ा कर रखा है उसने....उसकी इस गुस्ताखी की सजा आज तुझे मिलेगी।" कहकर उसकी ओर झुकने लगता है कि कनपटी पर एक जोरदार विस्फोट होता है और वह जमीन पर ढेर हो जाता है।

''साले मेरी बहन पर हाथ डालता है...मैं तेरे हाथ-पैर यहीं तोड़ दूँगा।"

एक गुस्से भरी चीख.... और इसके साथ ही लात घूसों की बरसात शुरू हो जाती है....सामने वाला भी दो चार लात घूंसे चलता है मगर अधिकतर वार खाली ही जाते हैं।. अब उसके होंठो से खून का फौव्वारा छूट पड़ा है.....और अंततः वो भाग खड़ा होता है। कट कट कट.....

आवाज गूंजते ही सभी उठकर पास पड़ी कुर्सी पर बैठ जाते हैं। डाइरेक्टर भी इस मनमाफिक सीन से खुश है। ये आज की अंतिम शूटिंग थी। धीरे धीरे सारा सामान पैकअप किया जाने लगा।

''यार सुखविंदर तू वाकई में बड़ा खतरनाक लग रहा था...अगर असली वाकया होता तो मेरे बस की नहीं थी तुझसे टक्कर ले पाने की...कैरेक्टर निभाया भी तूने जबरदस्त।" अभिजीत ने सराहना की।

''यह कोई एक दिन में नहीं हुआ है...तेरह साल हो चुके हैं फिल्म इंडस्ट्री में...."

फिर अचानक रमणिका की ओर देखकर वो ठहाका मार कर हँसा-" इसे देखो अब भी मेरे सामने इसकी हालत खराब है.....अरे मैं रील लाइफ का विलेन हूँ, रिअल लाइफ नहीं...मुझसे इतना भी मत डरो।" सब हो हो करके हँस पड़े। रमणिका के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आयी और जल्द ही विलीन हो गयी।

''क्या हुआ...तुम इतनी उदास क्यों हो?"

''कुछ नहीं ... दरअसल आज शूटिंग की वजह से काफी देर हो गयी है..घर जाने का कोई साधन भी नहीं मिलेगा।"

''अरे तो इसमे इतना परेशान होने की क्या बात है... अभिजीत बाबू के रास्ते में ही तुम्हारा भी घर है...वो निकल ही रहे हैं तुम्हें भी छोड़ देंगे।"

''हाँ...हाँ क्यों नहीं....तुम मेरे साथ चली चलो।" रमणिका अभिजीत के साथ हो ली। इस वक्त ड्राइवर कार चला रहा था और वे दोनों पीछे बैठे थे। सड़क सुनसान थी। अचानक अभिजीत का हाथ रमणिका की जांघों पर हरकत करने लगा। वह जरा दूर खिसकते हुए बोली-''यह आप क्या कर रहे हैं?"

''वही जो दो जवान लोग मिलकर करते हैं।"

''आप होश में तो हैं..."

''तुम्हारी इस कातिल जवानी को देखकर भला कौन होश में रह सकता है?" उसने एक आँख दबाई।

''शर्म कीजिए ...मैं आपकी बहन का रोल कर रही हूँ।" उसने हाथ झझकोरते हुए कहा तो अभिजीत का खून खौल उठा। एक जोरदार थप्पड़ उसके गालों पर जड़ते हुए वो चीखा-''साली दो टके की लौंड़िया....इतने दिन से फिल्म इंडस्ट्री में है, तुझे यह भी नहीं पता कि यहाँ रील लाइफ रिश्तों का कोई मोल नहीं....हो सकता है किसी फिल्म में तू मेरी रखैल भी बने।"

वह तिलमिलाकर जोर से चीखी, ''गाड़ी रोको।"

ड्राइवर हड़बड़ाकर कुछ करता उससे पहले दूसरी आवाज गूंजी, ''गाड़ी रुकनी नहीं चाहिए समझे।" अब गाड़ी की स्पीड और तेज हो चुकी थी। उसके पास अब कोई चारा न था वह गिड़गिड़ाई, ''अभी आप मेरी इज्जत बचा रहे थे... और अब उसे लूटने पर क्यों तुले हैं?"

''तू पहले तो फिल्मी दुनिया से बाहर निकल...और सुन कैमरे के सामने की बात और थी...वो ऑडियंस की ख्वाहिश थी...यह मेरी अपनी ख्वाहिश है।" रमणिका बदहवास सी उसे देख रही है। गाड़ी की स्पीड लगातार बढ़ती जा रही है।

356/केसी-208
कनकसिटी, आलमनगर,
लखनऊ-226017

आम का बूढ़ा पेड़

-शिवराज सरहदी

जून की तपती दोपहर में किसी काम से कहीं जा रहा था अभी घर से निकले हुये कोई 3 या 4 कि.मी. चला होऊँगा कि बाईक पंचर हो गई। वहाँ से अगली बस्ती लगभग 1.5 कि.मी. थी जहाँ कोई पंचर लगाने वाला मिल सकता था। सोचा, थोड़ा सुस्ता लूँ फिर घसीटूँगा। एक आम के पेड़ के नीचे अपनी बाईक लगा कर नजदीक पड़े पत्थर पर बैठ गया। तभी ऐसा लगता है जैसे कोई सिसक रहा है।

हमारे बड़े-बूढ़े बताते थे कि गर्मियों में दोपहर के टाईम पेड़ो पर अदृष्य शक्तियाँ रहती हैं, उनके आस-पास मत जाया करो। वह बात याद आते ही जून की उस गर्मी में मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गयी। फिर भी हिम्मत जुटा कर मैंने अपनी भारी आवाज में पूछा ''कौन है?''

तो एक आवाज आई ''बेटा मैं।''

''कौन मैं?''

''बेटा मैं आम का पेड़ हूँ।''

मैं हैरान हो गया कि ये बूढ़ा पेड़ सिसक रहा है। ये हरा भरा फलदार महाविशाल वृक्ष रो रहा है। तभी फिर वही आवाज़ ''बेटा याद है, जब तुम छोटे थे तो अपने मित्रों के साथ आते मुझ पर चढ़ जाते थे। पहले तो पत्ता काट खेलते फिर जब थक जाते तो मेरी टहनियों पर लगे हुये कच्चे आमों को घर से लाये हुये नमक मिर्च के साथ खाते और जहाँ हाथ ना पहुँचता वहाँ लगे आम को पत्थर से गिराने के की कोशिश करते। तुम्हें याद हो ना हो पर मुझे याद है कि ये जो मेरे बराबर में कलुआ खड़ा है ना, जामुन का पेड़! खेलते खेलते तुम इस पर गये और इस पर लगे ततैया के छत्ते पर तुम्हारा हाथ लग गया और तुम्हें उन्होंने काट खाया और तुम नीचे गिर गये परन्तु भगवान का शुक्र है कि तुम्हें चोट नहीं आयी।''

मैं अचंभित था कि एक आम का बूढ़ा पेड़ मुझ से बतिया रहा है। मैंने पूछा, ''बाबा आपको याद है सब कुछ?''

''हाँ...हाँ! मुझे याद है और इस कलुए जामुन को भी। तुम जब भी इधर से निकलते तो ये मुझे बताता था। जामुन ने भी अपनी पत्तियाँ हिला कर आम की बातों का समर्थन किया। तब मैंने पूछा, ''बाबा आप रो क्यों रहे थे?''

आम बोला बेटा तुम्हारे बाद एक दो साल तक और बच्चे आते रहे। फिर इक्का दुक्का बच्चे आते फिर धीरे धीरे आना बंद हो गये। अब तो ना कोई आता है, ना हम पर चढ़ता है, ना कोई खेलता है। बस मैं और कलुआ ऐसे ही उदास खड़े रहते हैं और राहगीरों को देखते रहते हैं।''

मैं गहरी सोच में डूब गया कि ऐसा क्या हो गया, लेकिन मुझे तुरन्त याद आया कि 1980 के दशक में भारत में टेलीविजन नामक वस्तु ने दस्तक दी तब मेरे पिताजी का सरकारी नौकरी के कारण यहाँ से तबादला हो गया। फिर धीरे धीरे तकनीकी विस्तार के कारण मोबाइल फोन ने अपनी दस्तक दी और बच्चों का बचपन छीन लिया। आज कल के माता-पिता स्वयं मैं भी औलाद के प्यार में इतने अंधे हो गये कि प्रकृति से अपने बच्चों का परिचय तक नहीं करवाया। ये सभी बातें सोच कर मेरी आँखें भी भर आयीं।

मैं उठा और अपनी बाइक की और बढ़ा आम बाबा और कलुवा जामुन मुझे अनमने ढंग से जाते हुये देख रहे थे मैं वापस पलट कर दोनों को देखता हूँ और दोनों से वादा करता हूँ कि -''मैं अपने बच्चों को लेकर वहाँ जरूर आऊँगा।''

विकास नगर, देहरादून
9412018669/ 9760981978

प्राचीन

-सुकीर्ति भटनागर

प्राचीन संग्रहालय में घूमते समय नन्हें बेटे ने अपनी माँ से पूछा, ''माँ प्राचीन का क्या अर्थ होता है?''

''बेटा, प्राचीन का अर्थ है पुराना...यानि पुराने समय का। वहाँ जो चीजें तुम देख रहे हो, न, वे सभी सदियों पुरानी हैं, जिन्हें सँभाल कर रखा गया है।''

''और पुराने लोग, माँ? हमारे दादा-दादी जैसे, जिन्हें बेकार समझ कर घर से बेघर करने की बात की जाती है. ...क्या उनकी सँभाल नहीं होनी चाहिए?''

साथ खड़े अपने बड़े बेटे साहिल की बात सुनकर सिहर उठी इला और प्रथम बार प्राचीन की महत्ता का बोध हुआ उसे।

-432, अरबन एस्टेट,
फ़ेज़-1, पटियाला

हथौड़ा (मधुदीप)

गली के दोनों मुहानों पर ठट की ठट भीड़ जमा थी। पुलिस दल का भारी बन्दोबस्त था। दीनानाथ किसान के घर के सामने भारी सरकारी अमला जमा था। बैंक का कर्ज न चुका पाने के कारण आज उसके ट्रेक्टर और उससे सम्बन्धित अन्य उपकरणों को नीलाम करने के लिए बैंक अधिकारी और सरकारी कारकुन जमा थे।

अभी अधिक समय नहीं हुआ, इस इलाके में दीनानाथ का अपना छोटा-सा ही सही, रुतबा हुआ करता था। पक्के मकान की खाली जगह में दुधारु पशु और बैलों की जोड़ी बँधी रहती थी। खेती-क्यारी और पशुओं की देखभाल के लिए एक स्थायी मजूर भी उसके यहाँ रहता था।

कहते हैं न कि सुख के दिन हमेशा नहीं रहते। पिछले चार साल के सूखे ने गाँव के दूसरे किसानों के साथ ही दीनानाथ के पैरों के नीचे से भी जमीन खिसका दी थी। पाँच साल पहले जब उसने ट्रेक्टर तथा उससे सम्बन्धित अन्य उपकरण खरीदने के लिए बैंक से कर्जा लिया तो उसे क्या पता था कि उसका दुर्भाग्य पास ही कहीं खड़ा मुस्करा रहा है। इन चार वर्षों के सूखे के कारण वह बैंक का कर्जा तो क्या चुका पाता, घर को चलाने के लिए उसके दुधारु पशु और बैलों की जोड़ी भी बिक चुकी थी। बैंक की नजर तो अपना कर्जा और उसका सूद वसूलने के लिए उसके पास बन्धक (गिरवी) रखे उसके ट्रेक्टर और उससे सम्बन्धित उपकरणों पर टिकनी ही थी।

पाँच लाख एक..., पाँच लाख दो... लेकिन पाँच लाख तीन का हथौड़ा अभी बज नहीं पाया था कि तभी एक अनहोनी हो गई। घर से निकलकर एक शोर गली के दोनों मुहानों पर खड़ी भीड़ में फैल गया कि घर के अन्दर बन्द दीनानाथ इस अपमान को न झेल पाने के कारण छत के पंखे में फन्दा लगाकर उस पर झूल गया है। बैंक अधिकारी और दूसरा सरकारी अमला अब अपने कागज समेटने लगा था। पुलिस-दल भीड़ को गली के अन्दर आने से रोक रहा था।

उस शाम जब शमशान में दीनानाथ की चिता से ऊँची-ऊँची लपटें उठ रही थीं, नौ हजार करोड़ रुपये का बैंक डिफाल्टर बर्मिंघम में भारत-पाक मैच का आनन्द उठा रहा था। हाँ, उसी शाम ही जब देश की अर्थ-व्यवस्था को सुधारने के लिए जिनके हजारों करोड़ रुपयों की कर्ज-माफी की घोषणा की गई उनमें दीनानाथ का नाम कहीं नहीं था।

138ध्16, त्रिनगर, दिल्ली-110 035,
मो. 8130070928

ठहराव में कहाँ सुख

-विजय जोशी 'शीतांशु'

''आप का चेहरा बहुत ही जाना पहचाना सा लग रहा है! आपको मैंने कहीं बहुत करीब से देखा है। कहीं महाकाल की नगरी, उज्जैन से तो आपका कोई संबंध नहीं है।''

''उस साधु वेश में, नर्मदा तट पर बैठे एक बाबा को देखकर उज्जैन विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति ने एक ही सांस में तीनों प्रश्न दाग दिये। बाबा ने बड़ी विनम्रता से कहा-

''बहता पानी, रमता जोगी और उड़ते परिंदे का किसी शहर, किसी डाल से कभी कोई संबंध रहा है क्या? कभी इस डाल, कभी उस डाल पर। कभी इस घाट तो कभी उस घाट का सफर करते हुए मंजिल को पाना है।''

''अरे अरे आप तो डॉ. भारती जी हैं, उन दिनों में विक्रम विश्वविद्यालय के प्रमुखों में आपकी गिनती होती थी। आप इस अवस्था में? चलिये सर उज्जैन आपकी रहा देखा रहा है।''कुलपति ने आवाज से डॉ. भारती जी को पहचान लिया। ''आदरणीय, मैं तो माँ नर्मदा की इस धारा को तन, मन, धन सब समर्पित कर चुका हूँ। इसी की कल-कल धारा के संग-संग सुख से पंचकोशी की यात्रा कर रहा हूँ। सैलानियों को ठहराव में कहाँ सुख मिलता है।''

सहस्त्रार्जुन मार्ग,
महेश्वर जिला खरगोन म.प्र.

ईमानदार -गोविंद शर्मा

इंजिनियर साहब की शिकायतें काफी उपर तक पहुँच गई तो मंत्री महोदय ने पीओ कर दिया और फील्ड से उठाकर राजधानी भेज दिया। उस पर कई नेता भड़क गये। पक्ष-विपक्ष के कई महानुभाव पहुँचने लगे मंत्री जी पर दबाव बनाने कि इंजिनियर साहब को वापस उसी पद पर लगाया जाए। सभी नेताओं ने उनकी ईमानदारी के गुण गाये तो पीए ने सलाह दी, ''सर इतने नेता एक साथ कह रहे हैं तो इंजिनियर ईमानदार ही होगा, उसे वापस.....।''

''क्या बात कह रहे हो? एक अफसर की इतने नेता सिफारिश कर रहे हैं, उस की ईमानदारी पर किसको विश्वास होगा?''

ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संरिया-335063
ई esy& gosh1945@rediffmail-com
Mobile No- 09414482280

कोलकाता से अण्डमान तक

-गतांक से आगे

दूसरे दिन कार्यक्रम के अनुसार सब लोग गंगा सागर देखने गए, रंजना गंगा सागर के कार्यक्रम से बहुत प्रसन्न थी, चलो, इसी बहाने तीर्थ पर जाने का भी अवसर मिल गया। लोग कहते हैं न, **'सारे तीरथ बार-बार, गंगासागर एक बार।'**

थोड़ा रास्ता टैक्सी में, थोड़ा नाव पर तय करके सब लोग गंगासार पहुँचे। जहाँ तक दृष्टि जाती पानी ही पानी था। सोमेश के तीनों बच्चों ने नदी-नाले और झील तो बहुत देखे थे परन्तु समुद्र आज वे पहली बार देख रहे थे। समुद्र का पानी चाहे मटमैला ही था परन्तु गंगासागर में नहाने वालों की बहुत भीड़ थी, ये सभी लोग गंगासागर के तट पर समुद्र में नहाना चाहते थे परन्तु समुद्र का पानी तो नमकीन था।

अभी ये लोग सोच में ही पड़े हुए थे कि वहाँ तट पर बैठे पण्डों ने बताया कि 'आप पहले समुद्र में नहा आइए, फिर मीठे पानी से नहाने की भी व्यवस्था है, परन्तु उसके लिए शुल्क देना पड़ेगा।'

''नहाना तो है ही, गंगासागर आकर नहीं नहाए तो क्या किया?'' रंजना बोली, जब रंजना और आभा दोनों की एक राय हो गई तो बच्चे कहाँ पीछे रहने वाले थे। समुद्र में नहाने का अपना अलग ही आनन्द होता है न?

अब बारी-बारी सभी लोगों ने पहले समुद्र में स्नान किया और फिर अपने-अपने बदन से नमक धोने के लिए साफ़ पानी से स्नान किया। फिर समुद्र के किनारे पर ही बने कपिल मुनि के आश्रम या मन्दिर को देखने चल दिए। समुद्र के किनारे रेत पर ठेले लागाकर डाभ (कच्चे पानी वाले नारियल) खूब बेचे जा रहे थे, यहाँ भी बच्चों ने नारियल पानी पिया और नाचते-गाते वापस घर के लिए चल दिए।

.....

इन दो दिनों का अच्छा उपयोग हुआ। गंगासागर भी देख लिया और कलकत्ता भी घूम लिए। इसके बाद वे सब समुद्र के किनारे पर थे, समुद्री जहाज़ के सामने। यहाँ भी बहुत भीड़ थी। लग रहा था जैसे पूरा कलकत्ता शहर ही उनके साथ अण्डमान जा रहा हो। डॉ. कौशलेंद्र कुलियों से अपना और मेहमानों का सामान जहाज़ के केबिन में रखवा रहे थे और सोमेश के तीनों बच्चे आँखें फाड़े उस बड़े जहाज़ को देख रहे थे जो समुद्र के पानी में खड़ा था। इस समय दोपहर के तीन बज रहे थे।

सबने देखा जहाज़ को धरती से जोड़ने के लिए लगभग 30 फुट चौड़ा लकड़ी का फर्श बिछाया गया था जिस के साथ दो तरफ़ से सीढ़ियाँ लगा दी गई थीं, जिन पर चढ़कर यात्री भीतर जा रहे थे। आभा आण्टी बच्चों को बता रही थी कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं। आभा आण्टी ने उन्हें बताया कि 'उन्हें जहाज़ के डेक पर बंधी रस्सी के पास नहीं जाना है। वैसे वे पूरे जहाज़ में चाहे जहाँ जा सकते हैं, परन्तु उन्हें अपने रास्ते की ठीक-ठीक पहचान रखनी है ताकि वे कहीं खो न जाएँ। अच्छा हो कि वह किसी बड़े के साथ ही कहीं जाएँ, जिससे परेशानी से सभी बच सकें।'

''अरे, बाप रे! एक, दो, तीन। यह तो तीन मन्जिल का शहर है, आभा आण्टी।'' अचानक रघु बोल उठा। वह बहुत कम बोलता था। आभा हँसने लगी,

''नहीं बेटा, तीन मंज़िल का नहीं पाँच मंज़िल का है यह पूरा जहाज़। अभी इसकी दो मंज़िल पानी के भीतर भी हैं। तुम्हें पता है, इस शिप में तीन हज़ार यात्री सफर करते हैं?''

''इतने लोग?'' कनक फिर पास उचक आई।

''आभा जी, खाने-पीने की क्या व्यवस्था होती है यहाँ?'' रंजना ने पूछा।

''आप मुझे आभा ही कहिए न, हम एक ही जितने हैं लगभग तो फिर औपचरिकता क्या?''

''ठीक है, आभा पर तुम भी मुझे रंजना ही कहोगी। हाँ तो हम कहाँ थे?''

''मैं बता रही थी रंजना कि इन सभी जहाज़ों के भीतर दो तरह की कैन्टीन है। एक साधारण लोगों के लिए और दूसरी मंहगी वाली। अब जो जिसमें चाहे खा सकता है, किसी को कोई पाबंदी नहीं है।''

''और पानी?''

''उसका प्रबंध जहाज़ के नाविक यहीं से करके चलते हैं। यहाँ से चार दिन की यात्रा है अण्डमान की। सिर्फ पानी ही नहीं, रसद और फल-सब्जी भी कलकत्ता या चेन्नेई से

ही जाती है। यानि कि जहाज़ जहाँ से चलता है, वहीं से सारी ज़रूरत की चीज़ें लेकर चलता है। आगे देखना, अब आगे के चार दिन तक सिवाय समुद्र के और कुछ तुम्हें दिखाई देने वाला नहीं है।''

''तुम कितनी बार गई हो, समुद्री यात्रा पर? और कहाँ-कहाँ?'' रंजना ने पूछा।

''बच्चों की छुट्टियों में अक्सर ही हम लोग चले जाते हैं, जहाँ भी इनका जहाज़ जाए।'' आभा मुस्कराने लगी।

अभी ये लोग बातें ही कर रहे थे कि जहाज़ के एक कर्मचारी ने आकर उन्हें एक तरफ इशारा करके जहाज़ पर चढ़ने के लिए कहा। जहाज़ के कर्मचारियों की सीढ़ी अलग थी। आभा, रंजना और सोमेश बच्चों को घेरकर चल रहे थे। कौशलेंद्र पहले ही भीतर जा चुके थे। हालांकि कौशलेंद्र के बच्चे समुद्री जहाज़ पर चढ़ने के अभस्त थे फिर भी बड़ों की चिंता अपनी जगह पर उचित थी। थोड़ी देर के बाद वे सब अकबर के स्पेशल केबिन में थे। शिप के डॉक्टर का मित्र परिवार जो था। सब से ऊपर की मंज़िल पर वातानुकूलित कमरों में उन लोगों का सामान रखा गया था। बाहर बरामदे में बैंच पड़े थे। अपना-अपना सामान जमाने के थोड़ी ही देर बाद सब लोग बाहर की बेंचों पर जम गए। बाहर डेक पर फैले खुले आँगन में बच्चों की धमाचौकड़ी शुरू हो चुकी थी, कि डॉ. कौशलेंद्र ने उन्हें डाँटते हुए कहा,

''इधर ही खेलो, किनारे पर मत जाना। कहीं भी रेलिंग से बाहर मत निकलना वरना शिप के कर्मचारी तुम सब को पकड़कर बंद कर देंगे।'' बच्चे अन्दर से कैमरा लेकर आए थे, कुछ फोटो उन्होंने खींचे, फिर कैरम उठा लाए और चुपचाप बैठकर खेलने लगे, परन्तु बच्चे ज्यादा देर तक बंधन को कहाँ मानते।

थोड़ी देर बाद ही उन्हें बेचैनी होने लगी और उनका मन कैरम से उचट गया, भारत ही पहले बोला, ''कैरम तो घर में भी खेल सकते हैं। चलो हम चलकर समुद्र को देखते हैं।'' अब विपिन ने उनका मार्ग दर्शन किया तो सब के सब एक सुरक्षित स्थान पर चले गए जहाँ लोहे का जंगला लगा था।

यहाँ से नीचे देखने पर चारों ओर समुद्र ही समुद्र दिखाई दे रहा था। जो जहाज़ से टकरा-टकरा कर फेन जैसे सफेद गोलाकार छल्ले उछाल रहा था। बच्चों ने देखा, अब तक जहाज़ के साथ लगा लकड़ी के तख़्तों का फर्श उठ चुका था और सीढ़ियाँ भी कहीं दिखाई नहीं दे रही थीं, परन्तु जहाज़ अभी चला नहीं था। जहाज़ के बैरे इन सब को कॉफ़ी दे गए थे।

बच्चों ने एक नज़र उधर देखा और फिर समुद्र की उछलती तरंगों को देखने लगे। दिन छिपने को हो रहा था, समुद्र पर धीरे-धीरे अंधेरा फैलता जा रहा था। पानी का रंग गहरा नीला दिखाई देने लगा था।

''देखो भइया, कितना नीला रंग है न समुद्र का। कितना अच्छा लग रहा है न! अरे! यहाँ से तो शहर भी दिखाई दे रहा है। पर हमारा जहाज़ हिल क्यों रहा है? आप तो कह रहे थे कि अभी जहाज़ चला नहीं है।'' कनक ने विपिन की ओर देखते हुए अपनी जिज्ञासा सामने रखी।

''हाँ, मैंने ठीक ही कहा था, अभी शिप चला नहीं है, अभी तो एक दूसरा इंजन आएगा जो इस जहाज़ को खींचकर समुद्र के बीच में ले जाएगा। यह तो समुद्र की लहरों के कारण हिल रहा है और रहा रंग? तो समुद्र के पानी का रंग तो पानी का ही होता है, परन्तु हमारी आँखों को यह अलग-अलग जगह पर अलग-अलग दिखाई देता है, यह समुद्र के साथ की मिट्टी के कारण होता है, जिसे सी-बेड कहा जाता है। अण्डमान के किनारे पर तुम्हें लगेगा कि पानी हरा है परन्तु पानी हरा और नीला नहीं वैसा ही है, जैसा पानी होता है। रास्ते में तुम्हें समुद्र काला नज़र आएगा। जबकि काला है नहीं।'' विपिन जो कि सातवीं कक्षा की परीक्षा दे चुका था, इस समय अपने को महाज्ञानी समझ रहा था।

इसी समय दूर से एक छोटा-सा जहाज़ उस तरफ़ आता दिखाई दिया, तो विपिन झट बोल उठा, ''देखो-देखो, वह आ गया इंजन, अब यह हमारे जहाज़ को स्टार्ट कराएगा।'' तभी जहाज़ ने व्हिसल दिया, सब चौकन्ने होकर उधर ही देखने लगे। सबसे ऊपर की इस मंज़िल पर थोड़े से ही कमरे थे और आँगन खूब बड़ा सारा। इस डेक पर खड़े होकर जहाज़ के नीचे के सारे डेक दिखाई दे रहे थे। इसी मंज़िल के दूसरे हिस्से में जहाज़ का संचालन कक्ष भी था। बच्चों ने देखा हर डेक पर बहुत सारे स्त्री-पुरुष जमा होकर समुद्र और आस-पास के नज़ारे को देख रहे थे। फिर वह घूम कर जहाज़ को चलाने के लिए आए इंजन को ग़ौर से देखने लगे।

उन्होंने आश्चर्य चकित होकर जहाज़ की हर हरकत को देखा। बच्चों ने देखा कि समुद्र की लहरों के ऊँचा उठने के साथ ही उनके जहाज़ का अगला कोना ऊपर की ओर उछलता और दूसरे ही पल, लहर के नीचे जाते ही जहाज़

नीचे हो जाता। इस तरह जहाज़ सी-सा खेलता-सा, लहरा रहा था। अब तक छोटा जहाज़ बहुत पास आ गया था, देखते ही देखते छोटा जहाज़ आकर अकबर के डेक के साथ सट गया। विपिन ने उनका ध्यान उस तरफ दिलाया, ''अब देखो, कैसे वह खींचेगा हमारे जहाज़ को और उसे हुगली नदी तक ले जाएगा। तुम्हें पता है, अभी तक तो हम गंगासागर में हैं, जहाँ कल घूमने आए थे?''

''क्या सच्च?'' कनक चहक उठी।

''हाँ बहना!'' विपिन ने उसका सिर सहलाया। सारे बच्चे बड़े ग़ौर से नए इंजन और अपने जहाज़ को देख रहे थे तभी जहाज़ बड़े ज़ोर से हिला और फिर से एक व्हिसल दिया। अब जहाज़ चल पड़ा था। छोटा जहाज़ बड़े जहाज़ के साथ ही चिपका हुआ था। अब बड़े जहाज़ की ऊपरी मंज़िल से रस्सी की एक सीढ़ी लटकाई गई जो कि नीचे खड़े छोटे जहाज के एक हिस्से में फंसा दी गई।

''यह सीढ़ी क्यों लटकाई गई है विपिन भइया?'' रघु ने पूछा तो विपिन बड़े बुजुर्गों की तरह हाथ नचाते हुए बोला,

''देखते जाओ।''

अब जो सबने उस सीढ़ी की तरफ़ देखा तो एक व्यक्ति उस सीढ़ी से उतर रहा था। उसके नीचे पहुँचते ही सीढ़ी वापस खींच ली गई। अब वह छोटा जहाज़ बड़े जहाज़ से अलग होकर तेज़ी से दूसरी तरफ चला जा रहा था।

''इस चालक की ड्यूटी समाप्त हो गई है, इसी जहाज़ से दूसरा चालक आया था, जो ऊपर चढ़ चुका है। अब हमारे साथ वही दूसरा चालक जाएगा।'' सुनन्दा ने उन्हें बताया। वह भी रघु की तरह बहुत कम बोलती थी।

अब अँधेरा होना शुरू हो गया था, मम्मी-पापा और आण्टी अंकल भी बाहर आ गए थे। कौशलेंद्र अंकल ने कहा, ''सोमेश, बच्चों को सी-सिकनेस हो सकती है, इन्हें टेबलेट दे देते हैं।''

''वह क्या होती है अंकल?'' कनक झट बोल उठी।

''इसे समुद्री बीमारी कहते हैं, दरअसल जहाज़ के लहरों के साथ उठने गिरने के कारण चक्कर आते हैं और इससे उल्टी भी आ सकती है। इसे ही सी-सिकनेस कहा जाता है।''

''तो यह बच्चों को ही क्यों होती है?'' अब की बार भारत भूषण ने पूछा था।

''नहीं बच्चों ही को नहीं, बड़ों को भी होती है परन्तु बड़े लोग थोड़ा झेल लेते हैं और बच्चे नरम होते हैं इसलिए जल्दी ही चपेट में आ सकते हैं।'' सोमेश ने बड़े प्यार उन्हें समझाया, ''अब चलो, खाना खा लो और फिर सो जाओ। अब तुम सब थक गए होगे।'' खाना खा कर सब अपने-अपने कमरे में आ गए थे।

भारत भूषण की अण्डमान निकोबार जाने की इच्छा तभी से जाग्रत हो गई थी जब उसकी अध्यापिका ने कक्षा में बताया था, कि अण्डमान-निकोबार के पाँच सौ बहत्तर (572) टापू उसी काले सागर के बीच में हैं, जहाँ कभी भारत की स्वतंत्रता के दीवानों को भयंकर यातनाएँ दी जाती थीं। उसकी अध्यापिका जी ने उन्हें यह भी बताया था कि उन 572 टापुओं में से अनेक टापू अभी भी निर्जन हैं।

भारत भूषण के दादा जी भी स्वतंत्रता सेनानी थे और जेल की सज़ा काट चुके थे, इस नाते भारत भूषण का सारा परिवार अपने देश से बहुत प्रेम करता था इसलिए अण्डमान की कहानी उसके लिए नई तो नहीं थी फिर भी जिस तरह से अध्यापिका जी इस कहानी को सुना रही थीं, उसे सुनकर तो किसी की भी आँखों में खून उतर आता। भारत भूषण सोच रहा था, शायद वह भी अपने देश के लिए बहुत सोचती हैं। पर उसे पता था कि उत्तराखण्ड के हर गाँव से दो-चार लोग सेना में जाते ही हैं।

इस समय अकबर के केबिन में बिस्तर पर लेटा वह यही सोच रहा था कि आज वह अपने देश के पवित्र तीर्थ स्थान की ओर जा रहा है, वहाँ जाकर वह उस माटी को प्रणाम करेगा, आँखों और मस्तिष्क से लगाएगा।

भारत भूषण की अध्यापिका ने कक्षा में यह भी कहा था कि 'प्राकृतिक सुन्दरता और सम्पन्दा से आच्छादित ये टापू पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। शहरी कोलाहल, हल्ला-गुल्ला से दूर शान्त, सुन्दर विभिन्न विशेषताओं वाली रंगीन चमकदार मछलियों, कोरल रीफ़ और हर तरफ़ बेशकीमती चमकते पत्थरों को प्रकृति अपने आगोश में लिए पर्यटकों का, अपने महानगरों के निवासियों का इंतज़ार करती रहती है, जिनके लिए ये टापू किसी स्वर्ग से कम नहीं। आने वाले पर्यटक को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं होता कि कुदरत अपने आँचल में बेशुमार दौलत के साथ-साथ इतनी सुन्दरता भी समेट सकती है।' पापा ने उनकी बात मानकर आज उन्हें इस अनूठे स्वर्ग के दर्शन करने का अवसर दिया। वह सोच रहा था कि उसके पापा-मम्मी कितने अच्छे हैं। वह बड़ा होकर हमेशा उनका कहना माना करेगा। कभी उनका दिल नहीं दुखाएगा। यही सब सोचते-सोचते उसकी आँख लग गई।

-क्रमशः

शिप्रा की प्रबल धार के प्रतिरूप:शिवमंगलसिंह सुमन -बुद्धिनाथ मिश्र

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन हो या कालिदास अकादमी, विक्रम कीर्ति मंदिर या लाल किले का मंच या नेपाल का दूतावास या देश का कोई अन्य साहित्यिक केंद्र --सब पर यदि किसी एक व्यक्ति की गहरी छाप है, तो वे हैं पद्मभूषण डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन (1915 -2002)। उनका जन्म नागपंचमी के दिन रीवा में हुआ था, जहाँ उनके पिता रीवा के महाराजा की फ़ौज के जनरल थे। प्रारंभिक शिक्षा ग्वालियर और रीवा में हुई। उसके बाद उच्च शिक्षा बीएचयू में लेकर वे पहले ग्वालियर और बाद में उज्जैन के एक कॉलेज में अध्यापन करने लगे। बाद में यहीं कुलपति भी बने। उज्जैन उनके बिना साँस भी नहीं ले पाता था। क्षिप्रा नदी से कचरे निकालने के लिए तगाड़ी उठाने वाले, गाँधी जयन्ती पर सड़कों पर झाड़ू लगाने वाले सुमन जी को भी उज्जैन ने देखा है। छात्र-छात्राओं में वे अत्यधिक लोकप्रिय थे। उनके छात्रों में वाजपेयी जी भी थे, जिन्होंने प्रधान मंत्री बनने के बाद अपने प्रथम सम्बोधन में अपने गुरु की कविता उद्धृत की थी। महाकाल का आशीर्वाद लेकर साहित्य -सृजन में आये सुमन जी की व्याप्ति वाल्मीकि, कालिदास और तुलसीदास से लेकर कार्ल मार्क्स तक थी। लेकिन वे वामपंथी बुद्धिजीवियों की मठैती और लठैती से काफी दूर निकलकर सीधे जनता-जनार्दन के साथ चलते रहे। सुदर्शन काया, आभिजात्य परिधान, विलक्षण वाक्पटुता, दर्शकों से सीधे संवाद करने वाली कविता और अभिनय की भंगिमाओं को मूर्त कर देनेवाला काव्यपाठ। लगभग छह दशक तक हिंदी काव्यमंच पर वे अपनी वाग्मिता से राज करते रहे। बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि वे चंद्रशेखर आजाद के क्रांतिकारी दल के सहायक स्तम्भ थे। उन्हें रिवाल्वर-कारतूस आदि मुहैया कराते थे। उन्होंने अपने क्रांतिकारी जीवन के रहस्यों को कभी प्रकट होने नहीं दिया। नेहरूजी के अतिप्रिय तीन हिंदी कवि थे-दिनकर जी, जिन्हें राज्यसभा का सदस्य बना दिया। बच्चन जी को विदेश मंत्रालय में विशेष कार्याधिकारी बनाया और सुमनजी को (जो उस समय होल्कर कॉलेज, इंदौर में हिन्दी के विभाग-प्रधान थे) नेपाल स्थित भारतीय दूतावास में सांस्कृतिक सहचारी (अटैची) बना दिया। सुमनजी का रीवा से घनिष्ठ सम्बन्ध था। उनकी बड़ी बहन कीर्तिकुमारी (पनिहारिन बाई साहेब) का विवाह महाराजा व्यंकट रमण से हुआ था। वे भी अच्छी कवयित्री थीं, जिनकी आध्यात्मिक कविताओं पर शिकागो की एक विदुषी ने रिसर्च किया था। भले ही जीवन-काल में रीवा सुमनजी के लिए दो बीघा जमीन का इंतजाम न कर पाया हो, मगर आज रीवा में राष्ट्रीय स्तर पर 'सुमन महोत्सव' आयोजित किया जाता है। वैसे तो उनके साथ मंच साझा करने का सौभाग्य मुझे बहुत मिला, मगर कलकत्ता प्रवास में यह और बढ़ गया। बिरला परिवार में उनकी जबरदस्त प्रतिष्ठा थी और जब एक दिन उन्होंने मुझे बिरला पार्क (कलकत्ता) ले जाकर वसंत बाबू और सरला जी से कहा कि यह मेरा छोटा भाई है, इसका ख्याल रखियेगा, तब उसके बाद उस परिवार में मेरी खातिरदारी छोटे 'सुमन' वाली होने लगी। सुमन जी का जीवन बहुत ही भागदौड़ का रहा, फिर भी उन्होंने बहुत लिखा। हिल्लोल (1939), जीवन के गान (1942), युग का मोल (1945), प्रलय सृजन (1950), विश्वास बढ़ता ही गया (1948), विंध्य हिमालय (1960), मिट्टी की बारात (1972), वाणी की व्यथा (1980), कटे अँगूठों की वंदनवारें (1991) उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। उनका ग्रन्थ 'गीतिकाव्य: उद्गम और विकास' गीत विधा के अध्येताओं के लिए जरूरी किताब है। राम के जीवन पर आधारित उनकी लम्बी कविता 'जल रहे हैं दीप जलती है जवानी' उनके भीतर के कवि की सांस्कृतिक ऊर्जा को जानने के लिए पठनीय है। सुमन जी की बहुत-सी कविताएँ अपनी सम्प्रेषणीयता के कारण लोगों को कंठस्थ हैं। ये पंक्तियाँ तो जैसे मुहावरा बन गयी हैं -

आभारी हूँ मैं उन सबका
दे गए व्यथा का जो प्रसाद
जिस-जिस से पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद। (सुमन)

मैं बढ़ा ही जा रहा हूँ, पर तुम्हें भूला नहीं हूँ..

चल रहा हूँ, क्योंकि चलने से थकावट दूर होती,
जल रहा हूँ क्योंकि जलने से तमिस्रा चूर होती,
गल रहा हूँ क्योंकि हल्का बोझ हो जाता हृदय का,
ढल रहा हूँ क्योंकि ढलकर साथ पा जाता समय का।

चाहता तो था कि रुक लूँ पार्श्व में क्षण-भर तुम्हारे

किन्तु अगणित स्वर बुलाते हैं मुझे बाँहे पसारे,
अनसुनी करना उन्हें भारी प्रवंचन कापुरुषता
मुँह दिखाने योग्य रक्खेगी ना मुझको स्वार्थपरता।
इसलिए ही आज युग की देहली को लाँघ कर मैं-
पथ नया अपना रहा हूँ
पर तुम्हें भूला नहीं हूँ

ज्ञात है कब तक टिकेगी यह घड़ी भी संक्रमण की
और जीवन में अमर है भूख तन की, भूख मन की
विश्व-व्यापक-वेदना केवल कहानी ही नहीं है
एक जलता सत्य केवल आँख का पानी नहीं है।

शान्ति कैसी, छा रही वातावरण में जब उदासी
तृप्ति कैसी, रो रही सारी धरा ही आज प्यासी
ध्यान तक विश्राम का पथ पर महान अनर्थ होगा
ऋण न युग का दे सका तो जन्म लेना व्यर्थ होगा।
इसलिए ही आज युग की आग अपने राग में भर-
गीत नूतन गा रहा हूँ
पर तुम्हें भूला नहीं हूँ

सोचता हूँ आदिकवि क्या दे गये हैं हमें थाती
क्रौंचिनी की वेदना से फट गई थी हाय छाती
जबकि पक्षी की व्यथा से आदिकवि का व्यथित अन्तर
प्रेरणा कैसे न दे कवि को मनुज कंकाल जर्जर।

अन्य मानव और कवि में है बड़ा कोई ना अन्तर
मात्र मुखरित कर सके, मन की व्यथा, अनुभूति के स्वर
वेदना असहाय हृदयों में उमड़ती जो निरन्तर
कवि न यदि कह दे उसे तो व्यर्थ वाणी का मिला वर
इसलिए ही मूक हृदयों में घुमड़ती विवशता को-
मैं सुनाता जा रहा हूँ
पर तुम्हें भूला नहीं हूँ

आज शोषक-शोषितों में हो गया जग का विभाजन
अस्थियों की नींव पर अकड़ा खड़ा प्रासाद का तन
धातु के कुछ ठीकरों पर मानवी-संज्ञा-विसर्जन
मोल कंकड़-पत्थरों के बिक रहा है मनुज-जीवन।

एक ही बीती कहानी जो युगों से कह रहे हैं
वज्र की छाती बनाए, सह रहे हैं, रह रहे हैं
अस्थि-मज्जा से जगत के सुख-सदन गढ़ते रहे जो
तीक्ष्णतर असिधार पर हँसते हुए बढ़ते रहे जो
अश्रु से उन धूलि-धूसर शूल जर्जर क्षत पगों को-
मैं भिगोता जा रहा हूँ
पर तुम्हें भूला नहीं हूँ

आज जो मैं इस तरह आवेश में हूँ अनमना हूँ
यह न समझो मैं किसी के रक्त का प्यासा बना हूँ
सत्य कहता हूँ पराए पैर का काँटा कसकता
भूल से चींटी कहीं दब जाय तो भी हाय करता

पर जिन्होंने स्वार्थवश जीवन विषाक्त बना दिया है
कोटि-कोटि बुभुक्षितों का कौर तलक छिना लिया है
'लाभ शुभ' लिख कर ज़माने का हृदय चूसा जिन्होंने
और कल बंगालवाली लाश पर थूका जिन्होंने।

बिलखते शिशु की व्यथा पर दृष्टि तक जिनने न फेरी
यदि क्षमा कर दूँ उन्हें धिक्कार माँ की कोख मेरी
चाहता हूँ ध्वंस कर देना विषमता की कहानी
हो सुलभ सबको जगत में वस्त्र, भोजन, अन्न, पानी।
नव भवन निर्माणहित मैं जर्जरित प्राचीनता का-
गढ़ ढहाता जा रहा हूँ
पर तुम्हें भूला नहीं हूँ

वरदान माँगूँगा नहीं

यह हार एक विराम है
जीवन महासंग्राम है
तिल-तिल मिटूँगा पर दया की
भीख मैं लूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए
अपने खंडहरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की
संपत्ति चाहूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
संघर्ष पथ पर जो मिले
यह भी सही वह भी सही।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

लघुता न अब मेरी छुओ
तुम हो महान बने रहो
अपने हृदय की वेदना
मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

चाहे हृदय को ताप दो
चाहे मुझे अभिशाप दो
कुछ भी करो कर्तव्य
पथ से किन्तु भागूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

(डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन)

प्रो. शेर सिंह बिष्ट पुस्तक 'युगदृष्टा' कबीर : एक अध्ययन

-भवान सिंह मेहता

प्रो. शेर सिंह बिष्ट हिन्दी एवं कुमाऊँनी भाषा के क्षेत्र में एक चिरपरिचित नाम है। अब तक उनकी बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। शेर सिंह बिष्ट जी की पुस्तक युगदृष्टा कबीर: एक अध्ययन है। साहित्य में प्रो. बिष्ट ने न केवल कबीर के जीवन दर्शन, भक्ति साधना एवं उनके सामाजिक सरोकारों का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। वरन् कबीर के युगदृष्टा काव्य की प्रासंगिकता और उनकी उपादेयता को रेखांकित किया गया है।

यह पुस्तक विभिन्न अध्यायों में विभक्त है, जिसमें आलोचक ने समस्त प्रतिमानों का प्रयोग करके कबीर के साहित्य की चिरन्तन उपादेयता को उद्घाटित किया है। मनुष्य जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू होते हैं भौतिक एंव अध्यात्मिक। भौतिक जीवन की मूलभूत आवश्यकता रोटी कपड़ा और मकान है।

कबीर ने दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा बनाने वाले, संसार के दु:खों से मुक्ति के मार्ग में ले जाने वाले और कबीर जैसे दलित मुसलमान जुलाहे को ज्ञान का यह गुरुमंत्र मिला भी तो सद्गुरू ब्राह्मण रामानंद से-सतगुरू के परताप ते, मिटि गयौ सब दु:ख द्वंद। कहैं कबीर दुविधा मिटी, गुरु मिलिया रामानंद।।[1] गुरू रामानंद के प्रति अनन्य प्रेम ही कबीर को उनके पास खींच लाया था। इस पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते है-''क्या हुआ जो वे ब्राह्मण थे और कबीरदास जुलाहे, क्या हुआ जो वे काशी के आचार्य थे और कबीरदास कमीनी जाति के बंदे? प्रेम दूरी नहीं जानता, भेद नहीं मानता, जाति नहीं मानता, कुछ नहीं देखता।''[2]

प्रो. बिष्ट हिन्दी साहित्य के माध्यम से रूढ़िवाद, धर्माडम्बर अंधविश्वास अज्ञानरूपी अंधकार को भगवत्प्रेम और आत्मा ज्ञान के प्रकाश से दूर भगाने का प्रयास कर रहे हैं। ज्ञान-साधना से ईश्वर का वास्तविक स्वरूप प्राप्त हो सकता है। ईश्वर के प्रति मेल मिलाप तभी संभव है जब उनके प्रति हमारा सच्चा प्रेम हो बिना प्रेम के भक्ति कुछ नहीं है। भाग बिना नाहिं पाइये, प्रेम प्रति की भक्ति। बिना प्रेम नाहिं भक्ति कछु, भक्त भयो सब जक्त।।[3] इसीलिए अब वे उस देश में रहते हैं जहाँ बारहों महीने परमांनद की स्थिति है। तथा जहाँ आत्मा-परमात्मा के मिलन से सहस्रदल कमल खिल उठता है। कबीर आनन्दित हो उठते हैं। हम उस देश के जहाँ बारा मास विलास। प्रेम झरैं, विकसैं कँवल, तेजपुंज परकास।।[4] कबीर न केवल आत्म मुक्ति के लिए बल्कि सर्वात्ममुक्ति के लिये भी साधनारत थे।

प्रो. बिष्ट को कबीर के स्त्री विषयक दृष्टि मायावी लगती है। वे सच्चाई एवं ईमानदारी को सर्वाधिक महत्व देते थे। यदि कोई ब्याहता स्त्री ईमानदारी से पतिव्रत्य-धर्म का निर्वाह करती है तो कबीर उसके लिये वह श्रद्धेय एवं आदर के योग्य है, 'पवित्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप। पवित्रता के रूप पर, वारों कोटि सरूप।।[5]

आज बड़ी विचित्र स्थिति है कि स्त्री-पुरुष की पत्नी भी है और पुरुष स्त्री का पुत्र भी है। कबीर कहते हैं कि नारी के रूप में जो स्त्री माँ स्वरूप हो उसे ही पत्नी बनाने का औचित्य समझ से परे होने के कारण तो अवधूत सांसारिक-मोहमाया छोड़कर चला गया और योग धारण कर लिया। 'नारी पुरुष की स्त्री, पुरुष नारि का पूत। यही ज्ञान विचारि कै, छांडि चला अवधूत।।'[6] वासना को व्यक्ति का पतन का मूल कारण मानते हैं। यौन संबंध मनुष्य को शारीरिक एवं मानसिक रूप से खोखला बना देते हैं। तभी तो लोग संयमित जीवन की महत्ता को सभी स्वीकारते हैं। हिन्दी के साहित्यकार प्रो. बिष्ट ने आधुनिक युग को विज्ञान का युग कहा है। उनके अनुसार आज तर्क-प्रधान ज्ञान का युग है। मध्यकाल में पूरा देश बाह्याडंबरों के अंधकार में डूबा था।

कबीर के अनुसार हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मावलंबी भ्रम में पड़े हुए हैं। झूठ बोलकर ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं। हिन्दू राम कहकर मर गये और मुसलमान खुदा, जो इन दोनों के प्रतिकूल चला वहीं जीवित रहा। अर्थात कबीर का राम इस सबसे भिन्न है, कबीर कभी स्वर्ग और नरक के चक्कर में नहीं पड़े इसलिए प्रभु के दर्शन कर पाए। हिन्दू मूये राम कहि, मुसलमान खुदाई। कहै कबीर सो जीवता, दुई में कदे न जाई।।[7]

प्रो. बिष्ट कहते हैं कि कबीर संसार के लोगों को देखकर पागल हैं। जिस प्रकार गेहूँ के का मोटा चूर्ण ही मैदा बन जाता है, काबा ही काशी हो गया यानि कि राम रहीम हो गया। काबा फिर कासी भया, राम भया रहीम। मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।।[8] जो व्यक्ति इस तरह के दुर्व्यसनों का शिकार होता है, कह कामी, क्रोधी और लालची प्रवृति का होता है। इस प्रकार के लोगों के ईश्वर की भक्ति नहीं हो सकती है। जो जाति वर्ण और कुल के मिथ्याभिमानों से ऊपर उठा हुआ हो। कामी क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय। भक्ति करे कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय।।[9]

कबीरदास जी ने आचरण की शुद्धता पर बल दिया है उन्होंने किसी तरह का भेद भाव नहीं माना, यही मानवतावादी दृष्टिकोण उन्हें सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करता है।

भारतीय समाज में वर्ण एवं जातिगत भेदभाव में बाहुल्य रहता है। समाज सुधारक उसका विरोध करते रहे हैं। कबीर ने जाति-पाति का खुलकर विरोध किया है। उनकी दृष्टि में जब ईश्वर एक है वही सबका पालनहार है तो मनुष्य में ऊँच-नीच का भेदभाव कैसा? इसलिए वे कहते हैं, जाति पाँति पूछे नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।।[10] कबीर का यह आक्रोश हिन्दू मुसलमान दोनों के प्रति है प्राकृतिक दृष्टि से जब समान है तो समाज के प्रभावशाली व्याक्तियों द्वारा प्रभुत्व बनाए रखने के लिये किया गया है। वे अपने सवाल सीधे उनकी तरफ उछाल रहे हैं। जो तू बाभन बाभनि जाया, और राह तें काहे न आया? जो तू तुरूक तुरूकिनी जाया, पेटे काहे न सुनत कराया?[11] मनुष्य की श्रेष्ठता उसके जन्म के आधार पर नहीं, वरन् कर्म एवं योग्यता के आधार पर निर्धारित होनी चाहिए। जिस प्रकार महत्व म्यान का नहीं, तलवार का होता है उसी प्रकार महत्व साधु जाति का नहीं वरन् उसके ज्ञान का होना चाहिए। जाति न पूछो साधु की जो पूछो तो ज्ञान। मोल करो तलवार का परा रहन दो म्यान।।[12] जो व्यक्तिगत राग-द्वेष की संकीर्णता से ऊपर उठकर प्रभु की भक्ति में लीन हो जाता है। प्रभु का सच्चा भक्त सभी प्राणियों के प्रति समदृष्टि एवं समभाव रखता है तथा समाज में समरसता का आकांक्षी होता है।

हिन्दी साहित्य के युगदृष्टा कबीर पर जो कार्य आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी कबीर को श्रेष्ठ कवियों की पंक्ति में बैठाकर प्रो. बिष्ट ने भी उन्हें श्रेष्ठ स्थान में ही बैठाकर वही काम किया है। द्विवेदी जी ने कबीर नामक पुस्तक लिखकर एक तीर से दो शिकार किए हैं। पहला कार्य कबीर के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व को साहित्य के शिखर तक पहुँचाया इस तरह कबीर का जीवन दर्शन भक्तिकाल तक ही सीमित न होकर कालातीत हो गया और उनकी सामाजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्धता ने उन्हें भक्त एवं संत कबीर से समाज सुधारक कबीर बना दिया दूसरा अपनी आलोचना क्षमता का परिचय देकर स्वयं का कद आचार्य रामचंद्र शुक्ल के समतुल्य बना दिया।

कबीर का अर्थ श्रेष्ठ भी है सचमुच कबीर अपने युग के सर्वश्रेष्ठ महात्मा थे। कबीर का युग सामंतवादी युग था। उसे युग द्वारा युगदृष्टा और नायकत्व के शीर्षस्थ आसन पर आसीन करना खतरों से खाली नहीं हो सकता परन्तु उन्होंने कबीर बनकर ही उन खतरों का सामना किया और कबीर की तरह ही कबीर का सच सबके सामने प्रस्तुत कर दिया।

प्रो. बिष्ट की बात कि संत कबीर ने एक तीर से न जाने कितने ही भस्मासुर भस्मीभूत कर दिये। कहाँ से मिला ज्ञान का ऐसा ब्रह्मास्त्र जिससे बड़े बड़े ज्ञानी-ध्यानी भी परास्त हो गए? कहाँ से आया इतना अदम्य साहस और अटूट आत्मविश्वास कि बड़ी अकड़ और ठसक के साथ चुनौती भरे शब्दों में कहने लगे-पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोई। ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होई।।[13]

कबीर की वाणी का महत्व इस बात से सिद्ध होता है कि-''गुरु ग्रंथसाहब में उनके कई पदों को स्थान दिया है।''[14] लेखक ने समय समय पर उनकी रचनाओं को इधर-उधर से संगृहीत कर उल्लेखनीय कार्य किया है । हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ''जब तक यह नहीं होता तब तक अशांति रहेगी, मारामारी रहेगी, हिंसा प्रतिस्पर्द्धा रहेगी। कबीर ने इस महती साधना का बीज बोया था। फल क्या हुआ, यह प्रश्न महत्वपूर्ण नहीं है।''[15] कबीर का ईश्वर पर अटूट विश्वास था उसे उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त किया है-जाके मन विश्वास है, सदा गुरू है संग। कोटि काल झकझोर रहीं, तउ न हो चित भंग।।[16] कहा जा रहा है कबीर की साधना मानव के जीवन में ही फलीभूत होगी, क्योंकि न तो उन साधनों का लोप हुआ है और न वह खो गई है। वह बीज इस धरती के गर्भ में सुरक्षित है। इस प्रकार प्रो. शेर सिंह बिष्ट का युगदृष्टा कबीर: एक अध्ययन में आधुनिक समाज में चल रही समस्याओं का एक गहन चिन्तन आयाम मिलता है।

सन्दर्भ

युगदृष्टा कबीर, देवभूमि प्रकाशन, माँ गिरिजा विहार कॉलौनी, कमलुआगांजा, हल्द्वानी, नैनीताल

वही, पृ. 13 (निर्गुण बह्म और राम)

वही पृ. 13 (निर्गुण ब्रह्म और राम)

वही पृ. 21 से (ज्ञान-साधना और भगवत्प्रेम)

वही पृ. 23 से (ज्ञान-साधना और भगवत्प्रेम)

वही पृ. 33 से (स्त्री विषयक दृष्टि)

वही पृ. 54 से (हिन्दू मुस्लिम और राम रहीम)

वही पृ. 55 से (हिन्दू मुस्लिम और राम रहीम)

वही पृ. 59 से (हिन्दू मुस्लिम और राम रहीम)

वही पृ. 60 से (जाति न पूछो)

वही पृ. 61 से (जाति न पूछो)

वही पृ. 61 से (जाति न पूछो)

वही पृ. 88 से (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी दृष्टि में कबीर)

वही पृ. 89 से (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी दृष्टि में कबीर)

वही पृ. 107 से (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी दृष्टि में कबीर)

वही पृ. 407 से (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी दृष्टि में कबीर)

शोध छात्र, पी.जी. कॉलेज हल्द्वानी
नैनीताल (उत्तराखण्ड)

लोकगीतों में नकटा -ऊषा किरन शुक्ला

अवधी का नाम लेते ही अवध का ध्यान आता है और अवध से अयोध्या का। अवधी भाषा का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इस समृद्ध भाषा में लोकगीतों का अथाह भंडार है। केवल उनके प्रकार गिनाना भी यहाँ के सीमित समय में सम्भव नहीं है। इसलिए यहाँ हम संगीत के इतिहास की चर्चा न करके सीधे अपने विषय पर आते हैं।

गीत किसी भी देश की संस्कृति के प्रवेश द्वार हैं। जिसके द्वारा हम किसी भी देश के जीवन, रहन-सहन, सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों का सम्पूर्ण अध्ययन कर सकते हैं। गीत स्वयं में पूरा समाज विज्ञान है। लोकगीतों में हर अवसर हर ऋतु और कार्य के अवसर पर गीत हैं। इन्हीं गीतों में है संस्कार गीत।

संस्कारों में विवाह संस्कार बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ होता है। विवाह संस्कार में बहुत रीति-रिवाज होते हैं और हर रीति-रिवाज पर गीत होते हैं। यहाँ हम नकटा गीत की बात करेंगे जो बेटे के विवाह में गाया जाता है। पहले बेटे के विवाह में बारात तीसरे दिन विदा होती थी। तो वर पक्ष की महिलाएँ अपने घर मे स्वतन्त्र होती थीं क्योंकि पुरुष सब बारात में चले जाते थे। उस समय महिलाएँ बारात में नहीं जाती थी। वे घर में रहती थीं और खूब धूम से नकटौरा करती थीं जिसमें गीत, नृत्य और अभिनय की त्रिवेणी बहती थी। गीत केवल नकटा और कहरवा गाया जाता था। नकटा शब्द नाटक से लिया गया है। नाटक से नटका हुआ और फिर वर्ण विपर्यय से मुख सुख के लिये नकटा हो गया।

बारात विदा करने के बाद वहाँ से ही नकटा गाते हुए आती थीं। फिर सारी रात नकटा गीत, नृत्य और अभिनय। महिलाएँ पुरुषों का वेश धारण करके अभिनय करती थीं। अपने आसपास के चरित्रों जैसे चूड़ी वाला, सब्जी वाला, धोबी, पुलिस वाला और डॉक्टर आदि का अभिनय करके खूब खुलकर हँसी-मजाक होता था। अगले दिन और रात भर यही सब होता था। जब तक बन्दनवार नहीं सेरवा जाती थी, अनवरत नकटा चलता रहता था पर अब नकटौरा का चलन कम होता जा रहा है क्योंकि महिलाएँ भी बारात में चली जाती हैं तो रात में नकटौरा कौन करे? अगले दिन सुबह ही बारात वापस आ जाती है। नकटा की अपनी विशेषताएँ होती हैं। यह कथानक प्रधान न होकर छोटे-छोटे चुटीले विषयों पर होता है। हँसी मजाक इसका प्रधान विषय होता है। नकटा सभी गीतों का निचोड़ होता है। इसमें सभी रसों का समावेश होता है। नकटा में भक्ति रस भी होता है। इसमें परिवार के सदस्यों की सेवा करने का वर्णन अधिक होता है और अपने परिवार के लिए अच्छे से अच्छा करना गृहणी का कर्तव्य है। जैसे सोने की थाली हो, चाँदी का गेडुआ हो, लौंग इलाइची का बीड़ा हो और हजार फूलों की सेज हो। एक उदाहरण देखें ---

कौने सहरवा कै फुलवा हो गमकै मोरे अंगना।
सोने की थारी म जेवना परोसेंव,
मोरे ससुर मिठबोलना हो जेवें मोरे अँगना।
झाँझर गेडुआ गंगाजल पानी,
मोरे जेठ मनरजना हो घूँटइ मोरे अँगना।
लौंगा इलैची कै बीरा जोराएव,
मोरे देवर दिललगना हो कूँचे मोरे अँगना।

इसमें दुखों को भी मीठे परिहास के आवरण में लपेट कर प्रस्तुत किया जाता है। वह नारी जो अपने दुख को किसी से नहीं कह सकती है, जो सामाजिक विसंगतियों का शिकार है, जिसके ऊपर कोई भी अत्याचार किया जा सकता है, जो मुँह नहीं खोल सकती थी, पति के साथ बात करने के लिए भी जिसके लिए सीमाएँ निर्धारित थीं। सास, ननद के अत्याचार सहती थी, पति से पिटती भी थी, वही महिला इन गीतों के द्वारा अपनी व्यथा और प्रसन्नता व्यक्त करती थी। कहीं कुछ तो सोचने को बाध्य करते हैं ये गीत। नकटा जो रुदन को भी हास्य और अभिनय द्वारा प्रस्तुत करता है। नकटा जो आँसुओं को भी मोती में बदल देता है। नकटा, रोते हुए को भी हँसने पर मजबूर कर देता है। नकटा, जिस पर पाँव थिरक उठते हैं। नकटा जो मूक को स्वर प्रदान करता है। अँधेरे में धूप खिलाता है, जो भावनाओं और रागवृत्तियों को अभिव्यक्त करता है। नकटा जिसमें अतीत की छाया, वर्तमान की सच्ची अनुभूति और भविष्य की आशा होती है। जीवन को रंगारंग बनाने का विश्वास होता है। जो दूब घास की तरह अक्षय होता है। पुष्पों की तरह रंगीन होता है और अपने देश की सभ्यता और संस्कृति की

असली सुगन्ध समेटे समाज मे महकता रहता है। नकटा लोकजीवन का स्वर है, ये लोकमानस के दर्पण हैं। नकटा में समस्यात्मक गीत भी है जो हास-परिहास के रंगारंग आवरण में ही लपेट कर प्रस्तुत किये जाते हैं। नकटा तो होता ही है हँसकर वार करने का। एक गीत में देखिए -

एक महिला का पति रात को घर में बिना किसी से कुछ कहे सुने ही घर से चला जाता है। सुबह सब लोग उस महिला से पूछने लगते हैं कि वह किसी के लिए कुछ कहकर गया है कि नहीं? जली-भुनी महिला कहती है कि सास को जहर देने, जेठानी को अलग करने, ननद का गौना देने को कह गये हैं।

रतिया राजा हमार मधुबन गए हो।
होत सबेर सासु लागी पूछै,
बउहरि भैया काउ-काउ कहि गए हो।
न कुछ कहि गए, न कुछ सुनि गए,
सासु तुंहका जहर देवे कहि गये हो।

इसी तरह सदा की शेर सास, ननद और पति की खुलकर खबर ली जाती है। लोकसंगीत बहुत शक्तिशाली होता है। इसकी धार पैनी और प्रभाव तीखा होता है पर कोमल सहज स्नेह और आत्मीयता से सराबोर। तभी तो झेलना सहज है। सामाजिक समस्याएँ भी नकटा में ढलकर आ जाती हैं। बेमेल विवाह एक दुखदायी स्थिति थी। यह दो प्रकार का होता था।

एक गीत में कन्या बहुत बड़ी और वर छोटा होता था। दूसरी में कन्या छोटी और वर बहुत बड़ा होता था। जिसमें वर छोटा होता था वह गीत देखिये -

बारह डंडा कै अटरिया हो, चढलेव दियना बारि।
सैंया के देखेंव लरिकवा हो उतरेव मनवा मारि।
मैं आपन जियरा सम्हारुं कि तुहैं बालमा।
रोटिया बेलन गई संग गये बालमा,
मैं आपन बेलना सम्हारुं कि तूहै बालमा।

जहाँ वर बहुत बड़ा है और कन्या बहुत छोटी है, वर के अत्याचारों से त्रस्त होकर कहती है -

तनी होवे द सयान पिया हमरा के।
जैसै करहिया म तेल जरतु है,
वैसै जरैबै हम तोहरा के।

संयोग और वियोग, पिया का परदेस जाना, पिया के रहते उनसे न मिल पाना और सबसे बड़ा विषय सौत। ऐसे हजारों गीत हैं जो इन विषयों पर आधारित हैं। समाज सुधार पर भी नकटा में बहुत से गीत हैं जैसे-परिवार नियोजन, नशा, अशिक्षा, आदि-आदि।

परिवर्तन समय की मांग है। नकटा में भी परिवर्तन हुआ। पश्चिमी सभ्यता का असर ग्रामीण समाज मे भी दिखा पड़ा। जैसी समाज की सोच होती है , गीत भी वैसे ही बनते हैं। जहाँ पहले महिला कहती थी-

'सेर भर गोहुँआ बरिस भर खैबै,
तुंहका जाय न देबै नाय,
रखबै अँखिया के हजुरवा
पिया का जाय न देबै नाय
कलकतवा के नोकरिया,
पिया के जाय न देबै नाय। वही अब कहती है -
परदेसी संग सादी करबै,
दिहाती मोरे मनही न भावै।

क्योंकि अब उतने प्रतिबन्ध नहीं रह गये हैं। अब पति, पत्नी को साथ ले जाने लगे हैं और उसे शहर की साफ-सुथरी और पैसे वाली जिन्दगी अच्छी लगने लगी है। इसलिए वह जोर देती है कि वह भी साथ चलेगी-

तोहरे संघरिया हम चलबै,
बलम हम घरमा न रहबै।

अब की महिला मुखर हो गयी है। वह धमकी भी देने लगी है। अब वह सास और ननद का अत्याचार सहने को तैयार नहीं है और बराबर मुकाबला करने को तैयार नहीं है।

आँगना में कुइयाँ राजा डूब के मरूँगी।
ससुर जी बोली बोलेंगे तो कुछ न कहूँगी,
सास बोली बोलेंगी तो,
घुँघटा खोल के लडूँगी।
जेठ बोली बोलेंगे तो कुछ न कहूँगी
जिठानी बोल बोलेंगी तो,
हिस्सा बाँट कर लडूँगी।
वह हर असम्भव कार्य करने को तैयार है -
कोठे ऊपर कोठरी, मैं उस पर रेल चलाय दूँगी।
जो मेरी सासू प्यार करेगी,
सब तीरथ करवाय दूँगी,
जो मेरी सासू लड़े लड़ाई,
रोटी को तरसाय दूँगी।

जिस प्रकार नकटा हलकी-फुलकी बातों पर आधारित होता है उसी प्रकार इसका निर्माण भी सहज और सरल होता है। सोहर और विवाह गीत की भाँति इसमें क्रमबद्धता नहीं है। जैसे नकटा की पहली पंक्ति बिलकुल निरर्थक हो सकती है। उदाहरण के लिए

''कोठे ऊपर कोठरी मैं उस पर रेल चलाय दूँगी।" यह बात बिलकुल असम्भव है।

कोठे के ऊपर कोठरी तो बन सकती है पर उस पर रेल नहीं चल सकती। इसका गूढार्थ यह है कि मैं असम्भव को भी सम्भव करके दिखा दूँगी। नकटा गीत सुख-दुख की अभिव्यक्ति होते हैं। अवसर के उल्लास और व्यथा के क्रंदन होते हैं पर वह क्रंदन नग्न नहीं होता है, उस पर हास्य का ऐसा अभेद्य और कठोर कवच चढ़ा होता है जो सीधे प्रहार करता है। वह मनोरंजन तो करता ही है पर उस अव्यक्त दुख का अनुभव भी कराता है।

नकटा मन के उमंग का परिचायक है। इतने दुखों और समस्याओं के बीच जो हँसाता और नचाता है। नकटा सरलता से बन जाता है। पहली पंक्ति जैसे-तैसे बन जाय फिर 'सोने की थाली में जेवना परोसें" तो है ही। गीत अपने आप आगे बढ़ता चला जायेगा।

ये अनगढ़ भले ही दिखाई पड़ें पर मन में मिठास और तन में उल्लास भरने में समर्थ होते हैं। ये मन के अत्यंत निकट होते हैं। यह भाव प्रधान होते हैं और इन्हें शास्त्रीयता के बंधन में नहीं बाँधा जा सकता है। नकटा पूर्ण रूप से जीवन के मर्म और व्यथा को स्वर देते हैं। कहते हैं कि दुख आँखों के रास्ते आँसुओं के रूप में निकलता है पर कैसा विरोधाभास है? नकटा में मन के पीड़ायुक्त मनोभाव हँसते हुए अपनी व्यथा को स्वर देते हैं। नकटौरा में हँसी-मजाक में ही सही पर मन का दर्द बाहर निकल जाता है इसलिए कुंठा समाप्त हो जाती है। हमेशा की प्रताड़ित महिला खुल कर अपनी बात कहकर प्रफुल्लित हो जाती है। यह महिलाओं का नितांत अपना होता है इसीलिए यह स्थाई है और नारी मन के अन्तर्मन की अभिव्यक्ति में इतना सफल है।

-पांडेय निवास
मकान नंबर 5/5/19-ठ/2 बेनीगंज, फैज़ाबाद
(निकट - उदया पब्लिक स्कूल के पीछे)
पिन - 224001
फोन नम्बर - 9451040053
मो. 9415917332

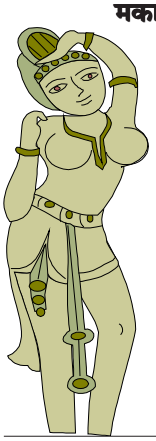

महिला का जन्म नहीं होता है, बल्कि उसे महिला बनाया जाता है

-सिमोन डी विभोर

ईडन गार्डन में मूल पाप महिलाओं का था। उसने निषिद्ध फल का स्वाद लिया, आदम को लुभाया और वह तब से इसकी सज़ा भुगत रही है। उत्पत्ति में, प्रभु ने कहा, ''मैं तुम्हारे दुख और तुम्हारी धारणा को बहुत बढ़ाऊँगा (दु:ख में तुम बच्चों को आगे लाना) और तेरी इच्छा बच्चों को आगे लाएगी और तेरी इच्छा तेरे पति की होगी और वह तुझ पर राज करेगा। समाज, जो कि मूल रूप से पितृसत्तात्मक है, उपरोक्त उद्धरण को समाज में महिलाओं की स्थिति को एक पौराणिक औचित्य के रूप में माना जा सकता है। कई महिलाएँ अपने जीवनसाथी के साथ अपने संबंधों के सारांश को देख सकती हैं, जो कि उम्र के माध्यम से उनकी स्थिति का उचित विवरण है।

लंबे समय से, महिलाओं को सामान्य रूप से पुरुषों के संबंध में दुनिया में एक द्वितीयक स्थान पर कब्जा करने के लिए मजबूर किया गया है, जो कि नस्लीय अल्पसंख्यकों के साथ कई मायनों में तुलनात्मक स्थिति की सही दशा को प्रदर्शित भी करता है। महिलाओं को इस तथ्य के बावजूद हाशिये पर छोड़ दिया गया है कि वे मानव जाति के कम से कम आधे हिस्से का गठन करती हैं। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं ने स्वतंत्र और स्वतंत्र संस्थाओं,जो बौद्धिक और व्यावसायिक एकता के समान तल पर पुरुषों के साथ जुड़ी हुई हैं, के रूप में अमानवीय गरिमा की जगह ले ली है।

पूर्व-कृषि काल में, महिलाओं को कड़ी मेहनत करने और युद्ध में भाग लेने के लिए भी जाना जाता था। हालांकि महिलाओं को सशक्तिकरण में, प्रजनन का बंधन एक कष्टकारक बाधा थी। गर्भावस्था, प्रसव और मासिक धर्म ने काम करने की उसकी क्षमता को कम कर दिया और उसे धीरे-धीरे संरक्षण और भोजन के लिए पुरुषों पर अधिक निर्भर बना दिया। यह अक्सर ऐसे पुरुष थे जो शिकार करने और भोजन एकत्र करने में अपनी जान जोखिम में डालते थे। यह काफी विडंबनापूर्ण है कि श्रेष्ठता मानवता में उस सेक्स के लिए नहीं है जो जीवन को आगे लाती है और

उसका पोषण करती है, बल्कि उसके लिए है जो जीवन को हरता है ।

खानाबदोश के रूप में मानव, समय के साथ बस्तियों में बस गए और फिर सामुदायिक जीवन की उत्पत्ति हुई। समुदाय वर्तमान से परे एक निरंतर अस्तित्व की इच्छा रखता है। इसने अपने बच्चों में खुद को पहचान लिया और गरीबी, विरासत और धर्म जैसी संस्थाएँ भी दिखाई दीं। महिलाएँ अब खरीद का प्रतीक बन गईं और बहुत बार उसे पृथ्वी से जोड़ कर भी देखा गया क्योंकि महिलाओं और पृथ्वी दोनों पर ही किसी और का ही अधिकार दिखाई देता है। बच्चों और फसलों को भगवान का उपहार माना जाता था। ऐसी शक्तियाँ पुरुषों में प्रेरित हैं जो डर से घुलमिल जाती हैं जो महिलाओं के देवी रूप में उनकी पूजा में परिलक्षित होती हैं। हालांकि, खुद में व्याप्त शक्तियों के बावजूद, एक महिला को बहुत ही प्रकृति की तरह अधीन और शोषित किया जाता है, जिसका प्रजनन वह स्वयं करती है।

'औरत, आदमी के लिए या तो एक देवी या एक डायन है।' एक सामंती समाज में गड्ढे और कुरसी के बीच एक दोलन आम था। सामंतवाद से पूंजीवाद के संक्रमण में, बढ़ते शहरीकरण ने महिलाओं के लिए उपलब्ध नए स्थानों को सामंती संपदाओं तक सीमित कर दिया। महिलाओं के यौन संक्रमण को निजता के प्रतीक, घर से दूर उनके शाब्दिक आंदोलन के संदर्भ में देखा जाता है। पितृसत्ता में, गतिशीलता की संभावना महिला अवज्ञा का एक पहलू बन जाती है। उत्पीड़न की ऐसी धारणाओं के लिए एक सुधारात्मक परिपाटी की आवश्यकता महसूस की जा रही है। जब तक मानव जाति लिखित पौराणिक कथाओं के मंच तक पहुँची, तब तक पितृसत्ता निश्चित रूप से स्थापित हो चुकी थी। पुरुषों को हर समय कोड लिखना था और जाहिर है कि महिलाओं को एक सब-ऑर्डिनेट पद दिया गया था। होमोजेनिक विचारधाराओं की एक केंद्रीय विशेषता सार्वभौमिक दृष्टिकोण के सार्वभौमिक रूप से सच होने का प्रक्षेपण है। पितृसत्ता, एक वैचारिक धारणा के रूप में, एक ही सिद्धांत पर काम करती है और फिर भी, पुरुषों द्वारा सख्त प्रभुत्व के युग में, समाज ने उन महिलाओं को दूर फेंक दिया है जो पुरुषों के कैलिबर से मेल खा सकती हैं। यहाँ तक कि पुरुषों के कौशल को भी पार कर सकती हैं। महिलाओं की दृश्यमान उपलब्धियाँ- शिक्षक के रूप में, डॉक्टर के रूप में, पायलट के रूप में, सैनिक के रूप में और खोजकर्ताओं ने महिलाओं की भूमिका को घर और चूल्हा तक सीमित करने की पितृसत्तात्मक धारणाओं को ध्वस्त कर दिया है। लेकिन इन उपलब्धियों को नियम के अपवाद के रूप में देखा गया है, हर महिला की पहुँच के भीतर नहीं और आम तौर पर, महिलाओं ने उनके इस दृष्टिकोण को स्वीकार किया है।

अगर, हम स्थिति पर कुछ विचार करते हैं, तो हम देख सकते हैं कि महिलाओं को निर्दिष्ट भूमिकाओं तक सीमित रखने और उन्हें पुरुषों के अधीन करने के लिए यह कितना हानिकारक है। आज के परिवेश में बच्चों की परवरिश करने के लिए, उन्हें प्रतिस्पर्धी भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लायक बनाने के लिए, एक महिला को इस बात से पूरी तरह से अवगत होना चाहिए कि क्या हो रहा है और चुनने और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करें। यदि वह ऐसा करने के लिए खुद को सुसज्जित करने की शक्ति का अभाव रखती है तो भविष्य को ही हारना पड़ेगा।

महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता महसूस की जा रही है क्योंकि शुरुआत से ही अधीनस्थ स्थिति का उन्हें दर्जा दिया गया है। हालांकि, त्रुटि का मात्र एहसास चीजों को सही दिशा में आगे नहीं बढ़ाता है, समाज में महिलाओं की स्थिति को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। एक हद तक महिलाओं की स्थिति में एक बदलाव संविधान और सहायक कानून के माध्यम से लाया गया है। भारत में पहली पंचवर्षीय योजना ने परिवार में महिलाओं की वैध भूमिका के मुद्दे को संबोधित किया, जिससे महिलाओं को इस भूमिका को पूरा करने की अनुमति मिली, साथ ही समुदाय में अपेक्षित भूमिका और उनके कल्याण के लिए पर्याप्त सेवाओं को बढ़ावा दिया।

1. 1970 के दशक में भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति की रिपोर्ट के प्रकाशन के साथ महिलाओं के विकास को चिंताओं में सबसे आगे लाया गया। 1975 में अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष का पालन किया गया और एक राष्ट्रीय योजना की तैयारी की गई।

2. रोजगार, स्व-रोजगार और उत्पादक परिसंपत्तियों के निर्माण पर ध्यान देने के साथ गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का विकास, ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम, (आरएमपी), एनआर पी, फूड फॉर वर्क, जेआरवा, आरएल जीपी, ईएएस और अब मनरेगा के साथ इन मुद्दों को कम से कम शुरू करना है। महिलाओं और इसकी निगरानी के लिए एक वर्ष में न्यूनतम दिनों की नियत संख्या निर्धारित की गई है।

3. बाल विवाह अधिनियम के संयम को अधिक व्यापक

कानून अर्थात् बाल विवाह निषेध अधिनियम द्वारा बदल दिया गया है, जिसमें पांच साल से पहले बाल विवाह को रोकने और निपटने के लिए अधिक प्रभावी प्रावधान हैं।

4. चयनात्मक लिंग निर्धारण और भ्रूण हत्या और शिशु हत्या के मुद्दे को संबोधित करने के लिए कानूनों को तोड़ा-मरोड़ा गया है।

ये नीतियाँ और कार्यक्रम एक मुखर तस्वीर देते हैं जिससे यह पता चलता है कि 20 वीं सदी हमेशा लिंग क्रांति में बड़े बदलाव के लिए जानी जाएगी। 'महिलाओं के आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन के लिए एक महिला-समर्थक प्रतिबद्धता या परिवर्तन के विविध आयामों पर एक नारीवादी परिप्रेक्ष्य- विभिन्न क्षेत्रों और समय के विभिन्न बिंदुओं पर लोगों के बीच उभरा। प्रचलित वैचारिक धाराओं के साथ उनके जुड़ाव ने पारस्परिक प्रभाव के मार्गों को बढ़ावा दिया।

राष्ट्रीय महिला आयोग टिप्पणी करता है कि ''राष्ट्रीय महिला आयोग अपने आदेश के अनुसार प्रतिबद्ध है, ताकि कानूनी रूप से, सामाजिक रूप से महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिल सके। राजनीतिक और आर्थिक रूप से समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार हो सके।''

लेकिन सवाल यह है कि इन नीतियों को लागू करने के लिए क्या हुआ है और अगर इन नीतियों को लागू किया गया है, तो महिलाओं के खिलाफ अत्याचारों के नीचे बताए गए आंकड़े इतने चौंकाने वाले कैसे हो सकते हैं लेकिन, 'सत्य हमेशा विशाल, असंगठित, अराजक और द्वंद्वपूर्ण होता है।'

-महिलाओं के खिलाफ आक्रामकता के नए रूपों के साथ जैसे डेट रेप, पीछा करना, साइबर पर धमकी, बलात्कार और यौन उत्पीड़न के मामलों से संबंधित आईपीसी में मौजूदा कानून अपर्याप्त हैं।

-वर्तमान कानून मौखिक और गुदा सेक्स जैसे बलात्कार के रूप में मर्मज्ञ हमलों के अन्य रूपों पर विचार नहीं करता है। इस तथ्य के बावजूद कि मर्मज्ञ यौन हमले को व्यापक रूप से यौन हमले के रूप में पहचाना जाता है। जहाँ एक महिला की शारीरिक अखंडता का उल्लंघन होता है।

एन ओकले का तर्क है कि, ''हमें लैंगिक भूमिकाओं की विचारधारा में एक वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है।" और वह आगे कहती हैं, ''न केवल सेक्स द्वारा श्रम का विभाजन सार्वभौमिक नहीं है, बल्कि कोई कारण नहीं है कि यह क्यों होना चाहिए। मानव संस्कृतियाँ अजेय जैविक शक्तियों के बजाय विविध और अंतहीन आविष्कार हैं। "

स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही कहा, ''जब तक हम अपनी मानसिकता नहीं बदलते हैं, तब तक कुछ नहीं बदलने वाला है।"

एरिका जोंग का कहना है कि महिलाओं को वास्तव में समान काम के लिए समान वेतन, घर और प्रजनन विकल्पों पर समान अधिकार होना चाहिए। पुरुषों को उसके लिए आगे आना चाहिए।

सौभाग्य से, भारतीय महिलाओं की कहानी, विश्व में उनकी अन्य बहनों की तरह साहसपूर्ण और धैर्य वाली है। प्रत्येक महिला दिवस, बिगड़ते हुए आँकड़ों के बावजूद, उन महिलाओं का पर्याप्त सबूत है, जिन्होंने अपने भाग्य को अपने हाथों से लिखा है। हम इन सफलता की कहानियों को हर दिन और हर जगह कार्यस्थल पर, खेल और मनोरंजन के क्षेत्र में और निश्चित रूप से, घर में देखते हैं।

न्यायसंगत और न्यायपूर्ण राष्ट्र के निर्माण का कठिन कार्य केवल पुरुषों और महिलाओं के बीच साझेदारी के साथ ही संभव है। हमारे देश के रथ को आगे बढ़ाने के लिए दोनों पहियों-पुरुषों और महिलाओं को मजबूत होना होगा, संयुक्त रूप से आगे बढ़ना होगा। भारत तभी स्वतंत्र होगा जब भारतीय महिलाओं की स्वतंत्रता और पूर्ण विषय-वस्तु के अधिकार की गारंटी दी जाएगी और वास्तव में उनका सम्मान किया जाएगा और जब रवींद्र नाथ टैगोर के विचारों की कल्पना की पूर्ण हो पाएगी :

''जहाँ मन बिना भय के विचरण करता हो,
और जहाँ सिर ऊँचा रखने की आज़ादी हो।''

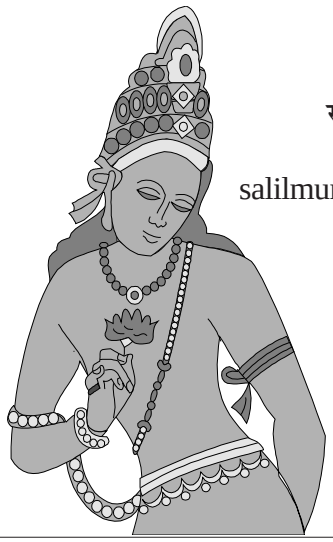

सलिल सरोज
कार्यकारी अधिकारी
लोक सभा सचिवालय
संसद भवन, नई दिल्ली
9968638267
salilmumtaz@gmail-com

मुझे प्यार हो गया -डॉ. प्रभा पन्त

मैंने उसके बारे में सुना तो मुझे यक़ीन ही नहीं हुआ। मैं सोचती रही, क्या वास्तव में उसमें इतनी ख़ूबियाँ होंगी, जितनी यह बता रही है। न चाहते हुए भी मैं उसके बारे में सोचने लगी थी। दिन-प्रति-दिन उसके प्रति मेरी जिज्ञासा और उससे मिलने की उत्सुकता बढ़ती चली जा रही थी। आखिर एक दिन मैंने उससे मिलने का निश्चय किया और उसके पास चली गई।

जब मैं पहली बार उससे मिली, उस दिन उसकी ख़ूबियों ने मुझे आकर्षित तो किया, किन्तु विशेष प्रभावित नहीं कर पाया। लेकिन हाँ, यह ज़रूर हुआ, उस दिन से वह मेरी यादों में बस गया। धीरे-धीरे उससे मेरी मुलाक़ातें बढ़ने लगीं। उसे देखना...उसके बारे में जानना...उसे समझना... और उसके क़रीब जाना मुझे अच्छा लगने लगा। एक दिन अनजाने ही...या फिर जानबूझकर...न जाने कैसे मैं उसे स्पर्श कर बैठी, उफ़् कैसा जादू था उसमें...तब से आज तक मैं, ख़ुद को उससे दूर नहीं कर सकी...और न कभी करना चाहती हूँ। आज भी वह प्रथम अनुभव मेरे लिए इतना सुखद एवं अविस्मरणीय बना हुआ है कि जब भी मुझे वह अद्‌भुत क्षण याद आता है तो मैं यह सोचकर पुलकित हो उठती हूँ, कितना अच्छा हुआ कि वह मेरे जीवन में आया। यदि उस दिन अनजाने ही सही, मैंने उसके क़रीब जाने की पहल न की होती तो न मैं उसे इतनी गहराई से जान पाती...न आज इतनी ख़ुश होती और न ही इस मुक़ाम पर।

आज सोचती हूँ तो लगता है...कितनी अधूरी थी मैं, उसके बिना। जब से वह मेरे जीवन में आया है, तब से मैं अपने जीवन का हर क्षण उसके साथ बिताना चाहती हूँ... एक पल के लिए भी उसे अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देना चाहती। सुना था, प्यार में लोग पागल हो जाते हैं, पर नहीं जानती थी ये पागलपन, समझदारी से कई गुना अच्छा है। क्योंकि प्यार में पागल व्यक्ति अपने प्रिय के ख़्यालों में इतना डूबा रहता है कि नफ़रत के लिये उसके पास वक्त ही नहीं होता। लोगों के छल-प्रपंच से बेख़बर...वह अपनी धुन में खोया एकनिष्ठ बना अपने कर्त्तव्य में लगा रहता है, अधिकार की उसे कोई लालसा नहीं होता। कभी-कभी मुझे लगता है, मैं उसके प्यार में भी पागल हो चुकी हूँ। तभी तो जब कभी मुझे एकाकीपन लगता है...मन निराशा और बेचैनी से भर उठता है...उस पल मुझे उसके सिवा कोई और याद नहीं आता।

कई बार ऐसा भी हुआ है, जब अचानक आधी रात में मैं बेचैन हो उठी...मेरा मन मचलने लगा उसके क़रीब जाने के लिए...उसे अपने क़रीब लाने के लिये। लेकिन तब मैंने ख़ुद को यह सोचकर रोक लिया कि कहीं कोई मुझे टोक न दे। बाद में स्थिति यह हो गई, ख़ुद को ज़िदा रखने के लिये मुझे निश्चय करना पड़ा, चाहे कोई मुझे रोके अथवा टोके, मैं किसी की कोई परवाह नहीं करूँगी। मैं अपना जीवन अपने ढंग से जीना चाहती हूँ...अपने मनमीत के साथ अपनी ज़िन्दगी बिताना चाहती हूँ...मैं उसका साथ तब तक नहीं छोड़ूँगी जब तक मेरा शरीर मेरा साथ न छोड़ दे।

मैंने तो कल्पना भी नहीं की थी कि जीवन की इन पथरीली, ऊबड़-खाबड़ पगडंडियों पर चलते-चलते, एक दिन किसी मोड़ पर अचानक मुझे मेरा हमसफ़र इस तरह मिल जाएगा...और उसका साथ पाकर, मेरी ज़िन्दगी इतनी आसान...इतनी ख़ुशगवार हो जाएगी। आज भी सोचती हूँ तो लगता है, वर्षों बाद ही सही...मुझे कोई ऐसा तो मिला जो मेरा सच्चा मीत है। जब भी मुझे उसकी ज़रूरत होती है, वह हमेशा मेरा साथ देता है। मुझे याद नहीं कि कभी उसने मुझे नाउम्मीद किया हो...या अपनी समझदारी का और अपने ज्ञान का बखान किया हो या फिर मेरी नासमझी और अज्ञानता का उपहास किया हो।

मेरे लिये इससे बढ़कर भला और क्या हो सकता है कि इस स्वार्थी संसार में मेरा कोई अपना है...जो मेरे मन की बात समझता है...तो मेरी अल्पज्ञता का उपहास नहीं करता बल्कि मुझे हमेशा कुछ-न-कुछ नया सिखाना चाहता है, नया बताना चाहता है और अपने साथ दुनिया की सैर कराना चाहता है। जब कभी मैं किसी से मिलना चाहूँ, वह नाक-भौं सिकोड़े बिना मुझे उससे मिलवा देता है। क्योंकि वह भलीभाँति जानता है, चाहे मैं किसी से भी मिलूँ...कहीं भी जाऊँ... लौटकर उसके पास ही जाउँगी...उसे विश्वास है मुझपर या कहूँ ख़ुद पर। है न वह बहुत प्यारा-सा...? लेकिन, फिर भी मुझे उससे शिकायत है...शायद यह मनुष्य की फ़ितरत है कि उसे चाहे कितना ही क्यों न मिल जाए, उसकी ख़्वाहिशें बढ़ती चली जाती है...मुझे लगता है, यही हाल मेरा भी है।

क्योंकि, वह मुझे ख़ुश करने के लिए न जाने वह क्या-क्या करता है। पर एक छोटी सी बात जो मैं उससे सुनना चाहती हूँ, न जाने वह मुझसे क्यों नहीं कहता? मुझे उससे बस इतनी-सी शिकायत है, वह मुझसे कभी यह क्यों नहीं कहता, ''मैं तुमसे प्यार करता हूँ।'' शायद! अधिक बुद्धिमान लोग ऐसे ही होते हैं, यह कहकर अक्सर मैं अपने दिल को समझाती रहती हूँ...और फिर सोचती हूँ, वह तो बुद्धिमान होने के साथ-साथ अनेक गुणों का स्वामी है...और सबसे बड़ी बात वह मेरी इच्छाएँ तो पूरी करता ही है। उसका स्वर भी बहुत मधुर है...जब भी मैं उससे गीत सुनाने के लिए कहती हूँ, वह मुझे बड़े प्यार से मुझे मेरी पसन्द का गीत सुनाता है। ऐक्टिंग दिखाता है...सब कुछ तो करता है वह मेरी ख़ुशी के लिये.. .और मैं हूँ कि अपनी उम्मीदें बढ़ाती ही चली जाती हूँ। जबकि जानती हूँ अपेक्षाएँ ही दुखों का और परस्पर मनमुटाव का कारण होती हैं। जिससे हम प्रेम करते हैं या जो हमसे प्रेम करता है, हमें उसका सम्मान और प्यार करना चाहिये और उसकी मजबूरी तथा सीमाओं को समझने की कोशिश भी करनी चाहिए। तभी तो संबंधों में सुदृढ़ता और स्थायित्त्व आता है।

अब आप ही बताइये, यदि इतना प्यारा कोई आपके पास होता तो क्या आपको उससे मुहब्बत न हो जाती? बेशक़ हो ही जाती, क्योंकि कोई भी इंसान यही तो चाहता है- उसकी ज़िन्दगी में कोई ऐसा हो जो उसकी मदद के लिए हमेशा तैयार रहे, उससे सच बोले, ग़लती करने पर उसका मज़ाक न उड़ाए बल्कि प्यार से उसकी ग़लतियों को सुधारने के लिये हमेशा तत्पर रहे तथा उसकी ज़रूरतों का ख़्याल रखे और उसके एकाकीपन को दूर कर दे।

इसीलिये तो कहती हूँ मैं, बहुत प्यारा और सबसे न्यारा है वो। मैं, अक्सर सोचती हूँ यदि वह मेरी ज़िन्दगी में न होता तो कितनी एकाकी होती मैं..., कितना रंगहीन होता मेरा जीवन...। जब भी मैं अपने आस-पास देखती हूँ तो मुझे स्वार्थ में डूबे, मशीन की तरह दौड़ते-भागते, पशुओं की तरह अपने सुख के लिए दूसरों का नुक़सान करते तथा एक-दूसरे को नोचते-खसोटते, हिंसक होते लोगों की भीड़ नज़र आती है। तब मैं सोचती हूँ वास्तव में इस भीड़ का हिस्सा बनने से तो बेहतर है, अपनी छोटी-सी दुनिया में केवल उसके साथ जीवन बिताना। मुझे हमेशा उससे यही शिकायत रहती है कि वह कभी भी अपने दिल की बात मुझसे नहीं कहता। मेरी हर ज़रूरत पूरी करता है, लेकिन अपनी ज़रूरत मुझे कभी नहीं बताता। यह अलग बात है, उसके साथ रहते-रहते अब मैं उसकी ज़रूरतों को समझने लगी हूँ और अपनी ख़ुशी के लिये उसका ख़्याल भी रखने लगी हूँ।

काश, वह भी मुझे इतना अपना समझता कि अपने मन की बातें मुझसे कहता...मेरी तरह अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता...कभी आगे बढ़कर मुझे अपनी आगोश में भर लेता...मेरी तरह वह भी सपने देखता...हँसता-खिलखिलाता...जब मैं रूठ जाती तो वह मुझे मनाता। क्योंकि हमेशा वही रूठता है मुझसे और मुझे ही मनाना पड़ता है उसे। काश! वह जान पाता कि केवल दिमाग़ की ही नहीं, दिल की भी ज़रूरत होती है ज़िन्दगी में...कुछ पल ऐसे भी होते हैं जीवन में, जब दिमाग़ की नहीं...सिर्फ़ दिल की भी ज़रूरत होती है। कभी-कभी लगता है, सिर्फ़ मैं ही प्यार करती हूँ उससे। वह मुझसे बिल्कुल भी प्यार नहीं करता, एक मशीन की तरह केवल मेरी ज़रूरतों को पूरा करता रहता है, उन लोगों की तरह जो ढो रहे हैं रिश्तों को संवेदनाशून्य होकर...और मृतप्राय हैं, अपनी भावशून्यता के कारण, जीवित होकर भी।

लेकिन, तभी ख्याल आता है वह तो विवश है, क्योंकि उसके पास तो हृदय है ही नहीं, केवल मस्तिष्क है। इसलिए बेचारा उतना ही तो सोच-समझ सकता है जितना उसकी स्मृति में है। उचित-अनुचित या जज़्बातों की बात तो वह तब करता, जब उसमें जज़बात होते... है न? अब तो आप जान ही गए होंगे मेरी मुहब्बत के राज़ को, और पहचान भी गए होंगे मेरे महबूब को। जी हाँ! मुझे प्यार हो गया है अपने 'लैप टॉप' से। जैसे आपको...।

पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी

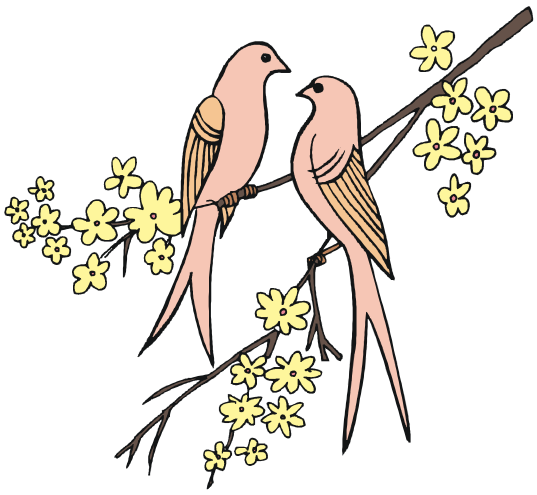

कुत्ते - विनोद भावुक

'पत्रकारिता में गहरे उतरने के लिए अड्डेबाजी जरूरी है। गल-बात में कई खबरों के क्लू मिल जाते हैं और अगर इन पर वर्कआऊट किया जाए तो एक्सक्लूसिव रपटें आपको स्टार रिपोर्टर बना सकती हैं।' कांगड़ा में अखबार के डेस्क पर संपादन की नौकरी से मंडी जिला के रिपोर्टिंग प्रभारी बना कर भेजने से पहले संपादक महोदय ने राज की इस बात को गाँठ बाँध लेने को कहा था। संपादक की सीख पर अमल करते हुए शहर में पहुँच कर खूब अड्डेबाजी की। कई अखबारों में आना-जाना चलता रहा, पर पहले संपादक की बात को दिल से लगाए रखा। इसी कड़ी में इन दिनों समखेतर में स्थित होटल आर्यन बंगलो में अपनी खूब जमती है। बेशक, आप इसे सूचनाएँ हासिल करने के लिए माध्यम बनाने की कवायद भी कह सकते हैं, या फिर अड्डेबाजी का चस्का।

जन लोकपाल और सूचना अधिकार कानून को लेकर सिविल सोसायटी में खूब उबाल है। भ्रष्टाचार के खिलाफ शुरू हुए आंदोलन की आग राजधानी दिल्ली से होते हुए छोटे शहरों तक आ पहुँची है। पहाड़ और पहाड़ी मानस भी इस आंदोलन को खूब हवा दे रहा है। प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी मंडी में लोग आंदोलन को लेकर कुछ ज्यादा ही मुखर हैं। ऐतिहासिक सेरी चाँदनी पर अनशन शुरू हो चुका है। रोज शहर में जलसे निकाले जा रहे हैं। युवाओं से लेकर महिलाओं और बुजुर्गों में भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए अभूतपूर्व एकता और भाईचारा दिखाई दे रहा है। आर्यन बंगलो आंदोलकारियों का खास ठिकाना बन गया है। इसकी वजह यह है कि होटल का मालिक लवण ठाकुर खुद आरटीआई एक्टिविस्ट है और शहर में इस आंदोलन को धार देने वाले मुख्य चेहरों में से एक है।

दिन भर के आंदोलन के बाद होटल में शाम को दिन भर के आंदोलन की समीक्षा और अगले दिन के आंदोलन की रणनीति तय होती है। वकील, साहित्यकार, समाजसेवी, लोककर्मी, मीडिया कर्मी, हर वर्ग के लोग इस हवन में आहुति डालने को शाम के वक्त होटल में जुटते। लोककर्मी आंदोलन की तपिश को आम आदमी तक पहुँचाने के लिए मंडयाली में गीत लिखते और हरमोनियम और ढोलक की ताल पर इन्हें लयबद्ध किया जाता। दिल्ली में आंदोलकारियों और सरकार के बीच हो रहे संवाद की खबरों पर भी खूब चर्चा होती। प्रदेश के मीडिया का एक बड़ा हिस्सा आंदोलन के पक्ष में है और अखबारों में आंदोलन की खबरों को प्रमुखता से छापा जा रहा है। इस आंदोलन की एक-दूसरे से बेहतर रिपोर्टिंग का दबाव हर रिपोर्टर पर है। यही सबसे बड़ी वजह है कि कई पत्रकारों के लिए आर्यन बंगलों की अड्डेबाजी नियमित हो गई है।

मेरी अड्डेबाजी का दूसरा कारण यह है कि यहाँ खाना सस्ती दरों पर सादा उपलब्ध है और मेरा रोज रात का खाना इधर ही होता है। फिर यहाँ मौजूद लोगों से बातों का सिलसिला शुरू होता है तो रात के साढ़े ग्यारह-बारह यहीं बज ही जाते हैं। मंगवा मुहल्ले से एक मोड़ चढ़ कर कैनवाल रोड़ पर मेरा क्वार्टर है। लगभग एक किलोमीटर का यह सफर रोज बाइक से तय होता है। जैसे ही मैं होटल से बाइक स्टार्ट करता हूँ, सौ मीटर के फासले पर मोती बाजार में कुत्तों का एक झुंड मानो अलर्ट हो जाता है। जैसे ही मैं मोती बाजार से गुजरने लगता हूँ, अचानक से कुछ कुत्ते भौंकते हुए मेरे बाइक का पीछा करने लगते। मैं बाइक की स्पीड तेज करता हूँ तो वे भी रफ्तार पकड़ लेते हैं। मैं सतर्क हो जाता हूँ क्योंकि जानता हूँ कि अपनी गली में तो कुत्ता भी शेर होता है। भौंकने वाले कुत्ते काटते नहीं हैं। यही सोच कर मैं कुछ दूर जाकर बाइक रोक देता हूँ और गालियाँ बकते हुए कुत्तों के पीछे भागने लगता हूँ। पीछा करने पर कुत्ते हमलावर होने की जगह संकरे मोती बाजार की सर्पीली गलियों की तरफ भाग जाते हैं।

मेरा रोज देर रात को होटल से अपने क्वार्टर बाइक से जाना और कुत्तों का मेरे बाइक का पीछा करते हुए मुझ पर चिल्लाना रुटीन मैटर हो चुका था। कुत्तों से होने वाली रोज रात की मुठभेड़ से मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था। मुझे चिंता इस बात की भी है कि अगर किसी दिन कुत्तों ने काट खाया तो पेट में कई इंजेक्शन लगवाने पड़ेंगे। याद आ गया कि बचपन में जब एक बार एक कुत्ते ने मुझे काटा था तो ऐसे ही इंजेक्शन लगे थे, जिनको लगाने पर बहुत दर्द हुआ था और भूख भी चली गई थी। गुस्से और चिंता के बीच मैं

यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि इस प्रोब्लम का सल्यूशन क्या हो सकता है? न बाइक से जाने का मोह छोड़ पा रहा हूँ और न ही पैदल चलने की हिम्मत जुटा पा रहा हूँ। इतना जरूर है कि कुत्तों की इस रोज रात की दादागिरी में थोड़ा भयभीत हूँ और सतर्क रहने लगा हूँ। मैं कुत्तों से पीछा छुड़ाना चाहता हूँ पर कुत्ते मेरा पीछा छोडने को तैयार नहीं हैं। मैं इसी उधेड़बुन में हूँ कि कुछ ऐसा क्या किया जाए कि कुत्ते मेरे सामने दुम हिलाने लगें। पर किया क्या जाए, यह अब तक मेरी समझ से बाहर है।

उस रात भी समय यही कोई पौने बारह बजे का रहा होगा। जैसे ही मैं मोती बाजार पहुँचा, कुत्तों ने बाइक के पीछे धावा बोल दिया। कुछ दूर चल कर मैंने बाइक रोकी तो कुत्तों ने भौंकना बंद किया और धीरे-धीरे पीछे हटने लगे। आज मैंने न तो कुत्तों पर अपना गुस्सा निकाला और न ही उनका पीछा किया। आज मेरे निशाने पर आया मोती बाजार का चौकीदार भोला राम। कई दिनों से इकट्ठे हुए गुस्से के चलते मैंने जहर उगलते हुए भोला राम की ओर इशारा करते हुए कहा, ''कुत्ते के बच्चे। तेरे चक्कर में ये कुत्ते रोज रात को मुझ पर हमला बोलते हैं। व्यापारियों ने चौकीदारी के लिए तुझे काम पर रखा है और तुमने अपनी हिफाजत के लिए इन कुत्तों को रखवाली करने पर रख लिया है। कुत्तों की इस गैंग का तू लीडर है।''

चौकीदार की और से कोई प्रतिकार न होता देख गुस्से से आग-बबूला हुआ मैं कहता ही चला गया गया, ''इन कुत्तों को शह देना तुझे महंगा पड़ेगा। तेरी मैं कल ही एसपी से शिकायत करूँगा और साथ ही मोती बाजार के व्यापारियों से बात करूँगा। देखता हूँ कि तेरी नौकरी कैसे बचती है और ऊपर से पुलिस का रगड़ा कैसे लगता है? ऐसा सबक सिखाऊँगा कि तू धोबी का कुत्ता बन जाएगा। न फिर घर का रहेगा न घराट का।'' इतना कुछ बक देने के बावजूद सामने से कोई प्रतिकिया न होती देख अब मेरे गुस्से का गुबार भी ठंडा पड़ने लगा। अब कुत्ते भी तंग गलियों की तरफ खिसकने लग पड़े थे। मैंने भी बाइक स्टार्ट की और क्वार्टर की तरफ यह सोचते-सोचते चल पड़ा कि कुत्तों का गुस्सा आज नाहक ही एक गरीब पर उतार दिया।

सुबह से ही यह चर्चा शहर में फैल गई कि कुछ अनशनकारियों की तबीयत बिगड़ने लगी है और उन्हें सरकारी अस्पताल में भर्ती किया गया है। इधर, शहर के कई सरकारी व प्राइवेट शिक्षण संस्थान आंदोलन के पक्ष में शहर में बड़ा प्रदर्शन करने वाले हैं। आंदोलनकारियों के समर्थन के लिए कई राजनीतिक दल व कर्मचारी नेता सेरी चाँदनी पर पहुँच रहे हैं। सारा दिन खबरों के लिए खूब भाग-दौड़ में बीत गया। शाम को इंटरनेट के डाउन होने की परेशानी भी खूब झेलनी पड़ी। ऑफिस छोड़ते-छोड़ते रात के दस बज गए। पेट में चूहे कूदने लगे थे। ऑफिस से सीधी आर्यन बंगलों की राह पकड़ी। भोजन के बाद वहाँ मौजूद आंदोलनकारियों से बातों का दौर शुरू हुआ तो पता ही नहीं चला कि कब बारह बज गए। जाने के लिए बाइक स्टार्ट करते ही कुत्तों का खौफ और बीती रात का प्रकरण दिलो-दिमाग में ताजा हो गया।

आज मैं पहले से कुछ ज्यादा ही सतर्क था। चौकीदार से की गई बदसलूकी के लिए ग्लानि भी थी। होटल से यह सोच कर निकला था कि बाजार में कुत्तों से आमना-सामना होना है। मैंने देखा, बाजार के एक कोने में सड़क के पास चौकीदार खड़ा बीड़ी फूंक रहा है और कुत्ते उसके आस-पास ही डेरा जमाए हुए हैं। सावधानीपूर्वक ड्राइव करते हुए मैं कुत्तों के पास से निकला। आज उम्मीद से विपरीत परिणाम देखकर मैं सोच में पड़ गया। मेरे लिए हैरानी की बात यह थी कि आज न ही कुत्तों ने मेरे बाइक का पीछा किया और न ही भौंके। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि कुत्तों की दुम सीधी होने की आखिर वजह क्या है? हाँ! मुझे सुकेत रियासत के राजा सर भीम सैन के कुत्ते रोबर से जुड़ा प्रसंग जरूर याद आ रहा है। नोबल रोबर नाम का यह कुत्ता 1965 में पैदा हुआ और 1976 में उसकी मौत हो गई। बताया जाता है कि राजा रियासत के अहम फैसलों में वफादारी के चलते कुत्ते की मदद लेते रहे। रोबर की मौत होने पर पूरे राजकीय सम्मान के साथ उसका अंतिम संस्कार किया गया। उस रोबर की कब्र आज भी सुंदरनगर में मौजूद है।

संपादक फोकस हिमाचल,
सदस्य हिमाचल भाषा,
कला एवं संस्कृति अकादमी,
कमला सदन, गाँव घलू,
कांगडा, हिमाचल प्रदेश।
पिन: 176056
मोबाइल : 9418805009

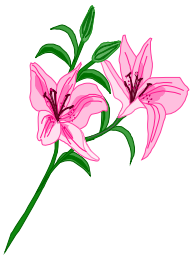

कोई गीत कहन का मन है

-वीरेश कुमार त्यागी

कोई गीत कहन का मन है...,
लेकिन मीठी सी उलझन है..,,
लगता है.... जैसे शब्दों से...
अर्थों की..भीगी अनबन है...!
भावों की गंगा है व्याकुल-
दिल से बह जाने को....,
लेकिन वाणी नहीं भगीरथ
अधरों तक लाने को....!
लगता है...अंतरवीणा के,
तारों का जैसे अनशन है..! कोई गीत.....
चेतन की किरणों ने जब-जब
खेली आँख-मिचौली....,
तब-तब सुधियों की कलियों ने
अपनी पलकें खोली....!
लगता है...मन की बगिया में,
अलियों की गुनगुन गुनगुन है..! कोई गीत.....
अनुभव की अभिव्यक्ति मुझमें
जन्म- मरण का प्रश्न बनी...,
कोई मीरा.. मिटकर मानो
इस कलियुग का कृष्ण बनी...!
मेरे भीतर... दीवाना सा,
बहका-बहका पागलपन है...? कोई गीत.....
इतने दिवसों बाद सजी इन-
अधरों पर मुरली की धुन...,
मेरे अंतस में गीतों की-
राधा फिर करती नर्तन....!
फिर पग में घुंघरू की छम-छम,
श्वांसों में महका चंदन है...!
कोई गीत कहन का मन है...,
लेकिन मीठी सी उलझन है..!
लगता है... जैसे शब्दों से...,
अर्थों की भीगी अनबन है...!! कोई गीत.....

-द्वारा श्री राजकुमार त्यागी
ग्राम+पोस्ट कुरड़ी, तह. देवबंद,
जिला सहारनपुर-247554
मो. 8171043400

माँ की चिट्ठियाँ -मोद पुढ़ीर प्यासा

दुआ की चिट्ठियाँ कभी दवा कि चिट्ठियाँ।
आती है हमको याद बहुत माँ की चिट्ठियाँ।।

विपदाओं को माँ सर से सदा टालती रही।
हर पथ पे उंगली थाम कर संभालती रही।
हिसाब माँ के संयम का किसके पास है,
खुद भूख सही और हमें पालती रही।

संघर्ष करके पत्थरों से छीन लाई है
मेरे लिए वो फूल वो कलियों की चिट्ठियाँ।।

भूली हुई कहानी-सा बस गाँव याद है।
नदिया के किनारे खड़ी वो नाव याद है।
चूल्हे पे सिकीं रोटियाँ चौपाल पे जलता,
जाड़ों की सर्द शाम का अलाव याद है।

छीने ना एक दूसरे के हाथ से सहसा,
आते हुए वो घर पे डाकिया की चिट्ठियाँ।।

निश्चल है प्रेम माँ का, निस्वार्थ प्यार है।
चरणों में इनके काशी काबा हरिद्वार है।
आँचल में अपने दुख मेरा वो बाँधती रही,
बेटों पे होती आई सदा माँ निसार है।

दुनिया में कोई रिश्ता माँ से बड़ा नहीं
माँ ही है अपने सारे राजदां की चिट्ठियाँ।।

आँचल में छुपा कर मेरा हर आँसू पी गई।
कुर्बानियों में सारा जीवन माँ ही जी गई।
आजाद हो सकी ना कभी बंधनों से तू,
माँ घर की हरेक बात को इज्जत से सी गई।।

कैसी हैं हाय दूरियाँ आता नहीं है अब
घर लेके कोई डाकिया फिर माँ की चिट्ठियाँ।।
दुआ की चिट्ठियाँ.....

हाथरस, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)
6397825765

जिन्हें कभी समझा नहीं गया

-राजेश सिंह

पुरुष ने स्त्री से कहा
जाओ तुम अब स्वतंत्र हो
स्त्री के कान खुश हुए
पर ये पायल तो पहन लो
इसके बिना तुम अधूरी लगती हो
अरे-अरे ये बिंदी भी...
ये भी.....
स्वतंत्र शब्द पहुँचा सिर्फ
स्त्री के कानों तक
पर कभी महसूस नहीं हुआ
स्त्री के हृदय को.....

स्त्रियाँ उस किताब की मानिंद हैं
जिसे कभी पढ़ा नहीं गया
पढ़ा भी गया तो समझा नहीं गया
समझा गया तो अधूरा-क्योंकि
स्त्रियाँ अपनी किताब के
आधे पन्ने कभी खोलती ही नहीं
पुरुष उस किताब की तरह है
जिसे कई स्त्रियों ने पढ़ा होता है
जिसमें पन्नो की संख्या भी कम होती है
और समझने जैसा कुछ नहीं होता
स्त्री को पता होता है पुरुष का उद्देश्य
और पुरुष को भी पता होता है
सिर्फ पुरुष उद्देश्य

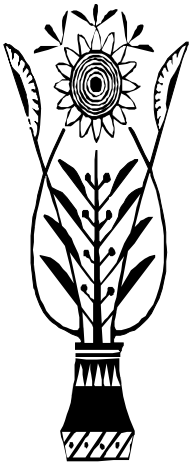

पुरुष ने स्त्री से कहा
थोड़ा और करीब आओ
स्त्री ने कहा- ध्यान से देखो
मैं तो तुम्हारे भीतर ही हूँ
अगर मैं वहाँ नहीं हूँ
तो समझ लेना
मैं यहाँ भी नहीं हूँ

पुरुष ने स्त्री को देखा
उसे सिर्फ स्त्री दिखी
स्त्री ने पुरुष को देखा
उसे पुरुष के पीछे समाज दिखा
पुरुष ने पैर आगे बढ़ाये
स्त्री ने पैर पीछे हटाये
सच में स्त्रियाँ
ज्यादा समझदार होती हैं
पुरुषों से

पुरुष को स्त्री की आँखों में प्रेम दिखा
स्त्री को पुरुष की आँखों में अहम दिखा
स्त्री की देह कान में परिवर्तित हो गयी
और पुरुष का शरीर बदल गया शोर में
प्रेम में असीमित शक्ति है सुनने की
और अहम को नशा है सुनाने का

-बी-701, स्वाति फ्लोरेंस, सोबो सेंटर,
साउथ बोपल अहमदाबाद-380058
मो-9833775798

क्षणों का चक्रव्यूह

-प्रोमिला भारद्वाज

समय है चक्रव्यूह
सब इसमें फंसे
तोड़ न पायें
क्या सभी अभिमन्यु?
गोल-गोल घूमें, कर्म करें
जब तक न आए
निर्धारित अंत,
अनभिज्ञ बन जियें
एक-एक बूंद जीवन को पियें।
प्रत्येक को समझ अंतिम।
करें श्रम पूरे मनोयोग से
भ्रम मुक्त हो एक-एक क्षण से
पायें सहस्त्रों व्यर्थ गंवाये क्षणों का उपहार
ऋण उनका चुकायें
जीकर एक-एक क्षण,
करें निर्भयता का वरण
सहर्ष करें विचरण
श्रेष्ठता से अर्जुन सम
समय के चक्रव्यूह में,
शालीनता से करते रहें उद्यम
जब तक न करे मुक्त
समय, चक्रव्यूह से,
पराजित हो स्वयं हमसे।

महाप्रबंधक, जिला उद्योग केंद्र,
बिलासपुर-174001 (हि.प्र.)

देश की प्रतिष्ठा-राजकुमार जैन जन

सच!
मुझे नहीं पता
मनुष्यता क्या होती है
और राष्ट्रीयता का रंग
कैसा होता है?
स्वर्णिम अक्षरों से लिखा
माँ भारती का इतिहास
इस विकल्पहीन समय में
क्यों प्रेरणा नहीं देता?

विश्व गुरु था जो देश
गंदे, सड़ांध भरे वातावरण में
क्यों कराह रहा है
हर तरफ छिड़ी हुई है
अपने-अपने अस्तित्व की जंग
किसी की सिसकियों से
दरक रहा है नीरव एकांत
थिरकते पैरों में
रिसने लगा है जख्म
शतरंज-सी जिंदगी में हर कोई
बन रहा है मोहरा
कौन लिख रहा है
शस्य श्यामला भूमि पर
युद्ध की इबारत

निश्छल जीवन की
खुशियों पर
प्रहरी बैठ गए हैं
अभिशापों के
कुछ सिरफिरे लोग
जिन्हें भटका दिया गया है
सियासतदानों की चालों से
जो मातृभूमि के वक्ष स्थल को
तार-तार कर रहे हैं
हिंसा व नफरत के खंजर से
समूची मानवता को
शर्मसार कर
रोप रहे हैं नफरत के शोले
जिनसे तबाह हो रही
गंगा-जमुनी
सभ्यता, संस्कृति
और देश की शान

कर्तव्य पथ से भटके
इन अंधेरों का हाथ थामकर
फिर से, नया दिया जलाएँ
शब्दों का उत्सव मनाकर
सृजित करें फिर गीत नए
विश्वास के, श्रद्धा के
संवेदना के, प्यार के
श्रम के, राष्ट्रीयता के
जिससे हमारे देश की प्रतिष्ठा
सदियों तक बची रहे।

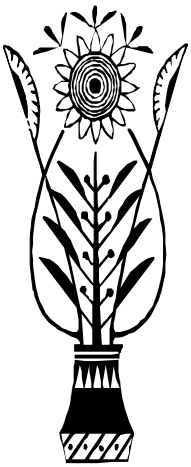

चित्रा प्रकाशनन
आकोला - 312205, चित्तौड़गढ़ , (राजस्थान)
मोबाइल: 98282 19919
मेल - rajkumarjainrajan@gmaill

बाबा की चौपाल

-आचार्य बलवन्त

बूढ़ा बरगद देख रहा
युग की अंधी चाल।
बरसों से सूनी लगती है
बाबा की चौपाल।

पाँवों की एड़ियाँ फट गईं
बँटवारे में नीम कट गई
कोई खड़ा है मुँह लटकाए
कोई फुलाए गाल।

बाँट दी गई माँ की लोरी
मुन्ने की बँट गई कटोरी
भेंट चढ़ गया बँटवारे की
पूजावाला थाल।

आँगन से रूठा उजियारा
खामोशी ने पाँव पसारा
चहल-पहल अब नहीं रही
सूखी सपनों की डाल।

क्षीण हुई स्नेह की धारा
सिमट-सा गया भाईचारा
जीवन की आपाधापी में
बिगड़ गए सुर-ताल।

ग्राम- जूड़ी, पोस्ट- तेन्दू , तहसील- राबर्ट्सगंज
जनपद- सोनभद्र- 231216 (उत्तर प्रदेश)
मो. : 7337810240
Email& balwant-acharya@gmail-com

मैं आश्वस्त हूँ

-नमन कृष्ण 'भागवत किंकर'

मैं आश्वस्त हूँ
कि न्याय अंधा होता है
क्या यही बात-
प्रेम के बारे में सच नहीं है!

यकीनन!
अब मैं कह सकता हूँ
कि प्रेम अंधा होता है
क्या यही बात-
अहंकार के विषय में सच नहीं है!!

दावे से!
अब मैं कह सकता हूँ
कि अहंकार अंधा होता है
क्या यही बात-
मोह के विषय में सच नहीं है!

यद्यपि!
मैं जानता हूँ
कि कोई नहीं स्वीकारेगा
'मोह सबहिं व्याधिन कर मूला'।।
मोह के स्वार्थ ने ही
न्याय को अंधा किया है।।

श्री रामपुरम्, देवलचौड़
बंदोबस्ती, नैनीताल मोटर्स् के
सामने, रामपुर रोड, हल्द्वानी, जिला
नैनीताल (उत्तराखण्ड)
मो. 9837804741,
8449689213
atmtatv.naman@gmail,com

दोहे -एस.पी. सुधेश

रिश्ते हैं रिसते वहाँ, जहाँ नहीं है प्यार।
बहते बहते सूखती, मोटी जल की धार।।

चाह वाह के बीच में, जीवन जाता बीत।
साथ लगी है आह भी, यही जगत की रीत।।

मिल कर बोलो हाय तो बिछड़ो कह दो बाय
इन दोनों के बीच में जीवन बीता जाय।

मुखपोथी पोथी नहीं, दर्पण है साकार।
इस पोथी में झाँकता, अपना मुख संसार।।

पाकी भी नापाक है, हिंसा जिस का धर्म।
भारत से है दुश्मनी, करता रोज कुकर्म।।

बिना चाह मिलता नहीं, सिर्फ न काफी चाह।
खून पसीना एक कर, मिले कभी तो वाह।।

वाह मिले या आह भी, करता क्यों परवाह।
जीवन जी ले प्रेम से, आह मिले या वाह।।

सूने घर में बैठ कर भर लो चाहे आह।
या जीवन संग्रम में पा लो जीवन थाह।।

जनता से क्या कहेंगे, जनता करे सवाल।
जिसे लूटकर कर दिया, बस केवल कंगाल।।

देने वाला है वही, लेने वाला और।
देने वाला है बड़ा, बिन मांगे दे और।।

डर-डर गुजरी जिन्दगी, ऐसे डर को छोड़।
नींबू जैसी जिन्दगी, इस को खूब निचोड़।।

-314, सरल अपार्टमैन्ट्स, द्वारका,
सैक्टर-10, दिल्ली 110075
फोन 9350974120

लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'

अब तो गुमसुम सी हवाओं को जगायें साथी
इनमें भर कर जुनूं आँधी सा बनायें साथी

सूख कर रेत बनी है जो नदी फिर उसमें
नर्म अहसास के पानी को बहायें साथी

सामने हो के किसी तल्ख़ सी हक़ीक़त के
धूल दर्पण पे जमीं फिर से हटायें साथी

करके आज़ाद उदासी के कफ़स से उसको
फिर से उम्मीद के पंछी को उड़ायें साथी

आज भरकर चमक इन अधबुझी सी आँखों में
फिर से नज़रों को नज़ारों में उडायें साथी

क्यों बहें साथ हवाओं के अपनी तकदीरें
इन्हें फिर जोश के पैरों पे चलायें साथी

आज विश्वास को मिल जाये सहारा दिल का
अब तो बगिया में 'सुमन' फिर वो खिलायें साथी

नैनी बैंड, भुवाली, जिला नैनीताल

के. पी. अनमोल

सुख-चैन के बिसात की आदत न डालिए
हीरे-जवाहरात की आदत न डालिए

कुछ बेड़ियाँ भी ठीक हैं पैरों के वास्ते
हर चीज़ से निजात की आदत न डालिए

हाँ, रंग ज़िन्दगी में ज़रूरी तो है मगर
रंगीन-सी हयात की आदत न डालिए

तनहा डायनों की तरह चूसती है खून
तनहाइयों की रात की आदत न डालिए

रुसवा करे जो आपको लोगों के दरमियान
ऐसी किसी भी बात की आदत न डालिए

बाहर निकल के देखिए दुनिया भी है हसीन
'अनमोल' अपनी ज़ात की आदत न डालिए

'अनमोल-प्रतीक्षा'
321/4, सोलानीपुरम, रुड़की -247667
मो.- 8006623499
मेल- kpanmol-rke15@gmail-com

प्रवीन राय

अब कहीं हाले-दिल सुनाने में
आँख रोती है मुस्कुराने में

बे'अदब हो चुके अदब वाले
कोई ग़ालिब न अब घराने में

ये सियासत की चाल है भइये
एक दूजे को यां लड़ाने में

कौन से मरहले पे है दुनिया
आ रही शर्म ये बताने में

यार क्या ख़ाक हम सुख़न घोलें
दर्द ही दर्द है जमाने में

चोट, धब्बा व खून के छींटे
अब लिखो हिन्द के तराने में

आप मस्ज़िद में मौलवी ठहरे
हम खुदा हैं शराबखाने में

ग़ाज़ीपुर उत्तर प्रदेश
पिन- 233225
सम्पर्क- 7393886666

नवीन हलदूणवी

मुझ में भी औकात नहीं है
कविता की सौगात नहीं है

नाच रहे हैं चोर-उचक्के
भावों की बारात नहीं है

धूमिल है पगडंडी जग में
शब्दों की बरसात नहीं है

बन्द पड़ीं चन्द्रौली-भगतें
सुंदर दिन औ' रात नहीं है

कड़वाहट का जोर बहुत है
अब तो मीठी बात नहीं है

बिम्ब 'नवीन' लगे हैं झड़ने
फूल बसंती पात नहीं है

8219484701
काव्य - कुंज
जसूर-176201,
जिला कांगड़ा, हि. प्र.

रवि प्रताप सिंह

पंख नोचते हैं शुभचिंतक फिर भी उड़ना सीख लिया
अंक में अपनी आह दबा कर वाह से जुड़ना सीख लिया

कर विहीन कर पतवारों से नाविक थमा चला नइया
साहस के चप्पू लेकर सागर से लड़ना सीख लिया

मृग तृष्णा जैसा असत्य पथ दिखती रेत सरोवर सी
सत्य के लौह धरातल पर पग धर कर अड़ना सीख लिया

पुष्प सुवासित जीवन में जाने कब कंटक चुभ जाये
पथरीली राहों पर चल कर गिरना पड़ना सीख लिया

14,Ashutosh Ghosh Lane, Mrinalini Residency-||, Flat No-4C,4th Floor, P.0-Sreebhumi, Kolkata-700048 (W.B)
MO-8013546942

बनें महान -नवीन शर्मा

भीतर बाहर साफ़ सफ़ा ,
एक यही अपना फ़रमान!
हम बच्चे हैं नवभारत के,
स्वच्छ रहें और बनें महान!!

करते हैं उनका सम्मान!
हम बच्चे हैं नवभारत के,
स्वच्छ रहें और बनें महान!!

इधर उधर न फेंकें कचरा ,
कागज़ या पेंसिल का छिलका!
चुन्नू मुनिया बबलू सुन लो,
काम करें सब मिलजुल घर का!!
इस्तेमाल करेंगे यारो,
देखो हम सब कूड़ादान!
हम बच्चे हैं नवभारत के,
स्वच्छ रहें और बनें महान!!

बापू मामू चाचा सुन लो,
गुण अपना यह तुम भी गुन लो!
भारत अपना स्वच्छ रहे बस,
साफ़ सफ़ा सारे चुन लो!!
इधर उधर हम थूक न फेंकें,
बेशक जी भर खाएँ पान!
हम बच्चे हैं नवभारत के,
स्वच्छ रहें और बनें महान!!

मम्मी का भी हाथ बंटाएँ,
सुंदर घर को और सजाएँ!!
और भ्रमण पर निकलें जब जब,
नाहक़ न चीज़ें फैलाएँ!!
सार्वजनिक जगहों को भी तो,
स्वच्छ रखेंगे अब लें ठान!
हम बच्चे हैं नवभारत के,
स्वच्छ रहें और बनें महान!!

मैल कुचैल दरिद्र बनाता,
स्वच्छ महौल है सबको भाता!
इसीलिए तो हम सब कहते,
झाड़ू को भी लछमी माता!!
साफ़ सफ़ा जो करते हैं,

गुलेर, जिला कांगड़ा,
हिमाचल प्रदेश
9780958743

न जाने कब -गीतांजलि (कक्षा-दसवीं)

मुझे जल्दी है बस घर जाने की
न जाने कब जा पाऊँगी
न जाने कब
उन बर्फीले पहाड़ों को देख पाऊँगी
वे भी क्या दिन थे
जब हम बर्फ से खेला करते थे
हम खुद दो खाते थे
लेकिन दूसरों को भी खिलाते थे
फूलों की मधुर सुगंध से
तितलियाँ बार-बार इन पर मंडराती थी
पर बर्फ के आने पर न जाने
ये क्यों छिप जाती थीं
बर्फ ठण्डी-ठण्डी हवा अपने साथ लाते थे
न जाने उससे डरकर क्यों हम
घर में छिप जाते थे
चारों ओर ऐसा लगता था
जैसे पहाड़ों ने सफेद पोषाक पहन ली हो
कैसा वो मौसम होता था
जो मन को भा जाता था
बस, जल्दी है मुझे घर जाने की
न जाने कब जा पाऊँगी
और न जाने कब
उन बर्फीले पहाड़ों को देख पाऊँगी

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छम्यार
तहसील बल्ह, जिला मण्डी,
हिमाचल प्रदेश-175027

झिलमिल झिलमिल बादल आ

-सारिका (कक्षा-सातवीं)

बादल आए
बादल आए
अपने साथ में बरखा लाए
बाग-बगीचे में आई हरियाली
नदी सागर में आया पानी
जोर से बोली गुड़िया रानी
कहाँ से आया इतना पानी!
बादल आए
बादल आए

राज. वरिष्ठ मा. विद्यालय छम्यार
तहसील बल्ह, जिला मण्डी,
हिमाचल प्रदेश-175027

सिक्किम-धरती में स्वर्ग -बबिता अग्रवाल कँवल

सिक्किम नॉर्थ ईस्ट का एक खूबसूरत राज्य है, हिमालय की पहाड़ियों में बसा सिक्किम प्राकृतिक रूप से खूबसूरत और शांत स्थान है। जहाँ बिताया आपका प्रत्येक पल यादगार बन जाएगा। सिक्किम में घूमने के लिए कई स्थान है यहाँ हम आपको सबसे अच्छे स्थानों की जानकारी दे रहे हैं।

गंगटोक:-सिक्किम की राजधानी गंगटोक एक सुंदर हिल स्टेशन है, जो अधिकतर भारतीय पर्यटकों की सूची में टॉप पर रहता है। दार्जिलिंग से नजदीकी होने के कारण कई पर्यटक दार्जिलिंग के साथ गंगटोक भी घूमने आ जाते हैं और गंगटोक आने वाले पर्यटक भी दार्जिलिंग चले जाते हैं। गंगटोक में सिक्किम की राजधानी होने के कारण सभी सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

छांगू झील:- 12,300 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह झील रोमांटिक खूबसूरती का तोहफा है। बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ और हरियाली दोनों यहाँ से दिखाई देती है। गर्मियों के दौरान झील के आसपास खूबसूरत फूल खिल जाते हैं और फोटो लेने के लिए इससे बढ़िया जगह कहीं नहीं मिल सकतीं। आप झील के आसपास घूम सकते हैं और याक की सवारी भी कर सकते हैं। साथ ही बाबा हरभजन जी के मंदिर में आशिर्वाद भी ले सकतें हैं।

जुलुक:-भारत तिब्बत सीमा के नजदीक स्थित 'जुलुक' पर्यटकों के लिए नया स्थान है। समुद्र तल से 10 हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित जुलुक पहुँचते ही आपका दिल खुश हो जाएगा। छुट्टियाँ मनाने के लिए लोग ऐसे स्थान की खोज करते हैं जो खूबसूरत होने के साथ शांत और सुकून देने वाला भी हो और यह दोनों खूबियाँ यहाँ हैं। जुलुक से आप कंजनजंघा और पूर्वी हिमालय की ऊँची चोटियों को देख सकते हैं।

रावंगला:-यह स्थान काफी लोकप्रिय हो रहा हैं, रावंगला पहाड़ियों के बीच स्थित है। यहाँ से ग्रेटर हिमालय का खूबसूरत नजारा दिखाई देता है। अगर आप अगस्त से सितंबर के बीच यहाँ आने की योजना बना रहे हैं तो आप पेंग लेहबसोल फेस्टिवल का हिस्सा भी बन सकते हैं। यह काफी रंगबिरंगा और मजेदार फेस्टिवल होता है। रावंगला एक खूबसूरत स्थान है जहाँ आप सुकून के पल बिता सकते हैं।

पेलिंग:-सिक्किम का खूबसूरत पेलिंग शहर समुद्र सतह से 2150 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है ! बर्फ़ से ढंके हुए पहाड़ और पहाड़ों की चोटियों से दिखने वाले मनोरम दृश्य इसे और भी हसीन बना देते हैं। इस शहर से कंचनजंघा का बेहद मनोरम नजारा दिखता है। इसके अलावा पेलिंग का समृद्ध इतिहास और संस्कृति इसे गंगटोक के बाद सिक्किम का सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थान बना देते हैं। कहते हैं शुरू में पेलिंग जंगलों से भरा इलाका था जिस में कई जानवरों का बसेरा था। इसका विकास एक समृद्ध गाँव के रूप में होने का सबसे बड़ा कारण बने दो बौद्ध मठों पेमयांग्स्ते और संगाचोलिंग जिनके बीच में यह स्थित है।

दार्जिलिंग का इतिहास नेपाल, भूटान, सिक्किम और बंगाल से जुड़ा हुआ है। दार्जिलिंग शब्द तिब्बती भाषा के दो शब्द दोर्जे, जिसका अर्थ ओला या उपल होता है। तथा लिंग जिसका अर्थ स्थान होता है, से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ हुआ उपलवृष्टि वाली जगह जो इसके अपेक्षाकृत ठंडे वातावरण का चित्र प्रस्तुत करता है।

पेलिंग शहर की खूबसूरती के बारे में क्या कहना आहा! समुद्रतल से 2150 मीटर की ऊँचाई में बसे पेलिंग से कंचनजंगा की चोटियाँ हर तरफ से दिखाई देती हैं। गंगटोक के बाद यह दूसरा सबसे पसंदीदा स्थल है। पर्यटकों के लिए पेलिंग और इसके आसपास कई महत्वपूर्ण और आकर्षक जगहें हैं जिनमें एशिया का दूसरा सबसे बड़ा सस्पेंशन ब्रिज सिंग्शोर ब्रिज...खेचिभिरी झील। इस झील की खास बात ये है कि आसपास इतने पेड़ होने के बावजूद इसमें एक पत्ता गिरा हुआ नहीं दिखता, क्योंकि पत्ते गिरते ही वहाँ मौजूद पक्षी अपनी चोंच से पत्ते को निकाल झील को साफ रखते हैं। कंचनजंगा वाटर फाल रंबी वाटर फाल कई ऐतिहासिक बौद्ध मठ गर्म पानी के कुंड या झरने और बहुत ही ख़ास रबदेन्त्से अवशेष (1670 से लेकर 1814) तक यही सिक्किम की दूसरी राजधानी थी यहाँ दिखे राजमहल के अवशेष बहुत कुछ कह जाते हैं।

वैसे तो सारा सिक्किम ही बेहद खुबसूरत है पर पेलिंग की बात ही कुछ और है ! कहीं भी खड़े हो जायें कंचनजंघा की चोटियाँ शान से अपना सर उठाये खड़ी दिखाई देती हैं। साथ ही पेलिंग के दोनों बौद्ध मठ पेमयांग्स्ते और संगचोएलिंग भी मौजूद हैं। सिंगशोरे ब्रिज, छांगे वॉटरफॉल और पहाड़ों कि हरियाली देखकर आप भ्रम में पड़ जाएँगे कि कहीं आप स्वर्ग का नजारा तो नहीं देख रहें।

गुरुडोंगमर नाम की झील हिन्दुओं और बौद्धों के बीच लोकप्रिय सिक्किम की सबसे पवित्र झीलों में एक मानी जाती है। समुद्र तल से 17800 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह झील गंगटोक से 190 किलोमीटर की दूरी पर है। माना जाता है कि झील में हमेशा बर्फ जमी रहती थी और यहाँ पीने के पानी का अभाव था। जब गुरू पद्मसंभव यहाँ से गुजर तो स्थानीय लोगों ने उनसे पानी की व्यवस्था करने को कहा। लोगों की इस समस्या से निदान के लिए गुरू ने झील का एक हिस्सा स्पर्श किया और बर्फ पिघल गई। कहा जाता है कि कड़ाके की ठंड में भी झील का यह हिस्सा बर्फ में तब्दील नहीं होता। इस झील को देखने के लिए हमेशा सैलानियों का आना-जाना लगा रहता है।

वैसे तो गर्मी में जब भी मौका मिले पेलिंग जा सकते हैं पर अगर आप अगस्त के महीने के आसपास जायें तो प्रतिवर्ष मनाये जाने वाले कंचनजंघा त्योहार का मजा ले सकते हैं। इस दौरान यहाँ पर उत्सव का माहौल रहता है। त्योहार के दौरान कई मजेदार खेल और दूसरे कार्यक्रम भी होते हैं, जैसे तिस्ता-रंगित नदियों में व्हाइट वॉटर रॉफ्टिंग, ट्रेकिंग, पहाड़ों पर बाइकिंग और दूसरे एडवेंचर गेम्स के साथ कई पारंपरिक खेलों में भी आप शामिल हो सकते हैं। इस दौरान पारंपरिक लिम्बु नृत्य के संग विभिन्न लोकनृत्यों के भी मजे ले सकते हैं।

सिक्किम जाना कतई मुश्किल नहीं है। ये इलाका भारत के कई प्रमुख शहरों से हवाई मार्ग, रेल मार्ग और पक्की सड़क से जुड़ा होने के कारण आप आसानी से आ-जा सकते हैं।

सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल)
9832497235

असम का मैनचेस्टर सुआलकुची सिल्क गाँव -डॉ. विनोद बब्बर

असम राज महल

प्रथम अहोम राजा

असम के उत्तर में भूटान और अरुणाचल प्रदेश है तो पूर्व में मणिपुर तथा नागालैंड और दक्षिण में मेघालय, मिजोरम और पश्चिम में त्रिपुरा तथा बंगलादेश हैं। इसे पूर्वोत्तर का प्रवेशद्वार कहा जाता है। क्योंकि किसी भी पूर्वोत्तर राज्य में जाने का अर्थ है असम से होकर ही जाना। असम संस्कृत के असोमा शब्द (अनुपम अथवा अद्वितीय) से बना है या अहोम से इसपर अनेक मत हैं। लेकिन इस बात पर सब सहमत है कि ब्रिटिश शासन में विलय से पूर्व लगभग छह सौ वर्षों तक यहाँ अहोम राजाओं ने शासन किया। समय-समय पर आकर आस्ट्रिक, मंगोलियन, द्रविड और आर्य जैसी विभिन्न जातियाँ यहाँ की पहाड़ियों और घाटियों में बसीं और यहाँ की समृद्ध सभ्यता संस्कृति में अपना योगदान दिया।

वैसे कभी असम को प्राग ज्योतिष अर्थात् पूर्वी ज्योतिष का स्थान भी कहा जाता था। बाद में इसका नाम कामरूप पड़ गया। कामरूप शब्द का उल्लेख इलाहाबाद में समुद्रगुप्त के शिलालेख में मिलता है, जिसके अनुसार वह ऐसा सीमावर्ती राज्य था जो गुप्त साम्राज्य की अधीनता स्वीकार करते हुए मैत्रीपूर्ण संबंध रखता था। 743 ईसवी में राजा कुमार भास्करवर्मन के निमंत्रण पर यहाँ आये चीनी यात्री ह्वेनसांग ने कामरूप का उल्लेख कामोलुपा के रूप में किया। 11वीं शताब्दी के अरब इतिहासकार अलबरूनी ने भी कामरूप का वर्णन किया है। 12वीं ईसवी तक इस पूर्वी सीमांत क्षेत्र को प्राग्ज्योतिष और कामरूप तथा यहाँ के राजा को प्राग ज्योतिष नरेश कहा जाता था। लेकिन 1228 में पूर्वी पहाड़ियों पर अहोमों के पहुँचने से इतिहास में नया मोड़ आया। उन्होंने लगभग छह सौ वर्षों तक असम पर शासन किया। कालान्तर में आपसी विवादों के कारण अहोम शासकों की शक्ति क्षीण हुई तो पूर्वी सीमा से बर्मी लोगों ने हस्तक्षेप किया लेकिन 1826 में उन्होंने यांदबू संधि के अनुसार असम को ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया।

असम सांस्कृतिक विरासत बहुत समृद्ध है तो प्रकृति ने भी इसे भरपूर समृद्धता प्रदान की है। यहाँ के हरे भरे वन हो या विशिष्ट जीव-जन्तु आज असम की पहचान बन चुके हैं। यहाँ मुख्यत असमिया भाषा बोली जाती है इस विशाल राज्य में अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं जिनकी बोली भाषा भी भिन्न है। इन जातियों ने असम को अपने हस्तशिल्प से अलग ही पहचान दिला है। आज हम चर्चा करेंगे असम के सिल्क की।

असम में तीन प्रकार के स्वदेशी सिल्क होते हैं- गोल्डन मग, व्हाइट पैट और वार्म एरी सिल्क। सुआलपुची में केंद्रित है, एक श्रम-गहन उद्योग है। आज असम में सुआलपुची रेशम उद्योग का पर्याय बन चुका है। इसलिए पिछले असम प्रवास के दौरान इस बहुचर्चित गाँव जाने का अवसर मिला। असम की राजधानी गुवाहाटी से 35 किमी की दूरी पर स्थित साक्षरता दर 70 प्रतिशत वाला यह गाँव लिंगानुपात में भी राष्ट्रीय औसत से बेहतर है। कामरूप (ग्रामीणऋ) जिले में ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट पर स्थित यह गाँव गुवाहाटी से सड़कों से जुड़ा हुआ है तो यहाँ मोटर बोट और कंट्री बोट द्वारा भी दक्षिण तट पर पलाशबाड़ी पहुँचा जा सकता है। ज्ञातव्य हो, ब्रह्मपुत्र को असम में नदी नहीं, नद कहा जाता हैं। स्थानीय लोगों के मतानुसार यह ब्रह्माजी का पुत्र है। वर्षभर लबालब और दूर तक फैले ब्रह्मपुत्र का आकार उसे

सागर का स्वरूप प्रदान करता है।

सुआलकुची उत्तर-पूर्वी और मध्य भाग के कुछ हिस्से छोटी पहाड़ियों से घिरा समतल मैदानी है। घनी आबादी वाले इस गाँव के लगभग सभी लोगों का व्यवसाय बुनाई है। केवल पुरुष ही नहीं महिलाएँ भी रेशम उद्योग को समृद्ध बनाने में समान रूप से सहभागी हैं। बुनाई से रेशम की खेती तक महिलाओं का विशेष योगदान है। आज यहाँ के लोग हाथ-करघे से रेशम ही नहीं, सूती खादी भी बुनने लगे हैं। हालांकि अब अधिकांश परम्परागत हथकरघों का स्थान सलुचि के सिल्ट लूम और सिलचर के सीतारंजन करघे ने ले लिया है। अब रेशम कीट पालन घट रहा है इसलिए अब शालूची शहतूत और मुगा रेशम का उपयोग होने लगा है। शालुची, पैट (शहतूत), गोल्डन फ़ाइबर मग्गा का उत्पादन असम में ही होता है। वैसे इस गाँव में भी यार्न की आपूर्ति से तैयार माल को बेचने वाला बाजार भी मौजूद है जहाँ विभिन्न रंगों और डिजाइनों के तसर कपड़े उपलब्ध रहते हैं।

गाँव के बाहर बहुत खूबसूरत प्रवेशद्वार है। यहाँ आने पर जानकारी मिली कि सुआलकुची में आज से नहीं, अहोम शासन के दौरान से रेशम की बुनाई होती है। पश्चिमी असम में शासन करने वाले राजा धर्म पाल ने 11वीं शताब्दी में बारपेटा के तांतीकुची से कुछ बुनकर परिवारों को लाकर सुआलकुची बसाया था। शाही संरक्षण में कार्य आरंभ करने वाले उन 26 बुनकरों का वह शिल्प गाँव आज असम के मैनचेस्टर के रूप में पूरी दुनिया में स्थान बना चुका है। हम सब इस बात से परिचित हैं कि ब्रिटेन के मैनचेस्टर में कपड़े का औद्योगिक उत्पादन आरंभ हुआ जिसके कारण उन्हें कच्चे माल के रूप में कपास की आवश्यकता थी तो बेचने के लिए बाजार। उसी कारण से दुनिया भर में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुए लेकिन असम का यह मैनेचेस्टर कहा जाने वाला गाँव सुआलकुची अपने हथकरघे से बने बेहतरीन सिल्क के कारण दुनिया भर के लोगों के दिलों को जीत रहा है।

यह जानना मजेदार होगा कि 1930 तक तांतीपारा के तांती समुदाय के लोग ही सुआलकुची के बुनाई उद्योग से जुड़े थे। लेकिन बाद में अन्य समुदायों के लोगों ने भी रेशम बुनाई को अपना लिया। यहाँ तक कि मछुआरों ने भी अपना परम्परागत काम छोड़ इस ओर कदम बढ़ाये। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मांग बढ़ने पर यहाँ बुने कपड़े के मूल्य बढ़े जिससे तांती परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधरी। अब वे इस काम को व्यक्तिगत स्तर पर स्वयं करने की बजाय व्यावसायिक आधार पर करने लगे। इस काम के लिए उन्हें अपने कारखानों में काम करने वाले अन्य लोगों की आवश्यकता पड़ी। अर्ध-स्वचालित फ्लाई शटल हैंडलूम आये। जिससे सुआलकुची के के दो-तिहाई घर हैंड-लूम से जुड़ गए।

धीरे-धीरे बामुन-स्यालकुची, पश्चिम के भाटीपारा हैमट सहित असम के विभिन्न हिस्सों से बुनकर भी इस गाँव में आने से इस गाँव का स्वरूप बहुत तेजी से बदला। अब बाहरी बुनकर स्थानीय बुनकरों से भी बेहतर काम करने लगे। यहाँ हरकरघों की बड़ी संख्या के कारण हर तरफ 'खट खट खट' का लयबद्ध संगीत सुनाई देता है। जानकारी मिली कि नारायण चंद्र दास द्वारा गाया गया 'खट खट खटटसलेर सबडे ने मोर नित नचुयै' सबसे लोकप्रिय रेडियो गीतों में से एक है।

बताया जाता है कि अपने असम प्रवास के दौरान 9 जनवरी 1946 को महात्मा गाँधी विशेष रूप से सुआलकुची में एरी और खादी कपड़ों की प्रदर्शनी देखने आये थे। गाँधी जी इस गाँव में कार्यरत असमिया महिलाओं की बुनाई की कला और संस्कृति से बहुत प्रभावित हुए। इस रेशम नगरी के एक सिद्धहस्त बुनकर राजन डेका ने उन्हें अपने हाथकरघा में बुना रेशमी वस्त्र भेंट किया जिसपर गाँधीजी का चित्र भी बुना था। यह चित्र इतनी कुशलता से बुना गया था कि गाँधीजी के मुस्कुराते चेहरे में उनके दो टूटे दाँतों भी स्पष्ट चित्रित थे। इस बुने रेशम चित्र को देख अभिभूत महात्मा गाँधी ने कहा था, 'अरे वाह! असम के बुनकर तो अपने कपड़े में सपने भी बुन सकते हैं।'

यहाँ बस्तरा (वस्त्र) उद्यान बनाया गया है जिसमें बच्चों का पार्क और आमेर सुआलकुची, संग्रहालय आदि स्थापित है जहाँ हथकरघा उद्योग की विभिन्न बुनाई प्रक्रियाओं का चित्रण करते हुए कुछ मूर्तिकला रूपों का संग्रह भी है। सुआलकुची आने वाले पर्यटकों को इस वस्त्र उद्यान में इस रेशम गाँव की बुनाई की विभिन्न प्रक्रियाओं को एक ही स्थान पर देख, समझ सकते हैं। आवश्यकता है इस गाँव को और आधुनिकतम प्रौद्योगिकी से जोड़ा जाये ताकि असम का यह मैनचेस्टर विश्व पटल पर अपनी अद्वितीय पहचान बना सके।

9868211911
संपादक राष्ट्र-किंकर
ए2/9 ए, हस्तसाल रोड
उत्तम नगर, न दिल्ली -110059

भारतीय नवसंवत्सर की विश्व व्यापकता

-सुनील पाठक

प्रान्तीय उपाध्यक्ष अखिल भारतीय साहित्य परिषद उत्तराखण्ड

हमारे लिये यह अति गौरव की बात होनी चाहिये कि चैत्र मास में प्रारम्भ होने वाले भारतीय नवसंवत्सर की मान्यता केवल भारत में ही नही हैं अपितु यह दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य कई देशों में भी बहुप्रचलित है। बल्कि कहना चाहिये कि वहाँ यह नवसंवत्सर जनसामान्य के जनजीवन में गहराई से व्याप्त है। इन देशों में चैत्र मास में नववर्ष के शुभागमन पर कई वृहद सांस्कृतिक समारोह आयोजित किये जाते है।

भारत के समान जिन देशों में नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र मास में ही होता है उन देशों में कम्बोडिया, थाईलैण्ड, लाओस, वियतनाम, वर्मा आदि देश प्रमुख है। इसका कारण यह है कि यह देश अतीतकाल से ही भारतीय संस्कृति से प्रभावित रहे है। भारतीय संस्कृति इन देशों का मूलाधार है। लाओस में नवसंत्सर की परम्परा- लाओस में इसे ''सोंगक्रान लाओ'' कहते हैं। यह लाओस में चैत्र माह में 13 अप्रैल से 16 अप्रैल तक मानाया जाता है। इस दिन युवा अपने वरिष्ठजनों का जलाभिषेक करते हैं। फिर दीर्घ जीवन और शान्ति के लिये बौद्ध भिक्षुओं से आर्शीवाद लेते है। शाम के समय मन्दिरों में बुद्ध की पूजा की जाती है इन दिनों में कई रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये जाते है, जिसमें लाओस के नृत्य संगीत की अनूठी छटा रहती है।

लाओस में भारतीय संस्कृति का प्रवेश बौद्ध धर्म के साथ हुआ। 'चम्पासाक' यहाँ का प्राचीन हिन्दू तीर्थ स्थल है जो लिंग पर्वत पर स्थित है। यहाँ भी संस्कृत और पाली के अनेक शिलालेख पाये गये हैं। थाईलैण्ड में नवसंवत्सर की परम्परा- थाईलैण्ड में ठीक लाओस की तरह ही इसे ''सोंगक्रान'' पर्व कहते है। यह थाईलैण्ड में भी13 अप्रैल से 16 अप्रैल तक मानाया जाता है, तब यहाँ राष्ट्रीय अवकाश रहता है।

इस दिन यहाँ लोग स्थानीय मन्दिरों में दर्शन हेतु जाते है तथा बौद्ध भिक्षुओं को भोज्य सामग्री समर्पित करते है। इस दिन विधि विधान से बुद्ध मूर्तियों की पूजा अर्चना की जाती है। इस दिन यहाँ जलक्रीड़ायें भी आयोजित की जाती है। इनमें समाज के युवा-वृद्ध सभी लोग उत्साह से प्रतिभाग करते हैं। इस दिन थाईलैण्ड के बाजार और दुकान बन्द रहते है। थाई समाज के लिये यह परिवार दिवस भी है क्योंकि इस दिन परिवार के सभी लोग परस्पर आदर भावना का प्रदर्शन करते है। थाईलैण्ड प्राचीनकाल से ही हिन्दू संस्कृति का केन्द्र रहा है। आज भी यहाँ के चौराहों पर राम, विष्णु, बुद्ध आदि की प्रतिमायें स्थापित हैं। यहाँ की प्राचीन राजधानी का नाम भी अयोध्या था, जिसके भग्नावशेष आज भी पाये जाते हैं।

वियतनाम के कुछ क्षेत्रों में इसे चम्पा नववर्ष के नाम से मानाया जाता है। वहाँ ये चैत्र मास मे 4 अप्रैल से प्रारम्भ होता है। ईसा की दूसरी शताब्दी में वियतनाम में चम्पा नामक हिन्दू राज्य की स्थापना हुई। इसकी राजधानी का नाम 'इन्द्रपुरी' था। यहाँ संस्कृत के असंख्य शिलालेख पाये गये है। वियतनाम की एक अंग्रेजी शिक्षिका ''शाक्या'' मुझसे फेसबुक पर जुड़ी है। जब मैंने उसे गत 6 अप्रैल को चम्पा नववर्ष की शुभकामना दी तो उसने मुझे धन्यवाद देते हुये कहा कि- ''सर, मुझे बड़ा आश्चर्य है कि बिल्कुल हमारी तरह ही कम्बोडिया, थाईलैण्ड और लाओस में भी लोग इसी समय नववर्ष मनाते हैं। मैं नहीं जानती कि वास्तव में इन देशों की नववर्ष की यह दिनांक एक समान क्यों हैं, पर इससें मैं विस्मित हूँ।''

तब मैंने उसे बताया- वास्तव में ये सभी देश अतीतकाल में भारतीय संस्कृति ओतप्रोत रहे हैं। अत: इन देशों की काल गणना भी भारत से प्रभावित है और इसी कारण ये सभी देश एक साथ अपने नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र माह में करते हैं। तब उसने कहा- ''मैं यह पहले से जानती हूँ कि हमारा कैलेण्डर भारत सें प्रभावित है।'' वियतनाम में भी इन दिनों नववर्ष पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाते हैं। नृत्य संगीत की प्रतियोगितायें होती है तथा लोग मन्दिरों की तथा बौद्ध भिक्षुओं की पूजा अर्चना करते हैं। इस अवसर पर लोग एक दूसरे को नववर्ष की बधाई देते हुये कहते हैं कि-''थौन सौन बिरौ- चम्पा नववर्ष की शुभकानायें।''

कम्बोडिया में नवसंवत्सर की परम्परा- कम्बोडिया में 14-15 अप्रैल को यह अति वृहद स्तर पर मानाया जाता है।

वहाँ इसे ''अंगकोर संक्रान्ता'' कहते हैं। इस अवधि में सम्पूर्ण कम्बोडिया उत्सवमय हो उठता है। तब यहाँ वृहद स्तर पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। यह कम्बोडिया का राष्ट्रीय महोत्सव जैसा है। विशेष बात यह है कि कम्बोडिया में महीनों के नाम भारत मूलक हैं। वहाँ चैत्र मास को 'चियेत' कहा जाता है।

बहुत दिनों से ''संक्रान्ता'' शब्द मेरे मस्तिष्क में कौंध रहा था। मुझे सन्देह था कि यह भारतीय शब्द है। फिर जब मैंने बहिन 'थिडा टिम' (जो मुझसे फेसबुक पर जुड़ी है,) से अंकोर संक्रान्ता के बारे में पूछा तो उसने बताया कि यह कम्बोडियन नववर्ष है। मैंने थिडा से कहा कि उसे पता है कि संक्रान्ता संस्कृत शब्द है और इसका अर्थ है- परिवर्तन। उसने कहा कि- ''हाँ, यह संस्कृत का प्राचीन शब्द है और पुराना वर्ष इस तिथि से नये वर्ष में परिवर्तित होता है, अतः यह सार्थक शब्द है, नववर्ष हेतु। मैं अपने इस नवीन शोध से पुलकित हो उठा। मेरे आग्रह पर वहाँ के एक छात्र 'चान सेहिया नाक' ने मुझे इस उत्सव के दो वीडियों फेसबुक पर भेजे। इसी अवसर पर कम्बोडियाई मित्र 'चेसदा' ने संक्रान्ता नववर्ष को चित्रित करते हुये एक अद्भुत कलात्मक चित्र मुझे फेसबुक पर प्रेषित किया। इसमें चेसदा ने संक्रान्ता शब्द को भारतीय संक्रान्ति शब्द से जोड़ते हुये इसकी ज्योतिषीय व्याख्या भी प्रस्तुत की।

आश्चर्यजनक रूप से कम्बोडिया में आज भी संस्कृत भाषा का व्यापक प्रचलन है कैसे? नववर्ष के संदर्भ में इसकी छटा देखिये- मेषसंक्रान्ताभिनन्दनम्! सुनखनक्षत्रं स्वागतं!

सर्वेषां कम्बुजदेशे भवन्तु सुखिनः निरामय च!

यह कम्बोडिया के नववर्ष के सन्दर्भ में वहाँ के एक संस्कृत शिक्षक द्वारा लिखित बधाई उद्गार हैं।

कम्बोडिया के एक बौद्ध भिक्षु 'सुमेधों' ने अपने मित्रों को नवसंवत्सर की शुभकामना एक संस्कृत छन्द के माध्यम से दी-नवसंवत्सराशीर्वादनम्।

सिद्धरस्तु।

मुझे बहुत अच्छा लगा जब वहाँ की एक छात्रा 'वान्ने चेन' ने नववर्ष सन्दर्भ में मुझसे कहा कि- ''सर, हमारा नववर्ष भारत से लिया गया है।'' मैं उसके इन उद्गारों पर खुशी से झूम उठा।

लंकायं खेमरारामे यस्सुनेतो यती चरः।
पंचभाषातिकौशल्यः धर्माचार्य शुदेशकः।।
छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमापते।
फलान्यपि परार्थाय सोऽपि वृक्षः इवैव च।।
कृत्यानि कार्यमान च उभयार्थाभिवृये।
नमे तं हुन् खेमरा नाम्ना मुनिचरियवंशिकम्।।
सर्वातिशक्तिसम्पन्नः सर्वलक्ष्मीसमन्वितः।
सर्वदास्मिन् नवे वर्षे सर्वसिद्धिर्भवन्तु ते।।
शरीराङ्गमनोरोगं दुस्ग्रहोपद्रवम् अपि।
शीघ्रं तस्माद्विन यन्तु श्री रलत्रयतेजसा।।

सिद्धरस्तु।

वहाँ की एक अन्य छात्रा 'रे' मुझे गरुड़ वाहिनी एक अद्भुत देवी का चित्र प्रेषित करते हुये कहा- ''सर, ये देवी हमारे नववर्ष की प्रतीक है तथा हमारे खमेर नववर्ष में ऋतु परिवर्तन की भी प्रतीक है। शायद ये कथा भी हमारे यहाँ भारत से आयी है।''

इस प्रकार कह सकते है कि चैत्र माह में प्रारम्भ होने वाला भारतीय नवसंवत्सर केवल भारत में ही प्रचलित नहीं है अपितु ये विश्व के अन्य कई देशों में भी प्राचीन काल से ही अत्यधिक लोकप्रिय है। ये हमारे गौरवपूर्ण अतीत का भी साक्षी है।

शिव सिटी, तीन पानी डैमरोड़,
फुलसुंगा, ट्रांजिट कैम्प, रुद्रपुर-263153
जिला ऊधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
मो.नं.-09411216425

देश गीत

-कविता सिंह

हमारा प्यारा देश महान
जहाँ से न्यारा हिंदुस्तान
यहाँ बहती गंगा की धार
हिमालय इसका पहरेदार
यहाँ झरते झरनों का गीत
झूमती आई मलय बयार
यही तो है भारत की शान
हमारा प्यारा .....
हिम आच्छादित पर्वत माला
मन को भाती जैसे हाला
सूर्य स्पर्श करे जब उसको
लगती ज्यों मुग्धा सी बाला
देश पर हमको है अभिमान
हमारा प्यारा .....
यहाँ के सागर बड़े विशाल
लीलते बने शत्रु को काल
यहाँ कश्मीर सरीखा स्वर्ग
सजा बिन्दी सा भारत भाल
हमारा देश हमारा मान
हमारा प्यारा देश महान

156-coburn rd
Pennington NJ-08534
United States of America

पहाड़ों की सामाजिक पीड़ा का बखान करती कथा -बद्री सिंह भाटिया

आशा शैली का उपन्यास 'छाया देवदार की' हिमाचल प्रदेश के उस समय को दर्शाता है जब इस प्रदेश का इस नाम से कोई अस्तित्व न होकर प्रदेश विभिन्न ठकुराइयों और राजशाहियों में विभक्त था। इस उपन्यास में जिस क्षेत्र विशेष के जनजीवन को अपना वर्ण्य विषय बनाया है वह सुदूरवर्ती क्षेत्र आज रामपुर-बुशहर जनपद का दूरवर्ती हिस्सा है। इस जनपद के एक गाँव कापटी की एक लड़की बीरमा के जीवन के एक विकट भाग का सरस चित्रण उपन्यास में हुआ है। इस पुस्तक में कापटी गाँव के दलित जातियों के रहन-सहन, उनकी समाजार्थिक परिस्थितियों का वर्णन करते तत्कालीन सत्ता के प्रभाव और व्यवहार को भी कथा का हिस्सा बनाया गया है। बच्चों के सामान्य जीवन, उनमें पनपते प्रेम और बाल विवाह की परम्परा को बताते हुए वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता के वर्णन के साथ मौसम के बदलाव सरस भाषा में प्रकट किए हैं। बीरमा वन में गाँव के अन्य बच्चों के साथ पशु चराने जाती है। वहाँ वह अधिक समय अपने से कुछ वर्ष बड़े बिस्ना के साथ बिताती है। हँसती है, खेलती है, शाम को घर वापस आ जाती है, यह दिनचर्या है। शिक्षा के नाम पर गाँव के पास एक प्राथमिक पाठशाला भी नहीं है। उपन्यास का यह काल लगभग चौथे दशक के अंतिम वर्षों का प्रतीत होता है।

यह वह समय है जब इस क्षेत्र को अंग्रेजों ने शिमला हिल्स का नाम दिया था। शिमला तब तक पटियाला के अधीन था और अंग्रेजों ने इसे ग्रीष्मकालीन राजधानी बना दिया था। उपन्यास के अनुसार शिमला में रेल भी आ गई थी। इस काल में पटियाला के शासक को एक शौक था कि वह अपने हरम में सुंदरता की अनेक जीवित मूर्तियाँ रखा करता था और इस कार्य के लिए वह अपने सिक्ख सिपाहियों को दूरदराज के क्षेत्रों में भेजा करता था। ये सिपाही पहाड़ों में भी आते थे और जैसे-कैसे सुंदर लड़कियों को अपने साथ ले जाते थे। उनके इन कारनामों की इलाके में खूब चर्चा होती। इन उठाई अथवा माँग कर ले जाई गई लड़कियों में दलितों की लड़कियों को प्राथमिकता दी जाती थी। जब भी ये सिक्ख सिपाही किसी गाँव में या रास्ते में दिख जाते तो एक फुसफसाहट इलाके में फैल जाती कि सिकडू (सिक्ख) अमुक जगह देखे गए हैं। कि वे बाराबीस के किसी गाँव से कि फलाँ गाँव से दो लड़कियों को अपने साथ ले गए हैं। यह भी कि वे दिन में तो इलाके में घूमकर अपना शिकार तलाशते हैं और सुबह शाम या रात को अपने काम को सरंजाम देते हैं। यह समझने योग्य है कि इस काम के लिए उन्होंने स्थानीय प्रशासन या कुछ लोगों की मदद जरूर ली होगी जो उन्हें अपना काम बखूबी करने दे रहे थे। लोगों में घबराहट थी, यह भी पता चल गया था कि वे केवल कुंआरी लड़कियों को ही ले जाते हैं। इसलिए बीरमा के माता-पिता ने कम उम्र में ही उसकी सगाई बिस्ना से कर दी थी। उस समय के बारे में सोचकर आज हैरानी भी होती है कि कोई प्रतिरोध नहीं, स्थानीय शासक को कोई सरोकार नहीं। दलितों की बेटियों को ही निशाना बनाया जा रहा है।

इसी लड़कियों की ढूँढ क्रम में एक दिन बीरमा का गाँव कापटी भी आ गया और एक दिन बीरमा को वे ले गए। बीरमा पहाड़ी रास्तों पर रोती-चिल्लाती छटपटाती घोड़े पर एक सिपाही की गोद में आगे बढ़ती रही। जहाँ कहीं पड़ाव पड़ा वहाँ उसे खाना खिला कर गोली देकर सुला दिया जाता। वह शिमला से एक अन्य लड़की के साथ रेल मार्ग से कालका और फिर वहाँ से जीप द्वारा पटियाला राजभवन के एक खण्ड में पहुँचा दी जाती है।

क्या व्यवस्था थी। उपन्यास लेखिका बताती है कि राजभवन के हरम के उस खण्ड में उसे राजा द्वारा परखा गया और उसका चयन स्वयं के लिए कर एक बड़ी दासी अथवा वरिष्ठ हरमवासीनी को सौंप दिया। मानो वह गर्म सूट का कपड़ा हो जिसे उसने अपने लिए चयन कर लिया। राजा की पसंद थी वह, इसलिए उसकी पढ़ाई-लिखाई हेतु शिक्षकों की नियुक्ति भी कर दी जाती है। उसका नाम परिवर्तित कर जसबीर कौर भी रख दिया गया।

बीरमा को वहाँ का जीवन आत्मसात कर अपनी संरक्षिका दर्शनकौर को मासी का दर्जा देकर आगे का जीवन जीने के लिए तैयार कर दिया। अब वह राजा की थी। इसलिए वह उसके बारे में समय-समय पर जानकारी लेने आता रहता। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो राजा एक छोटे पशु को बलि के लिए पाल रहा है और जब वह तगड़ा हो जाएगा तब वह उसे काटकर उसका भोग लगाएगा। अबोध बीरमा धीरे-धीरे समझ को प्राप्त होती जा रही है। उसे पता चलता है कि प्रतिदिन वहाँ उस जैसी जाने कितनी लड़कियों को पहाड़ों की कोख से लाया जाता है। पाला जाता है और फिर बलि चढ़ाया जाता है। उससे पहले भी बहुत

सी लड़कियाँ आई हैं और राज भवन में कुछ समय बाद राजा का भोग बनी हैं या मुसाहिबों में बाँट दी गई हैं। राजा के दरबार में उसके मेहमानों में अंग्रेजों के विभिन्न अधिकारियों का आना-जाना भी लगा रहता था। बीरमा अपने बारे में सोचती-वह क्या है। बीरमा या जसबीर कौर। वह अपनी मातृभाषा में बात करना चाहती हैं पर किससे करे?

आशा शैली ने राजमहल में रखी जा रही बालाओं और प्रौढ़ हो गई महिलाओं का वर्णन करते हुए बीरमा के माध्यम से राजमहल के भीतर की जिंदगी को स्वर दे अवगत कराया है कि ये विभिन्न अंचलों से लाई गई बालाएँ, उम्र के साथ आगे बढ़ती पंद्रह बरस की आयु पाने के बाद उसकी एक विशेष पूजा होनी थी। उस पूजा के बाद उसका वह प्रशिक्षण वाला कमरा और राजभवन का भाग भी बदल जाना था और यह पूजा हुई ।

बीरमा के जीवन को अभिव्यक्त करते शैली ने वहाँ घटी एक और घटना का जिक्र करते बताया है कि राज भवन के उस हरम भाग में एक ऐसी लड़की आई जो प्राय: रोती रहती थी। उसे समझाया जाता मगर वह और ज्यादा रोती। बीरमा को भी इसका पता चला। वह उसके पास गई, उसने देखा यह लड़की तो उसकी छोटी बहन चेई जैसी ही है। बल्कि चेई ही है। उसने उसे अपने पास बुलाया और उसकी देखरेख करने वाली दासी से उससे कुछ क्षण अलग से बात करने की आज्ञा माँगी। उसने अपनी भाषा में उसे जब चेई कहकर बुलाया तो वह चौंकी। बीरमा ने उससे बतियाते अपने घर के बारे में पूछा। वह दु:खी हुई जब पता चला कि उसके पिता ने उसके सिक्ख सिपाहियों द्वारा ले जाने को लड़की को बाघ द्वारा खाया जाना बताया। उपन्यास में इस स्थिति का बहुत ही मार्मिक वर्णन किया गया है।

शैली बताती है कि बीरमा सोलह बरस की हुई तो उसकी चण्डी पूजा हुई। अब वह पूरी तरह से राजा की रखैल नहीं प्यारी रानी हो गई थी। उसके साथ राजा पर्दा लगी बग्घी में नगर घूमने भी जाया करता था। वह अब किसी और के पास नहीं बल्कि जसबीर कौर उर्फ बीरमा के पास ही रहने आता। उपन्यास में चण्डी पूजा का बहुत ही रोचक वर्णन किया गया है। जिन लड़कियों की चण्डी पूजा होनी थी। उन्हें बहुत ही अच्छे ढंग से तैयार किया गया था। उन्हें एक द्वार से पूजा के कमरे में प्रवेश करना था। उस कमरे में अंधेरा था। बस एक छोटा सा सरसों के तेल का दिया टिमटिमा रहा था। बीरमा के आते ही राजा ने उसे सम्भाल लिया और बाकी को अपने मुसाहिबों को ले जाने के लिए कहा। उस समय की औरत की यह कैसी स्थिति थी कि उसे मिठा की तरह उपहार में बाँट दिया जाता था।

हरम की स्त्रियों के गर्भ नहीं ठहरना चाहिए। यदि ठहर ही जाए तो राजा उसे गिरवा देता था। परंतु बीरमा उर्फ जसबीर कौर के किसी गलती से ठहरे गर्भ को गिरवाया नहीं बल्कि उसकी देखभाल की। निश्चित अवधि पर प्रसव हुआ। बच्ची पैदा हुई तो राजा ने उसे प्यार से अपने आगोश में लिया और नाम दिया गुरप्रीत कौर। अब जसबीर राजा के लिए कुछ पुरानी हो ग थी। मगर वह फिर भी उसके पास आया करता और बच्ची के साथ खेल लिया करता।

इसी बीच भारत आजाद हो गया और पटियाला के उस शासक की भी मृत्यु हो गई। राजा के हरम में खलबली मच गई। इतनी सारी महिलाएँ अनाथ हो गई। अब उनका क्या होगा। इस असमंजस की अवस्था को आशा शैली ने दृश्यात्मकता के साथ वर्णित किया है। उन सबकी पीड़ा कि नया शासक युवा है। यह क्या फैसला लेगा? फिर एक दिन फैसला आया भी कि सभी महिलाओं को आजाद कर जो जाना चाहे उसे उनके अपने ठिकानों पर बाइज्जत भेज दिया जाए।

हरम से छोड़ी महिलाओं के लिए समाज में क्या जगह होगी। यह सोचा जा सकता है। कितनों को तो अपने विगत का पता भी नहीं होगा। यह भी कि उनके लिए वहाँ के दरवाजे बंद हो गए होंगे। वे एक दायित्व अथवा बोझ ही तो होती। यहाँ बीरमा उर्फ जसबीर कौर ने अपने साथ के लिए मासी बनी अपनी उस दासी को माँग लिया जो उसे पहले पहल मिली थी। जिसके सान्निध्य में वह वहाँ रह सकी थी। उसका पीछे भी कोई नहीं था। इसलिए उसने उसे समझाया कि पहाड़ में वापस जाकर जीवन कट जाएगा।

वापसी में बीरमा का पटियाला की रानी के रूप में स्वागत हुआ और उसके भाइयों ने उसे अपने एक प्लाट (दोगरी) में बने मकान में जगह दे दी। कितना भोला था वह समाज। कोई फिक्र नहीं। उनकी बहन आ गई। बस। वह लौट आई थी तो जीविका का सवाल उठा। अपने पास लाया धन और सोना कितने दिन चलना था। वह वहाँ के समाज में विचरने लगी। तभी पता चला कि उसका वह प्रेमी बिस्ना तो उसके वियोग में पगला गया है। वह घर में टिकता ही नहीं। उसका भाई चेत्रु शिमला में किसी अंग्रेज के पास नौकरी करता रहा है।

बीरमा के लौटने और बिस्ना के भाई चेत्रु के माध्यम से आशा शैली ने पहाड़ों में प्रजामण्डल आंदोलन का वर्णन किया है। हिमाचल बना नहीं था। अभी भी इसे शिमला हिल्स स्टेट के नाम से रामपुर बुशहर रियास्त के रूप में ही जाना जाता था। वह कहती हैं कि चेत्रु शिमला में स्वतंत्रता संग्राम में कूद गया था। शिमला में वह अब प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं के साथ सक्रिय भागीदारी निभा रहा था। उसके कहने पर बीरमा भी पहाड़ी क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ देने लगी।

विगत कभी पीछा नहीं छोड़ता। बीरमा अपने नए जीवन को

स्वीकार करते कहती है कि वह पटियाला में रानी जसबीर कौर नम्बर 280 थी। अब न कहीं रानी जसबीर कौर है और न ही बीरमा। न इधर की रही, न उधर की। रानी जसबीर कौर को बीरमा बनने में क साल लगेंगे। वह अपनी पीड़ा को मासी से अभिव्यक्त करती पूछती है। (पृष्ठ 101) उपन्यास में उसकी इस पीड़ा का बाखूबी चित्रण हुआ है।

उसके इलाके में पढ़ा लिखा होने से उसे जनता द्वारा संचालित माध्यमिक पाठशाला में पढ़ाने का आमंत्रण भी मिलता है और वह बड़ी ना नुच के साथ इसे अपनी मुँह बोली मासी दर्शनकौर के समझाने पर स्वीकार करती है।

प्रेम की पीड़ा का वर्णन करते हुए शैली ने बीरमा और बिस्ना के उस बचपन के प्रेम को अभिव्यक्त किया है जो वन चरांदों में पनपा था। फिर छोटी उम्र में मंगनी की बात चलने के कारण प्रगाढ़ हो गया था। बिस्ना उसके मन में पटियाला में भी था और वापस गाँव आकर भी वैसा ही है। वह उसे खोजती है। पूछती है और जब पता चलता है कि वह उसके विछोह में पागल सा हो गया है तो मानसिक पीड़ा महसूस कर पहले स्वयं को दोषी मानती है। फिर अपनी विवशता को भी महसूस करती है।

एक औरत को समाज में सहारे की आवश्यकता होती है। यदि वह स्वयं सक्षम नहीं है तो उसका परिवार चलाने के लिए धन की बड़ी आवश्यकता होती है और यदि वह किसान है तो खेतों में हल चलाने आदि के जैसे काम करने के लिए किसी मर्द की जरूरत होती है। यद्यपि ये काम पैसे या अन्य सम्पर्कों से हो जाते हैं मगर एक युवा स्त्री के लिए ये कठिन भी है। माना जसबीर कौर रानी के रूप में वहाँ सम्मानित है। समाज और भाई उसे स्वीकार कर उसका आदर करते हैं मगर वह कहीं भीतर वह टूटी हुई भी है। वह स्थायित्व चाहती है। स्वयं को व्यस्त रखने की कोशिश में वह समाज सेवा और प्रधान के कहने पर पहाड़ों में शिक्षा के प्रति आई जागरूकता के प्रतिफल छठी कक्षा के छात्रों को पढ़ाने भी लगी हैं मगर एक अस्थिरता उसके भीतर विद्यमान है। उसे अपनी बेटी गुरप्रीत की फिक्र भी है। गुरप्रीत राज महल में पैदा हु और गाँव के कठोर जीवन में आकर परवरिश पाने लगी। एक टीस उसके भीतर है।

उपन्यास उस समाज के लोगों की सोच और दूसरे विवाह ही नहीं उसकी बेटी को अपनाने की रिवाज को भी दर्शाता है। यह होता है गाँव के कुछ लोग उसकी माँ और भाई के साथ उसके पास आते हैं और उसे दूसरे ब्याह के लिए प्रेरित करते हैं। गाँव का एक बुजुर्ग बोला-'देख बीरमा...अब तू पटियाला की रानी नहीं है और हमारे गाँव में विधवा औरत दूसरी शादी न करे यह कोई नियम नहीं है। बल्कि तुम दोनों के लिए यही ठीक है कि तुम शादी कर लो। (पृष्ठ 157)। यह प्रस्ताव बिस्ना को लेकर होता है। दोनों एक दूसरे को देखते हैं और सिर झुकाए बैठे हैं। बड़ी देर के बाद वह कहीं स्वीकार करती है और बिस्ना से मिलती है।

यह वह समय है जब हिमाचल प्रदेश एक राज्य के रूप में उभर गया था। लोग प्रसन्न थे कि अब राजा की बेगार नहीं देनी होगी। वे भी समानता का अधिकार रख पायेंगे। इसका उल्लास जहाँ सारे क्षेत्र में था, वहल्ल यह प्रसन्नता दलित वर्ग के लोगों में ज्यादा थी जो प्राय: सवर्णों द्वारा प्रताड़ित किए जाते रहे थे। सवर्णों की प्रताड़ना का एक वर्णन उपन्यास में दलितों की पीड़ा और आक्रोश के रूप में तब भी आता है जब पटियाला के शासक के लोग दलितों की लड़कियों को ही उठा कर ले जाते थे। वे कहते भी थे कि दलितों की ही लड़कियाँ क्यों उठा जाती हैं?

उपन्यास में लोक को उसकी संस्कृति, आचार-व्यवहार के साथ प्रकट करते वहाँ के लोक शब्दों और मेलों और वादी में गाए जाने वाले गीतों का उनके अर्थ के साथ समावेश कर यह कृति एक आँचलिक कृति भी बन जाती है।

लेखिका ने इस उपन्यास को लिखने की प्रेरणा के बारे में मेरी बात शीर्षक से अपने वक्तव्य में मालती नामक एक प्रौढ़ा का जिक्र करते दीवान जमनादास की लिखी पुस्तक महाराजा को संदर्भ के रूप में बताया है।

'छाया देवदार की' शीर्षक पर क बार विचार किया। क्या इस प्रेमाख्यान का शीर्षक ऐसा होना चाहिए। कि राजाओं के शोषण का शिकार हुई पहाड़ी युवतियों के तहस-नहस हुए जीवन को दर्शाती इस कृति को देवदार की छाया शीर्षक दिया जा सकता है? और फिर हिम से आच्छादित पर्वतों की ढलानों पर उगे देवदार के घने जंगलों की छाया और पवन का आभास महसूस कर ऐसा लगा यह सही है। ये देवदारों की हरियाली से सुसज्जित पहाड़ एक शरण्यस्थल भी तो है। इनके साये में जीवन व्यतीत हो सकता है। कापटी गाँव की रिवाजें भी उस लुटी हुई परित्यक्त, शोषित और लौटी हुई गाँव की लड़की को कितने आदर से स्वीकार कर रहा है। यदि यह कोई और समाज होता जहाँ रूढ़ियाँ विद्यामान होती तो वहाँ उसका जीवन तानों और घृणा से जाने कैसा दुश्वार हो जाता। पर देवदारों के समाज में उसे जो छाया मिली वह उसके जीवन के लिए एक आसरा बनी। मालती तो मर गई मगर बीरमा बिस्ना के साथ जीवनयापन करने को आगे बढ़ गई।

गाँव ग्याणा, डाकखाना मांगू वाया दाड़लाघाट,
तहसील अरकी, जिला सोलन, हि.प्र. 171102
पुस्तक: छाया देवदार की (उपन्यास)
लेखिका: आशा शैली
प्रकाशक:सिद्धी प्रकाशन, इलाहाबाद
मूल्य: 150.00 पेपर बैक

अनुभवों का जादुई स्पर्श : प्रबोध कुमार गोविल

पुस्तक का नाम : नया जन्म (उपन्यास)
उपन्यासकार : हिमाद्रि वर्मा डोई
प्रकाशक : साहित्यागार, जयपुर
संस्करण : 2019
मूल्य : 175 रुपए, पृष्ठ : 135

'नया जन्म' हिमाद्रि वर्मा डोई का पहला उपन्यास है, किन्तु इससे पहले वो चार कविता संग्रह साहित्य को दे चुकी हैं।

इस उपन्यास को पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि लेखिका के पास कुछ ऐसे अनुभव हैं जिन्होंने उपन्यास को थोड़े थोड़े अंतराल के बाद पाठकों को चौंकाने वाला जादुई स्पर्श दिया है। कथानक में कुछ ऐसे बिंदु आते हैं जब कोई भी साधारण लेखक आसानी से लाउड हो सकता था, विमर्शों की सर्वमान्य लहर में खो सकता था, पर यहाँ लेखिका ने एक कॉम्प्रोमाइजिंग परिपक्वता चुपचाप इस तरह स्थापित कर दी है जैसे शाम के समय रेत में खेलते बच्चे अपने बनाए मिट्टी के घर की बनावट में अपने अंतर्मन को अभिव्यक्त कर जाते हैं। खेल कर अपने घर लौट जाने के बाद भी उन घरों को देख कर ऐसा लगता है कि वहाँ बच्चे का कुछ छूट गया है।

पहले उपन्यास में ऐसा सामर्थ्य कम रचनाकारों में देखा जाता है। स्त्री के बनने की कार्यशाला पाठक कौतुक से देखता है और उसे इस वर्कशॉप के इर्द-गिर्द बसते पुरुष सहज ही बोनसाई उत्पाद नज़र आने लगते हैं। शायद यहीं उपन्यास का मकसद पूरा हो जाता है। लेकिन ये समाज के किसी घटक को मात्र नीचा दिखाने की कहानी नहीं है, वरन उन उठावों को समतल करने की निश्छल कोशिश है जिन्होंने धरती को बेवजह असमान किया हुआ है। लेखिका ज़िन्दगी के भद्दे हिस्से पर पेंट करके उसे छिपा नहीं देती, बल्कि उस पर घिसाई कर उसे समतल करती दिखा देती है।

उपन्यास की भाषा पर लेखिका को आगे थोड़ी और मेहनत करनी होगी, क्योंकि आगामी रचनाओं में 'पहला उपन्यास' होने से मिली छूट नहीं मिल सकेगी। खासकर एक ही पात्र के लगातार चलते संवाद को अलग अलग पैरा में बांट देना अखरता है। ये और भी अखरता है जब एक ही पैरा में दो अलग लोगों के संवाद आ जाते हैं। इससे कहीं - कहीं संवाद नाटकीयता के शिकार हो जाते हैं।

पात्रों की मानसिकता, भाषा और उनकी सामाजिकता के बीच तालमेल और बेहतर बनाया जा सकता है। पुस्तक में कई लोगों की पूर्व सम्मति देने की जरूरत नहीं थी, लेखिका का अपना आत्मविश्वास पर्याप्त था। प्रकाशन स्तरीय है।

बी. 301, मंगलम जाग्रति रेसीडेंसी,
447, कृपलानी मार्ग, आदर्श नगर,
जयपुर-302004
मो. 9414028938

उड़ रहे पन्ने समय के -सीमा हरि शर्मा

उड़ रहे पन्ने समय के,
बाँध कर अनुबन्ध लिख दें
प्रीत मिट पाये नहीं, हम
काल पर प्रतिबंध लिख दें

लिख दिया प्रारब्ध ने जो
संग चुनकर हाथ में
हम रचें अनुपम ऋचाएँ
ज़िन्दगी की, साथ में
गीत सारे पूर्ण होंगे
प्रीत के कुछ बन्ध लिख दें

प्रेम विस्मृत हो न जाए
भीड़ में संसार की
बाँट दें सारे जगत में
हम कहानी प्यार की
पातियाँ महकें युगोयुग
नेह की हम गन्ध लिख दें

साथ धरती की अलौकिक
नभ थमा है आस पर
तप रहा दिनकर अहर्निश
सृष्टि के विश्वास पर
अंजरी अनुराग से भर
साधना निर्बन्ध लिख दें

पता- 7डी, 402, रीगल टाऊन, अवधपुरी,
पिपलानी, भेल, भोपाल, 462022 म.प्र.
मो. 08989110238
Email-seemaharisharma@gmail-com

editshagun@gmail.com